वर्ष 15, अंक 4 जनवरी-मार्च 2017 मूल्य 20/- रूपये

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

कैशलेस भुगतान की ओर बढ़ता मध्यप्रदेश

डिजिटल बनें - लाभ उठायें

- केंद्र सरकार के पेट्रोलियम पीएसयू पर डिजिटल भुगतान करने पर 0.75% की छूट।
- उपनगरीय रेल नेटवर्क पर 1 जनवरी 2017 से मासिक या सीजनल टिकट की खरीद के लिए डिजिटल भुगतान करने पर 0.5% की छूट।
- ऑनलाइन रेलवे टिकट खरीदने पर 10 लाख रुपये तक का मुफ्त दुर्घटना बीमा।
- सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियों के उपभोक्ता पोर्टल से बेची गई बीमा प्रीमियम पर 10% तक की क्रेडिट या छूट।
- नाबार्ड के माध्यम से सरकार ऐसे एक लाख गांवों, जिनकी आबादी 10,000 से कम है, में कम से कम 2 पीओएस डिवाइस लगाने के लिये बैंकों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराएगी।
- 2000 रुपये तक के लेन-देन पर किसी प्रकार का डिजिटल ट्रांजेक्शन चार्ज/एमडीआर नहीं लगेगा।
- नाबार्ड की मदद से सरकार 4.32 करोड़ किसान क्रेडिट कार्ड धारकों को 'रुपे किसान कार्ड' जारी करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रीय बैंकों और सहकारी बैंकों की सहायता करेगी।

डिजिटल मध्यप्रदेश

- प्रदेश में पी.ओ.एस. मशीनें वेट और प्रवेश कर से मुक्त।
- प्रधानमंत्री जनधन योजना में 2 करोड़ 29 लाख बैंक खाते खोले गये।
- एक करोड़ 67 लाख 'रुपे' कार्ड जारी।
- प्रदेश के 11 हजार 864 ग्रामीण सब सर्विस एरिया में 'बैंक सखी' और 'बैंक मित्र' के माध्यम से भुगतान प्राप्ति की व्यवस्था।
- समस्त स्कॉलरशिप का ऑनलाइन वितरण।
- एम.पी. मोबाइल एप द्वारा 150 से अधिक नागरिक सेवायें।
- कोषालयों द्वारा समस्त भुगतान ऑनलाइन।
- ई-सम्पदा-एक क्लिक पर संपत्ति का पंजीयन।
- ई-मेल नीति जारी करने वाला मध्यप्रदेश प्रथम राज्य/ ऑफिशियल ई-मेल पर किये गये संवाद वैधानिक।
- डिजिटल जाति प्रमाण पत्र जारी करने की व्यवस्था।
- शासकीय योजनाओं के सभी हितग्राहियों को सीधे बैंक खाते में राशि भुगतान की व्यवस्था।
- नागरिक सुविधाएं ऑनलाइन देने की व्यवस्था।
- नागरिक सुविधा केन्द्र के रूप में 23 हजार एम.पी. ऑनलाइन कियोस्क, 14 हजार कॉमन सर्विस सेन्टर और 413 लोक सेवा केन्द्र संचालित।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

D80539/17

कैशलेस भुगतान के 5 आसान तरीके

कार्ड्स, पीओएस

आधार एनेबल्ड पेमेन्ट सिस्टम

यूपीआई

प्रीपेड वॉलेट

यू.एस.एस.डी

Follow Chief Minister Madhya Pradesh /CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /ChouhanShivrajSingh

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा से सम्बद्ध

वर्ष : 15, अंक : 4 जनवरी-मार्च 2017 मूल्य 20/-

संपादक की कलम से

भागवत प्रेम हमेशा उपस्थित रहता

भागवत प्रेम तो अपनी पूर्ण तीव्रता के साथ एक विराट शक्ति के रुप में सदैव उपस्थित रहता है, किन्तु अधिकतर मनुष्य कुछ भी अनुभव नहीं करते! वे जो अनुभव करते हैं वह ठीक उसी अनुपात में होता है जो वे हैं, और उनमें कितनी ग्रहणशीलता है। उदाहरण के लिए, कल्पना करो कि तुम एक ऐसे वायुमण्डल में स्नान कर रहे हो जो भागवत प्रेम से पूर्णतया स्पन्दित है और तुम उस सबसे बिलकुल भी अनभिज्ञ नहीं हो। कभी बहुत ही कम, कुछ सेकेंड के लिए अचानक ही तुम्हें किसी वस्तु की अनुभूति होती है, तब तुम कहते हो कि ''भागवत प्रेम मेरी ओर आया था!'' बात हंसी की है, जबकि वास्तव में हुआ यह था कि किसी न किसी कारण तुम जरा से खुले थे इसलिए तुम्हें उसकी अनुभूति हुई। वह तो भागवत चेतना की तरह, सदा ही उपस्थित रहता है। वह चेतना भी हर समय अपनी पूर्ण तीव्रता के साथ उपस्थित रहती है, परन्तु व्यक्ति उसके संबंध में कुछ भी नहीं जानता अथवा इसी प्रकार बीच–बीच में अनुभव करता है। अचानक ही जब व्यक्ति कुछ अच्छी अवस्था में होता है तो उसे किसी वस्तु का अनुभव होता है और वह कहता है कि– ''भागवत चेतना'', ''भागवत प्रेम'' मेरी ओर मुड़े हैं, मेरी ओर आये हैं। परन्तु बात ऐसी बिलकुल नहीं है, व्यक्ति कहीं जरा सा खुला होता है, बहुत जरा सा, कभी–कभी सुई की नोक जितना और स्वभावतया, शक्ति उसमें बड़े वेगपूर्वक प्रवेश करती है। कारण, यह है कि सक्रिय वायुमण्डल जैसा है, जब कभी ग्रहण करने की सम्भावना हो तो उसे ग्रहण कर लिया जाता है। यह बात तो सभी भागवत वस्तुओं के साथ है। वे उपस्थित हैं, केवल व्यक्ति उन्हें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वह स्वयं बन्द होता है, उसके अंदर कोई रुकावट होती है, वह अधिकतर अन्य वस्तुओं में व्यस्त रहता है। अधिकतर तो व्यक्ति अपने से ही भरा रहता है, चूंकि व्यक्ति अपने आपसे भरा रहता है, इसलिए किसी अन्य वस्तु के लिए स्थान नहीं रहता। व्यक्ति बड़े सक्रिय रुप में अन्य वस्तुओं में व्यस्त रहता है, वह वस्तुओं से इतना भरा–घिरा रहता है कि उसमें भगवान के लिए कोई स्थान नहीं रहता।

श्रीमॉ के अनुसार वे सभी लोग जो दिव्य पूर्णता के लिए अभीप्सा करते हैं यह जानते हैं कि जो आघात भगवान अपने असीम प्रेम और कृपा के कारण हमें पहुंचाते हैं वे हमारी उन्नति के सबसे अधिक निश्चित और द्रुत मार्ग हैं। उन्हें लगता है कि आघात जितना अधिक कठोर होगा भागवत प्रेम उतना ही अधिक होगा।

शेष पेज 08 पर

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

रघुकलश को बनाएं समाज का आइना

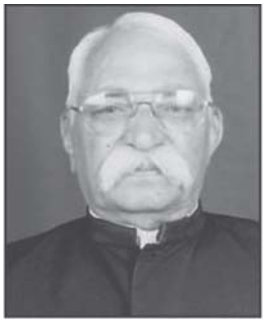

हम सब सामाजिक बंधुओं के लिए यह अत्यंत हर्ष और प्रसन्नता का विषय है कि रघुवंशी समाज में जागृति जाने के उद्देश्य से श्री अरुण पटेल द्वारा संपादित एवं प्रकाशित ''रघुकलश'' पत्रिका के इस अंक के साथ यह पत्रिका अपना 15 साल का सफरनामा पूरा करने जा रही है। आगामी अंक से पत्रिका 16वें वर्ष में प्रवेश करेगी। समाज में सामाजिक, आध्यात्मिक और धार्मिक चेतना जागृत करने के उद्देश्य से रघुकलश ने जो अपनी यात्रा प्रारंभ की थी वह सभी सामाजिक बंधुओं के सहयोग से निरन्तर जारी है और इसके द्वारा समाज में जागृति लाने का जो प्रयास किया जा रहा है वह भी अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है। समाज की उभरती हुई प्रतिभाओं और प्रतिभा सम्पन्न लोगों को एक मंच प्रदान करने का काम रघुकलश ने निरन्तर किया है और उसका यह अभियान आगे भी सतत जारी रहे इसके लिए जरुरी है कि सभी सामाजिक बंधुओं को आगे आकर इस काम को पूरा करने में अपना यथोचित सहयोग और योगदान प्रदान करना चाहिए।

यह एकमात्र समाज की ऐसी पत्रिका है जो न केवल अपने उद्देश्य में सफल रही बल्कि निरन्तर व नियमित प्रकाशित होती रही है। रघुवंशी समाज के जो लोग इसके आजीवन सदस्य हैं उनके प्रति मैं आभार प्रदर्शित करता हूं और यह अपेक्षा करता हूं कि वे अपने संस्थानों व पारिवारिक समारोहों तथा जन्मदिन आदि के विज्ञापन देकर पत्रिका के आर्थिक पक्ष को मजबूत करने में मददगार बनेंगे ताकि यह पत्रिका समाज को अपनी अभिव्यक्तियों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम बन सके। कोई भी पत्रिका केवल सदस्यता के सहारे आगे नहीं चल सकती इसलिए इसमें आर्थिक संसाधन जुटाने के लिए सामाजिक बंधुओं को उदात्त भावना से सहयोग करना चाहिए। सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के साथ ही साथ आध्यात्मिक धरातल पर समाज को आगे ले जाने के लिए समय–समय पर इस पत्रिका में विशेष लेख प्रकाशित किए गए हैं, सामाजिक प्रतिभाओं का भी समय–समय पर इसमें प्रकाशन कर समग्र समाज को उनके कृतित्व से अवगत कराने का प्रयास किया जाता रहा है।

रामचरित मानस में जीवन के हर पहलू पर बड़े सुंदर दृष्टान्त देखने को मिलते हैं। इस ग्रंथ के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमको अपने जीवन में क्या और कैसे करना चाहिए, किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए तथा समाज में जो घटित हो रहा है उसके पीछे क्या है, इन सबका अच्छा दर्शन हमें इस ग्रंथ में मिलता है जिसे समझने की जरुरत है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जो रघुवंश कुल के महान आदर्श पुरुष हैं, जिनके बताए हुए रास्ते पर चलकर हमको जीवन में उपलब्धियां प्राप्त करना है, जीवन के उद्देश्य को ज्ञात करना है तथा हमारा जीवन कैसे सार्थक हो सकता है इसे सिद्ध करना है। यह सब तभी हो सकता है जब हम उनके बताए हुए मार्ग पर चलें और इस तरह के कार्य करें जिससे समाज का तथा जन–जन का कल्याण हो। केवल अपने हित और अपने स्वार्थ तक सीमित रहकर यदि हम काम करते हैं तो हम कभी भी आदर्श नहीं बन सकते। रामचरित मानस में सुग्रीव के प्रसंग में बड़ी बात बताई गई है। जब भगवान राम ने बाली का वध किया तथा राजपाट सुग्रीव को दिया उस समय उनसे अपेक्षा की थी कि वह माता सीता का पता जल्दी लगायेंगे तथा सीता माता की खोज के लिए प्रयास करेंगे, लेकिन सुख संपदा पाकर, भोग विलास में लिप्त होकर, राजपाट में अपने आपको समर्पित करके सुग्रीव उन उद्देश्यों को ही भूल गये जिसकी भगवान राम के सामने उन्होंने प्रतिज्ञा की थी। तब भगवान राम ने एक दिन लक्ष्मण से कहा कि–

सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी
पावा राज कोस पुर, नारी।

सभी सामाजिक बंधुओं को रामनवमी व हनुमान जयंती की अग्रिम शुभकामनाएं एवं बधाई।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

छल के विरुद्ध भुजबल खड़ा करती सीता

मनोज कुमार श्रीवास्तव

छल के विरुद्ध भुजबल को खड़ा करती हैं सीता। राम के पास भुजबल है, रावण के पास छल कपट। दोनों में तात्विक फर्क है और सीता अपनी मुक्ति में इसी अन्तर की स्थापना देखना चाहती हैं। सीता में अपने भर्ता के प्रति विश्वास ही नहीं है, उनकी अपनी मूल्य प्रणाली है। वे धोखे और प्रपंच से पहले भी वरी नहीं गई थीं और न अब वे वैसे उपलब्ध होंगी। राम तो उनका सही प्रतिबल हैं। जिस सीता ने बचपन में शिव धनुष को उठाकर एक जगह से दूसरी जगह खेल ही खेल में रख दिया था, उस सीता का योग्य प्रतिबल वही राम सिद्ध हुए जिन्होंने शिव धनु भंग किया। दुर्गा सप्तशती की दुर्गा का यही तो कहना था– 'यों में प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।' राम सीता का वरण करते हैं, रावण हरण बल्कि अपहरण। सीता ध्यान दें कि, प्राणघातक धमकी की डेडलाइन झेल रही हैं। लेकिन वे इतनी हड़बड़ी में भी नहीं हैं कि राम से मूल्यों को त्याग कर स्वयं को हासिल करने के लिए कहें। उन्हें मृत्यु का भय नहीं है। वे अपने मूल्यों, सिद्धान्तों और आदर्शों से हटकर आगे जिंदा रहने की कल्पना तक नहीं करतीं। फुल्टन जे. शीन कहते हैंः ''There are ultimately only two possible adjustments to life, one is to suit our lives to principles, the other is to suit principles to our lives. If we do not live as we think, we soon begin to think as we live. The method of adjusting moral principles to the way men live is just a perversion of the order of things. '' यह सीता का कोई हठी अंधत्व नहीं है। यह सीता का कोई आत्मनिषेध भी नही है, लेकिन इस जगह सीता कोई एडजस्टमेंट करके कोई सीता नहीं रह जाएंगी। सीता का यह आत्म–बोध है। अपने 'एसेंस' की पहचान। इस सत्व के लिए, अपने भीतर के इस 'changeless core' के लिए जीती हैं सीता। इसके लिए वे मर भी सकती हैं। सिद्धान्त के लिए ही नहीं, स्वभाव के लिए।

मनोज कुमार श्रीवास्तव

इसलिए यहां सीता ने अपना पैर रोप दिया है। राम को उन्हें पाना है तो खलदल को परास्त करके ही पाना है। शिव के धनुर्भंग के जरिए ही नहीं, अशिव का नाश करके। शिव की पूजा रावण को मुक्त नहीं कर सकती है, यदि उसका जीवन शिव नही है। रहें खल की तरह और पूजें शिव को तो सीता आहूत उसे ही करेंगी जिसने शिव का धनुर्भंग किया है। शिव के धनुष को तोड़ने वाला उसे सबक सिखाएगा जो रहन–सहन, आचरण–व्यवहार में शिव की परिधि को लगातार तोड़ता है। रावण को यदि अपनी ताकत का घमंड है तो उसी भुजबल के रास्ते से ही उसे सबक सिखाया जायेगा। उस भाषा से जिसे मदान्ध सत्ता एकमात्र भाषा समझने लगी है। सीता वाल्मीकि रामायण में कहती हैं कि राम के सिवा वे किसी की भुजा का तकिया नहीं लगा सकतीं। तुलसी के यहां वे 'सो भुजदंड कि तव असि घोरा' की बात करती हैं। उस आजानुबाहु राम से वे भुजबल की अपेक्षा करती हैं जिसने 'निसिचर हीन करहूं महि भुज उठाइ प्रण कीन्ह' की संकल्पबद्धता दर्शाई है। वह भुजबल रावण की बीस भुजाओं के बल से कहीं ज्यादा है जो खल–बल को निरस्त करने के लिए संकल्पित है। एक चतुर्भुज द्विभुज होकर पृथ्वी पर जानबूझकर उतरता है,

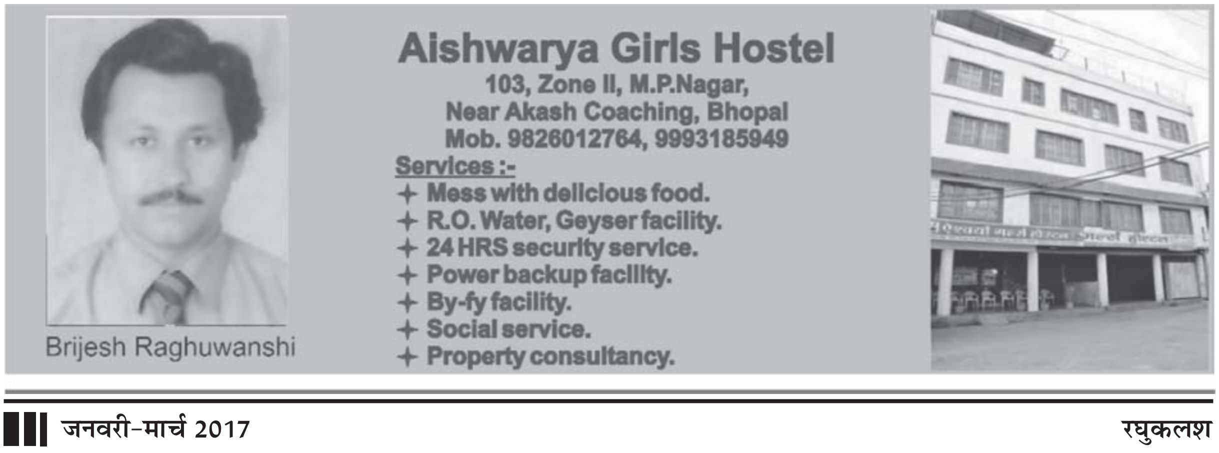

RNI No. : MPHIN/ 2002 / 7269

अरुण पटेल
संपादक
09425010804, 07552552432

❖

उमाशंकर रघुवंशी
प्रबंध संपादक
09425005454

❖

सहायक संपादक
पलाश पटेल
08982200001
अभिषेक रघुवंशी
रमेन्द्रसिंह पटेल

❖

इंदौर ब्यूरो प्रमुख
राजेश रघुवंशी, 09826578006
रणवीर सिंह रघुवंशी, 08959811503
विदर्भ ब्यूरो प्रमुख
दिलीप सिंह रघुवंशी, 08485031185
अमरावती महाराष्ट्र

❖

खानदेश ब्यूरो प्रमुख
प्रो. डॉ. महेन्द्र जयपाल सिंह रघुवंशी,
नंदुरबार महाराष्ट्र
09423942750

❖

ग्वलियर चंबल संभाग ब्यूरो प्रमुख
ओमवीर सिंह रघुवंशी
09425701313

❖

विशेष संवाददाता
अरविन्द रघुवंशी, भोपाल, 09425023908
संदीप पटेल, सिलवानी 08120916468
लखनसिंह रघुवंशी, गुना, 09893861685
रामनारायण रघुवंशी, भोपाल, 09425372213
सुखेंद्रसिंह रघुवंशी, शिवपुरी, 08357099593
हरवीरसिंह रघुवंशी, अशोकनगर, 08959211089
राममोहन रघुवंशी, सिवनी मालवा, 09098667071
संतोष रघुवंशी, करेली, 07566810605
आकाश रघुवंशी, सोहागपुर, 09754236070
चंदू रघुवंशी, धार, 09826533460
कैलाश रघुवंशी, धार, 09826038723
कोमल सिंह रघुवंशी, पिपरिया, 09752124056
किशोर रघुवंशी, खरगोन, 09826880101
सुरेंद्रसिंह रघुवंशी, उदयपुरा, 09993044340
आलोक विजयसिंह रघुवंशी,
धूलिया (महा.) 09421991991
पी.एम. रघुवंशी, अहमदनगर,
(महा.), 09922079523
संजय रंजीतसिंह रघुवंशी, आकोट,
अकोला, (महा.) 09850509244

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट भोपाल से मुद्रित एवं ई–100/41, शिवाजी नगर, भोपाल से प्रकाशित संपादक **अरुण पटेल**

E-mail : arun.patel102@gmail.com
raghukalash@gmail.com

ताकि बीस भुजाओं के अत्याचार बंद किए जा सकें। अज्ञेय ने हारिल पक्षी पर लिखी अपनी कविता में भुजबल की सीमाएं बताई थीं– ''तुम प्रिय की अनुकंपा मांगो, मैं मांगू अपना समकक्षी। साथ–साथ उड़ सकने वाला एकमात्र वह कंचन–पक्षी। यों कहता उड़ जाता हारिल लेकर निज भुजबल का सम्बल। किन्तु अन्त संध्या आती है– आखिर भुजबल है कितना बल।'' वे सीमाएं उसी भुजबल की हैं जो भौतिक है और जिसके साथ शुभ संकल्प नही है। सीता जिस भुजबल की बात करती हैं वह संख्या नहीं है, वह क्वान्टिटेटिव नहीं है। इसलिए चतुर्भुज भी द्विभुज होकर अवतार लेकर यही सिद्ध करते हैं। सीता के भुज–बंधन का पात्र वही है जो पापोन्मूलन में अपने भुजबल का प्रयोग करता है। 'रश्मिरथी' में 'दिनकर' –''पत्थर सी हों मांसपेशियां, लोहे से भुज–दंड अभय/नस–नस में हो लहर आग की, तभी जवानी पाती जय'' का सिद्धान्त प्रतिपादित करते हैं। राम वज्र–भुज हैं क्योंकि वे वज्र–संकल्प हैं। वे अपनी भुजाओं को असहायता में हवा में नहीं उछालते। वे वेदव्यास की तरह निराशा में यह नहीं कहते कि ''मैं बार–बार भुजा उठाकर कह रहा हूं कि धर्म का मार्ग श्रेष्ठ है किन्तु कोई सुनता नहीं है। वे तो अपनी प्रतिज्ञा को सिद्ध करने निकले हैं। अनन्त–चतुर्दशी पर लोग भुजाओं में अनन्त बांधते हैं। लेकिन वह कोई डोरा नहीं है। अनन्त भुज विष्णु का अवतार–संकल्प है। साधुओं के परित्राण और दुष्टों के विनाश का व्रत। भुजा में अनन्त नहीं, अनंतभुज की स्मृति।

अवतार भुजबल का शुभ और सत्व की रक्षा के लिए प्रयोग करता है, अपने अहंकार की उद्घोषणा और अभिस्थापन के लिए नहीं। जब कृष्ण गोवर्धन पर्वत उठा लेते हैं तो मां यशोदा कहती हैं कि कृष्ण, तेरी भुजाओं में बहुत बल है। कृष्ण कहते हैं कि वो तो गोपों ने, सबने, नंद बाबा ने लाठियों के सहारे उसे रोक रखा नही ंतो गोवर्धन मुझसे कैसे रोके रुकता। सूरदास के शब्द–''तेरे भुजनि बहुत बल होई कन्हैया/बार–बार भुज देखि तनक–से, कहति जसोदा मैया/स्याम कहत नहिं भुजा पिरानी, ग्वालिन कियो सहैया/लकुटिनि टेकि सबनि मिलि राख्यौ, अरु बाबा नंदरैया/मोसौं क्यों रहती गोवरधन, अतिहि बड़ौ वह भारी/सूर स्याम यह कहि परबोध्यौ चकित देखि महतारी।'' राम भी वनवासियों का, आम आदमी का साथ लेते हैं। राम की भुजा एक शस्त्र है। राम की भुजाएं हैं उनके साथी सहयोगी। ये भुजाएं माधुर्य और मैत्री की हैं। 'जिहि भुजबल प्रहलाद उबार्‌यौ हिरनकसिप उर फारे/ सो भुज पकरि कहति ब्रज नारी, ठाढ़े होहु लला रे।'–सूरदास, रावण की आक्टोपसी वृत्ति वाली भुजाएं तो सब कुछ ग्रसने को आतुर हैं। राम की भुजाएं उन्हीं को चुनौती देने के लिए फड़कती हैं। 'दससीस विनासन बीस भुजा/ कृत दूरि महामहि भूरि रुजा।'

सीता अपनी मुक्ति को विश्वोन्मुक्ति से जोड़ती हैं। सीता छूट जाएं और राक्षसों को खुली छूट हो, तो इसमें सीता सन्तुष्ट नहीं होंगी। वे अपनी उस भयंकर दुरावस्था को जिसमें एक–एक पल कल्प के समान बीतता है, कुछ और जी लेने की कल्पना कर सकती हैं, लेकिन यह कल्पना नहीं कर सकतीं कि खल–दल अपराभूत रह जाए। सीता की श्रेष्ठता इसी में है कि वे अपने दुख के जागतिक अभिप्रायों को समझती

हैं और राम को भी तदनुरुप ही उन्मुख करती हैं। इसलिए वे एक कल्प रच पाती हैं। उनके पति उस कल्प के नायक हो पाते हैं। वे अपनी त्रासदी को एक अंतरिक्ष देती हैं। उस वक्त जबकि दुख के मारे उनके नेत्र धरती पर गड़ गए हैं, सीता की कल्पना कीलित नहीं हो गई है। देखें तो सीता का दृढ़ निश्चय वैसा ही है, जैसे उस ब्राह्मण का था जिसने कुश की जड़ों में ही मट्ठा डाला। सीता भी पाप की इस बेल का समूल नाश चाहती हैं। रावण अकेले का नहीं, खल–दल का, और ऐसा नहीं है कि सीता यह कह रही हैं कि 'टेक योर स्वीट टाइम'। 'बेगि' शब्द का प्रयोग बताता है कि करना तो शीघ्रता ही है। बात इस अर्जेन्सी को समझने की है। डगलस कूप लैंड (प्लेयर वन– व्हाट इज टु बिकम आफ अस) लिखता है– Your new life will be tinged with urgency, as though you're digging out the victims of an avalanche, If you^re not spendling every waking moment of your life living the truth, if you^re not plotting every moment to boil the carcass of the old order, then you're wasting your day. खल–दल को शीघ्र ही खत्म करना पड़ेगा। वेग से, अन्यथा सीता का ही नहीं, विश्व का संकट भी और गहरा होता चला जायेगा। अब आगा पीछा देखने का समय नहीं है। एकहार्ट टोल ने शायद इन्हीं परिस्थितियों के लिए लिखी थीः 'द पावर आफ नाउ'। जो इम्पोर्टेन्ट है, वह अर्जेन्ट भी है। खल–दल को परास्त करना निरीहों के प्रति करुणा करना है। इसलिए यहां 'करुणानिधि' शब्द का प्रयोग करना भी एकदम वाजिब बन पड़ा है। करुणानिधि होने का अर्थ दुष्टों को लम्बी रस्सी देना नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि सीता का आह्वान करुणा के लिए तो है। लेकिन वह कोई निष्क्रिय, बांझ और मात्र शुभेच्छा प्रकट करने वाली करुणा नहीं है। ईश्वर दुखियों के आर्तनाद को सुनता है और उस पर सक्रिय होता है। कहा जाता है कि भगवान के घर देर है, अंधेर नहीं है। लेकिन यहां सीता 'बेगि' आने की बात कह रही हैं। हनुमान एक पल भी विश्राम नहीं करना चाहते जब तक कि रामकाज न हो जाए। इसलिए ध्यान दें कि तुलसी 'देर' की अवधारणा पर आपत्ति कर रहे हैं। प्रायः यह हुआ है कि लोगों ने अर्जेन्ट और इम्पोर्टेन्ट के बीच एक द्वैत खड़ा किया है। जो महत्वपूर्ण है, समय लेना उसका जन्मसिद्ध अधिकार–सा बना दिया गया है। सीता, हनुमान और तुलसी इस अवधारणा को पोषित नहीं करते। डेजन सटोजानोविक– Dejan Stojanovic – का कहना था – Courage is more important then to be deceived by shallow victory waiting for delayed defeat. राम का यही साहस न केवल महत्वपूर्ण है बल्कि उसकी अपनी अर्जेन्सी भी है। इसका अर्थ है विलम्ब का निषेध। इसका अर्थ है बहानेबाजी की वर्जना। हर उस चीज से इन्कार जो समय गंवाती है। राम को एक राजसत्ता से टकराना है, इसलिए उनको 'रजस' से ही काम लेना पड़ेगा। भले ही यह राजसत्ता तमस की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हों, लेकिन इससे भिड़ने के लिए तमस, प्रमाद, आलस्य से काम नहीं चलेगा। सीता के लिए, राम के लिए एक–एक पल महत्वपूर्ण है। यहां तो एक दल ही कल्प जैसा लग रहा है तो 'बेगि' का औचित्य स्वतः स्पष्ट है। कल्प भी जिस अनादि और अनन्त के लिए मात्र एक पल है, वह उन पीड़ितों के प्रति भी अपने दायित्व को निभाता है जिन्हें एक पल भी कल्प के समान लग रहा है। मीरा कहती थीं : 'दरस म्हारे बेगि दीज्यो जी/ओ जी! अन्तरजामी ओ राम! खबर म्हारी बेगि लीज्यो ली। जिस राम की बरात सीता के लिए 'बेगि' चली थी– चलहु बेगि रघुवीर बराता– उस राम की सेना को भी सीता के लिए 'बेगि' ही चलना है। करुणा का यह स्त्रोत वेगमय है। यहां मीरा की तरह 'बेगि' मिलो प्रभु अन्तरजामी, तुम बिन रह्यौ न जाय'– की बात ही नहीं है बल्कि एक क्रूर और आततायी सत्ता सीता जैसी निर्दोष स्त्रियों के ऊपर इतने जुल्म ढा रही है कि करुणा के इस स्त्रोत को वेगमयता में ही अपने आप को सिद्ध कर पाना है। यानी बात सिर्फ 'जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा/करहु सो बेगि दास मैं तोरा' की वैयक्तिकता की नहीं है, बल्कि इसकी है कि खलदल को पराजित करना एक त्वरित दायित्व है। इजराएलमोर ऐयिवोर का कहना था कि– Delay is not a helpmate. The Cemetary is full of people who thought they could do it tomorrow. Do it now. सीता का आह्वान यही है। समय भी उसी तेजी से छीज रहा है, जैसे सीता छीज रही हैं। सीता के दुख पर दुख की परत जमती जा रही है और इधर सीता के मन की ईंटे क्रमशः खिसकती भी जा रही हैं। क्षरण भी है और संग्रंथन भी। दुख घना हो रहा है और मन दरक रहा है।

सुनि सीता दुख प्रभु अयना।
भरि आए जल राजिव नयना।।
बचन कायँ मन मम गति जाही।
सपनेहुँ बूझिअ बिपति की ताही।।

कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई।
तब तव सुमिरन भजन न होई।।
केतिक बात प्रभु जातुधान की।
रिपुहि जीति आनिबी जानकी।।
सुन कपि तोहिं समान उपकारी।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।
सुन सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।
देखउँ करि बिचारि मन माहीं।।
पुनि–पुनि कपिहि चितव सुरत्राता।
लोचन नीर पुलक अति गाता।।
सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरिष हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवन्त।।

सीताजी का दुख सुनकर सुख के धाम प्रभु के कमल नेत्रों में जल भर आया और वे बोले– मन, वचन और शरीर से जिसे मेरी ही गति, मेरा ही आश्रय, है उसे क्या स्वप्न में भी विपत्ति हो सकती है? हनुमानजी ने कहा– हे प्रभो! विपति तो वही है जब आपका भजन–स्मरण न हो। हे प्रभो! राक्षसों की बात ही कितनी है? आप शत्रु को जीतकर जानकी जी को ले आवेंगे। भगवान कहने लगे– हे हनुमान! सुन, तेरे समान मेरा उपकारी देवता, मनुष्य अथवा मुनि कोई भी शरीरधारी नहीं है। मैं तेरा प्रत्युपकार–बदले में उपकार– तो क्या करुं, मेरा मन भी तेरे सामने नहीं हो सकता। हे पुत्र! सुन, मैंने मन में खूब विचार करके देख लिया कि मैं तुझसे उऋण नहीं हो सकता। देवताओं के रक्षक प्रभु बार–बार हनुमानजी को देख रहे हैं। नेत्रों में प्रेमाश्रुओं का जल भरा है और शरीर अत्यन्त पुलकित है। प्रभु के वचन सुनकर और उनके प्रसन्न मुख तथा पुलकित अंगों को देखकर हनुमानजी हर्षित हो गये और प्रेम में विकल होकर 'हे भगवन्! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो' कहते हुए श्रीरामजी के चरणों में गिर पड़े।

भीग जाती हैं आंखें राम की, सीता के दुख को सुनकर। कातर हो आता है उनका मन। जैसे पीड़ा की एक लहर दौड़ती हुई। कोई आवाज नहीं। बहुत कुछ अंदर ही अंदर जब्त करने की पूरी कोशिश। फिर भी उमड़ ही आते हुए आंसू। समुद्र तट की रेत पर गिरे हुए थे खारे मोती। सीता के संदेश की ठंडी जमा देने वाली हवा में ये अश्रु पता नहीं राम के कपोलों तक ढुलके भी कि आंखों में ही स्तंभित हो गए। राम के नेत्रों के भीतर ये गीले फूल। जैसे उन्हें तुषार मार गया हो। राम ने अपने आप को कम नहीं समझाया है। इस बीच उन्होंने कितनी बार खुद को कोसा है और कितनी बार खुद को दिलासे दिए हैं। इस कोशिश में अपने हृदय में बहुत कुछ रोककर बैठे हैं वे। बाहर बालि से लड़े हैं, लेकिन अंदर ही अंदर खुद से लड़ रहे हैं। बहुत कोशिशों से इकट्ठा किया उनका धीरज सीता की वेदना के सामने घुटने टेक देता है। धीरे से चले आए हैं, बिना दस्तक दिए ये आंसू राम के पवित्र नयनों में। राम ने स्वयं को बहुत सी गतिविधियों में व्यस्त किया है, किन्तु लम्बे समय से उनके दिल के देश में एक आपातकाल सा है जिसमें भावनाओं को प्रतिबंधित किया गया है। सीता के साथ जो बीती है, उसे सुनकर इन आंसुओं ने वे निषेधाज्ञाएं भंग–सी कर दी हैं। पलकें हैं कि ओस से सिक्त हो चले पत्ते हैं। उनके नयनों की तुलना कभी सौंदर्य की दृष्टि से कमल से की जाती थी, लेकिन अब वे इस रुप में नीरज हैं कि उनमें नीर भर आया है। राम के मानसर के ये कमल, जिनकी पांखुरियों में कभी सीता के रुप की चांदनी भरी रहती थी, जो कभी सीता के केशों को गूंथने वाले पुष्प बन जाते थे– आज उन्हीं की वेदना में डूब गए हैं। जलकलश। जलज। एक लहूलुहान हो चले अन्तःकरण से रक्त टपकता है कि पानी। एक भीतर की भट्टी में ईंटें पकी हैं या पानी। बाद में जब राम शक्तिपूजा करेंगे तो यही राजीव–नयन अर्घ्य के काम आएंगे, लेकिन अभी सीता की व्यथा के सामने जैसे ये नेत्र आंसुओं का अर्घ्य अर्पित कर रहे हैं।

क्या हो गया जीवन का? जिसे जीवन भर सुखी रखने की प्रतिज्ञा की थी, जिसे सोचा था कि संसार की सारी खुशियां दूंगा, उसे आंसू ही आंसू दिए। आज सीता की आंखों में भी आंसू हैं और राम की आंखों में भी। रो वे भी रही हैं, रो राम भी रहे हैं। 'नाथ जुगल लोचन भरि बारी / बचन कहे कछु जनक कुमारी' उधर हैं और 'भरि आए जल राजिव नयना' इधर। क्या सुख दे पाया सीता को। वह तो हर कर्तव्य निभाती रहीं। हरेक को खुश रखने की कोशिश करती रहीं। मेरी हंसी में वह हंसी, मेरी स्मित से वह मुस्करायी। जब वक्त आया मेरे निर्वासन का तो उसने निर्वासित होने का फैसला पहले लिया और क्या सोचकर कि राम सुखधाम हैं? और क्या सोचकर कि पति के संग में ही सुख का निवास है? कितना विश्वास था उसे मुझ पर। मैंने जब कहा कि 'जौं हठ करहु प्रेम बस बामा / तो तुम्ह दुख पाउब परिनामा' तो मुझे क्या मालूम था कि मेरे ही शब्द इतने क्रूर तरीके से सच्चे हो जाएंगे। मैं तो उसे धूप, जाड़े, वर्षा, हवा, कुश, कंटक, कंकर का डर दिखा रहा था– 'काननु कठिन भयंकरु भारी / घोर

घामु हिम बारि बयारी/कुस कंटक मग कॉकर नाना/पयादेहि बिनु पदत्राना' और दुख आया तो यह। मुझे क्या मालूम था कि इतने त्रासद तरीके से लौटकर आती है अपनी ही कही वाणी– 'नर अहार रजनीचर चरहीं/कपट वेष बिधि कोटिक करहीं।' यहां सीता का अपहरण हुआ, वह आहार नहीं बनीं लेकिन राक्षसियां नित्य उन्हें आहार बनाने की धमकियां दे रही हैं। वह सीता इस सारे संत्रास को झेल रही है जो मुझे सुखधाम मानकर वन में मेरे साथ आई– 'प्राननाथ करुनायतन सुंदर सुखद सुजान/तुम्ह बिन रघुकुल कुमुद बिधु सुरपुर नरक समान,' जो कहती थी– 'नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे/सरद विमल विधु बदनु निहारें,' जो 'नाथ साथ' को 'सुख मूल' मानकर यह कहती थी– 'खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल/नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुख मूल।' जो मुझे 'दीनबंधु सुंदर सुखद सील सनेह निधान' मानती थी, जो समझती थी कि पसीने की बूंदों सहित मेरे श्याम शरीर को देखकर दुख के लिए अवकाश कहां रहेगा– 'श्रम कन सहित स्याम तनु देखें/ कहँ दुख समउ प्रानपति पेखे' आह! मैंने उसके उस अगाध विश्वास का कैसा घात कर दिया? कहलाया सुखधाम और दुख ही दुख दिए उसको। जिस सीता ने यह कहा था मुझे कि ''मैं तो जैसे अपने पिता के घर में रहती थी, उसी प्रकार उस वन में भी सूखपूर्वक निवास करुंगी'' उस सीता का सुख अब कहां है? जिसका मुझ पर इतना विश्वास था कि वह कहती थी– 'आप तो वन में रहकर दूसरे लोगों की भी रक्षा कर सकते हैं फिर मेरी रक्षा करना आपके लिए कौन बड़ी बात है,' मैं उसी की रक्षा न कर पाया। मैं जब उसे लगातार वन के दुख बता रहा था– ''जहां तक मेरी जानकारी है, वन में सदा सुख नहीं मिला करता, वहां तो सदा दुख ही मिला करता है, पर्वतों से झरने वाले निर्झरों के शब्द सुनकर उन पर्वतों की कन्दराओं में रहने वाले सिंह दहाड़ने लगते हैं। उनकी वह गर्जना बड़ी दुखदायिनी प्रतीत होती है, इसलिए वन दुखमय ही है। सूने वन में निर्भय होकर क्रीड़ा करने वाले मतवाले जंगली पशु मनुष्य को देखते ही उस पर चारों ओर से टूट पड़ते हैं, अतः वन दुख से भरा हुआ है। वन में जो नदियां होती हैं, उनके भीतर ग्राह निवास करते हैं, उनमें कीचड़ अधिक होने के कारण उन्हें पार करना अत्यन्त कठिन होता है। इसके सिवा वन में मतवाले हाथी सदा घूमते रहते हैं। इन सब कारणों से वन बहुत ही दुखदायक होता है। वन के मार्ग लताओं और कांटों से भरे होते हैं। वहां जंगली मुर्गे बोला करते है, उन मार्गों पर चलने में बड़ा कष्ट होता है तथा वहां आसपास जल नहीं मिलता, इससे वन में दुख ही दुख है। दिनभर के परिश्रम से थके मांदे मनुष्य को रात में जमीन के ऊपर अपने आप गिरे हुए सूखे पत्तों के बिछौने पर सोना पड़ता है, अतः वन दुख से भरा हुआ है। वहां मन को वश में रखकर वृक्षों से स्वतः गिरे हुए फलों के आहार पर ही दिन–रात संतोष करना पड़ता है, अतः वन दुख देने वाला ही है, ''तब भी वह मुझे ही सुखधाम मानकर, वन में चली आई। होगा वन दुखद, लेकिन उसका पति तो सुखअयन है। तब उसने कहा थाः 'रास्ते में जो कुश–कास, सरकंडे, सींक और कांटेदार वृक्ष मिलेंगे, उनका स्पर्श मुझे आपके साथ रहने से रुई और मृगचर्म के समान सुखद प्रतीत होगा। जब वन के भीतर रहूंगी, तब आपके साथ घासों पर भी सो लूंगी। रंग–बिरंगे कालीनों और मुलायम बिछौनों से युक्त पलंगों पर क्या उससे अधिक सुख हो सकता है।' उसे मैंने क्या दिया? मेरी असावधानी से, मेरी मूढ़ता से ही उस पर दुख के ये बादल छा गए हैं। कितना घुट रही होगी वह प्राणप्रिया मेरी।

– सुंदरकांड एक पुर्नपाठ से साभार

दिव्या रघुवंशी को बधाई

उदयपुरा। राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर लोकतंत्र में महिलाओं एवं युवाओं का योगदान विषय पर आयोजित निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में शासकीय उ.मा.वि. उदयपुरा की कु. दिव्या रघुवंशी पुत्री श्री रामसिंह रघुवंशी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में पूरे जिले में उसने प्रथम प्राप्त किया है। कक्षा 11वीं में अध्ययनरत इस मेधावी छात्रा को अ.भा.र.क्ष. महासभा के जिलाध्यक्ष ठा. गोविंदनारायण सिंह, ठा. जसवंत सिंहजी पूर्व मंत्री, पी.एस. रघुवंशी, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष अभारक्षम, हाकमसिंह रघुवंशी, एच.एस. रघुवंशी भोपाल, चतुरनारायण रघुवंशी एडवोकेट, रामेन्द्र पटेल सहित समाज के गणमान्य जनों ने बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

पेज 01 का शेष

इसके विपरीत सामान्य मनुष्य भगवान से सदा एक सरल, अनुकूल और सफल जीवन की मांग करते हैं। प्रत्येक वैयक्तिक तुष्टि में वे भगवान की दयालुता का संकेत देखते हैं और इसके विपरीत यदि उन्हें अपने जीवन में असफलता और दुर्भाग्य का सामना करना पड़े तो वे शिकायत करते हैं और भगवान से कहते हैं कि– तुम मुझसे प्रेम नहीं करते! इस अज्ञानपूर्ण और गंवारु वृत्ति के विरुद्ध श्रीअरविन्द अपने 'प्रिय' से कहते हैं कि– ''प्रहार कर, कठोर प्रहार कर ताकि मेरे प्रति तेरे प्रेम की तीव्रता मुझे अनुभव हो।'' जिन घटनाओं की हम प्रतीक्षा नहीं करते, जिनकी हम आशा या इच्छा नहीं करते, जो हमारी इच्छाओं के विरुद्ध होती हैं उन्हें ही हम अज्ञानवश दुर्भाग्य कहते हैं और फिर रोते–धोते हैं। किन्तु यदि हम जरा अधिक बुद्धिमान बनकर इन घटनाओं के गंभीर परिणामों का निरीक्षण करें तो पता चलेगा कि ये हमें अपने भगवान की ओर, अपने प्रिय की ओर शीघ्र ले जाती हैं, जबकि सुखकर और सुगम परिस्थितियां हमें रास्ते पर भटकने के लिए उत्साहित करती हैं, जो सुख के फूल मार्ग में पड़े रहते हैं उन्हें चुनने के लिए हमें वहीं रोक देती हैं। हम अत्यधिक दुर्बल हैं और इतने सच्चे नहीं हैं कि उन्हें पूरे संकल्प के साथ अस्वीकार कर दें ताकि वे हमें आगे बढ़ने से रोक न सकें।

यदि व्यक्ति बिना डगमगाए अपनी सफलता और उससे संबंधित सभी छोटे–मोटे सुखों में स्थिर रहना चाहता है तो उसे काफी मजबूत होने के साथ–साथ रास्ते पर काफी आगे बढ़ा हुआ भी होना चाहिए। किन्तु जो लोग इसे कर सकते हैं, जो लोग मजबूत होते हैं वे सफलता के पीछे नहीं दौड़ते, न उसकी चाह करते हैं बल्कि वे उदासीनता के साथ इसे स्वीकार करते हैं क्योंकि वे दुख और दुर्भाग्य के कोड़ों का मूल्य जानते हैं। किन्तु अन्ततः यह जानने के लिए कि हम लक्ष्य के निकट हैं सच्ची वृत्ति, लक्षण तथा प्रमाण होंगे– आत्मा की पूर्ण समता, जो हमें सफलता और असफलता को, सौभाग्य और दुर्भाग्य को, प्रसन्नता और अप्रसन्नता को समान रुप से शांतिपूर्ण आनन्द के साथ स्वीकार करने के योग्य बनाती है। कारण, तब सब चीजें हमारे लिए ऐसे चमत्कारपूर्ण उपहार बन जाती हैं जिन्हें प्रभु अपनी असीम हित–चिन्ता के भाव में हम पर बरसाता है। श्रीमातृवाणी में कहा गया है कि तुम्हें जो करना चाहिए वह यह है कि– अपने आपको भागवत कृपा के सुपुर्द कर दो क्योंकि भगवान ने संसार को ऊपर उठाने के लिए पहली बार अविद्या में घुसकर कृपा और प्रेम के रुप को ही ओढ़ा था। भगवान का प्रेम रुपान्तर की परम शक्ति है। उस प्रेम में यह शक्ति इसलिए है क्योंकि उसने अपने आपको रुपान्तर के लिए ही संसार को दिया है और इसीलिए हर जगह अभिव्यक्त है। जगत को अपने प्रथम 'सत्य' की ओर वापिस लाने के लिए ही उसने अपने आपको न केवल मनुष्य में बल्कि एकदम तमोमय 'जड़तत्व' के अणु–परमाणुओं में भी भर दिया है। इस अवतरण को ही भारतीय शास्त्रों में परम बलिदान कहा गया है, लेकिन यह केवल मानव दृष्टि से बलिदान है। मानव मन सोचता है कि अगर उसे ऐसा कुछ काम करना पड़ता तो उसकी दृष्टि से यह बहुत बड़ा बलिदान होता, लेकिन भगवान चाहे जो और जितने भी ''बलिदान'' क्यों न देते रहें वे छोटे नहीं हो सकते, उनका अनन्त तत्व कभी कम नहीं हो सकता। जैसे ही तुम भागवत प्रेम की ओर खुलते हो तुम्हें रुपान्तर की शक्ति भी मिल जाती है, लेकिन तुम इसकी मात्रा को नहीं नाप सकते। असली महत्वपूर्ण चीज है सच्चा सम्पर्क, क्योंकि तब तुम देखोगे कि उसके साथ सच्चा सम्पर्क तुम्हारी सारी सत्ता को भर देने के लिए काफी है।

श्रीमॉ कहती हैं कि ''भागवत प्रेम'' सबमें वह शांति और संतोष ला सकता है जो कृपालुता से आते हैं। यदि तुम उस शक्ति या सामर्थ्य के स्वभाव को जानना या समझना चाहते हो जो इस रुपान्तर को अनुमति देती है या सम्पन्न करती है तो तुम देखोगे कि प्रेम सबसे अधिक बलशाली और समग्र शक्ति है, समग्र इस अर्थ में कि यह सब अवस्थाओं में प्रयुक्त की जाती है। यह पवित्रीकरण की शक्ति से भी अधिक बलशाली है जो गलत इच्छा को समाप्त कर देती है और किसी न किसी प्रकार विरोधी शक्तियों को अपने वश में कर लेती है, पर रुपान्तर की सीधी शक्ति उसमें नहीं होती। पवित्रीकरण की शक्ति पहले नष्ट करती है ताकि बाद में रुपान्तर हो सके। वह एक आकार को नष्ट करती है ताकि उससे अधिक अच्छा आकार बना सके, जबकि प्रेम को रुपान्तर के लिए किसी चीज को नष्ट करने की जरुरत नहीं पड़ती। उसके अन्दर रुपान्तर की सीधी शक्ति होती है। प्रेम एक अग्निशिखा के समान है जो कठोर वस्तु को लचकदार बना देती है और फिर इस लचकदार वस्तु को भी एक प्रकार के पवित्र वाष्प में बदल देती है–यह वस्तु को नष्ट करती, उसे रुपान्तरित करती है। अपने साररुप में और स्त्रोत में प्रेम एक ज्वाला है, एक सफेद ज्वाला, जो सब बाधाओं को जीत लेती है। तुम स्वयं इसे अनुभव कर सकते हो। तुम्हारी सत्ता में कोई भी कठिनाई क्यों न हो, एकत्रित हुई भूलों, अयोग्यताओं तथा अज्ञान और दुर्भावनाओं का कितना भी बोझ क्यों न हो, इस पवित्र, साररुप, सर्वोच्च प्रेम का एक क्षण भी मानों इन सबको एक सर्वसमर्थ ज्योति में विलीन कर देता है। इस एक क्षण और सम्पूर्ण अतीत समाप्त हो जाता है, यदि तुम इसके साथ को क्षण भर के लिए भी छू लो तो सारा बोझ हट जाता है। ■

कर्म प्रधान विश्व करि राखा- जो जस करइ सो तस फल चाखा

श्याम सुंदर रघुवंशी

मनुष्य योनि को छोड़कर जितनी भी योनियां हैं, उन्हें कर्म करने का अधिकार नहीं है। पशु, पक्षी, कीट, पतंगे आदि में साधन करने की शक्ति और योग्यता नहीं होती है। वृक्ष आदि भी ऐसा नहीं कर सकते हैं तथा ये अन्य योनियां भोग योनियां हैं। ईश्वर परम ईश्वर अर्थात परम चेतना स्वरुप है। जीव भी ईश्वर का अंश होने से चेतन है, इसलिए जीवत्मा प्रकृति उत्कृष्ट या परा प्रवृत्ति है। जो चैतन्य सर्वव्यापक रुप में वर्तमान होता है वही ब्रह्म, परमात्मा या परमेश्वर आदि नामों से पुकारा जाता है। वही चैतन्य जब किसी देह विशेष में प्रकट होता है तब वह आत्मा या देह आत्मा कहलाती है तथा देह में व्याप्त रहने के कारण अपने को देह मानकर अपने मूल ईश्वर के अंशी स्वरुप को भूल जाती है तथा स्वयं को देह मानकर देह के धर्मों को अपना धर्म मान लेती है। मैं देह हूं ऐसा यह आत्मा मान लेती है, यही अविद्या कहलाती है। जब यह आत्मा ''मैं देह नहीं हूं'' परन्तु चेतन स्वरुप ईश्वर का ही अंश हूं तब उसे विद्या या ज्ञान कहते हैं।

सृष्टि एवं उसके नियंत्रक, ईश्वर सहित पांच मूल सत्यों के ज्ञान से निहित हैं जो क्रमशः ईश्वर, जीव, प्रकृति, काल एवं कर्म पर आधारित हैं। भौतिक प्रकृति को ही अपरा प्रकृति या जड़ प्रकृति कहते हैं जिससे जीवात्मा रुपी परा प्रकृति से संबंध होने से जीव का बंधन होता है। प्रकृति तीन गुणों से निर्मित है–सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण। इन तीनों गुणों के ऊपर काल है अतः गुण एवं काल के संयोग से ही कर्म सम्पादित होते हैं। काल के संयोगों से सतोगुण में उत्कृष्ट कर्म, रजोगुण के संयोग से मध्यम तथा तमोगुण के संयोग से जीव निकृषट कर्म करता है। ये कार्यकलाप या कर्म तभी सुधर सकते हैं जब जीव सतोगुण में स्थित हो और समझे कि कौन से कर्म करना चाहिए। यदि वह ऐसे सतोगुण भावना के कर्म करता है तो उसके पूर्व कर्मों के बुरे फल भी बदल जाते हैं। अतः कर्म का संपादन हर जन्म में प्रकृति एवं काल के संयोगों से ही होता रहता है। अतः ईश्वर, जीव, प्रकृति एवं काल सदैव शाश्वत है तथा कर्म शाश्वत नही है क्योंकि इसे बदलने का अधिकार मनुष्य के पास ही सुरक्षित है। इसीलिए उपरोक्त पांच तत्वों में ईश्वर, जीव, प्रकृति एवं काल शाश्वत या अपरिवर्तनीय हैं तथा संपादित कर्म परिवर्तनीय होने से शाश्वत नहीं है। कर्म से ही प्रारब्ध भी परिवर्तनीय हो जाता है। मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार से युक्त अंतःकरण के कारण ही इंद्रियों के साथ शरीर एवं जीव (प्राण) समस्त सम्पादित कर्मों बंधनों में फंसकर जीवात्मा भी बद्ध हो जाती है तथा जन्मान्तर पश्चात कर्मानुसार फलों का भोक्ता बन जाता है। वह मान्यता अनुसार वैसी ही योनि में पुनर्जन्म पाता है। अतः नियंत्रक परमेश्वर ने सारे विश्व में मनुष्य योनि में कर्म को ही प्रधान कर रखा है जिससे हमारे जैसे कर्म हैं उन्हें ही भोगना पड़ता है तथा अज्ञान या अविद्या के कारण ही मनुष्य दुख भोगता है एवं ज्ञान या विद्या के कारण सुख की अनुभूति करता है।

मानव शरीर तीन शरीरों के कारण कार्यरत रहता है–

स्थूल शरीर– पंच महाभूतों से स्थूल रुप में क्रमशः क्षिति, जल, पावक, गगन एवं समीर (वायु) के अवयवों से बना है तथा जीव के किये हुए कर्म फलों को भोगने हेतु मिला है। यह शरीर क्षणभंगुर है अर्थात प्रारब्ध भोग पूरा होने पर इसका नाश हो जाता है।

सूक्ष्म शरीर– पांच प्राण, पांच कर्म इंद्रियां, पांच ज्ञान इंद्रियां तथा अंतःकरण जिसमें मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार से निर्मित सूक्ष्म शरीर कहलाता है। प्रत्येक इन्द्रिय के पृथक–पृथक नियंता (देवी शक्तियां) होती हैं। जैसे हाथ अवयव कर्म इंद्रिय नहीं है। उसके संचालन की शक्ति तो इन्द्र हैं जिसके जाने के पश्चात हाथ मात्र स्थूल शरीर का ही भाग रहता परन्तु हाथ के भीतर की कार्य करने की शक्ति लुप्त हो जाती है। वैसे ही आंख की देखने वाली दर्शनेन्द्रिय एक शक्ति है जो सूर्य देवता हैं तथा इस शक्ति के लुप्त होने पर उसमें देखने की शक्ति नहीं रहती है चाहे वह स्थूल शरीर में ही आंख अवयव के रुप में क्यों न हो।

कारण शरीर– यह कारण शरीर कोई विशेष शरीर नहीं है बल्कि वह जीव को जन्म–मरण में घुमाने का कारण है जो कि अज्ञान या अविद्या के रुप में व्याप्त रहता है। अतः अविद्या की निवृत्ति ही कारण शरीर का नाश है। जीवन एवं मरण को समान समझने वाला ज्ञानी पुरुष जीवनमुक्त स्थिति में कारण–शरीर को नष्ट कर सकता है तथा उस स्थिति में मनुष्य दो ही शरीरों में स्थूल एवं सूक्ष्म में जीता है। इन तीनों शरीरों में एक चमत्कार है कि कोई शरीर अकेला नहीं रहता है तथा कारण–शरीर अज्ञान मिटाने से सूक्ष्म शरीर संचित कर्मों से नष्ट होने पर ही नाश को प्राप्त होते हैं। स्थूल शरीर का आधार प्रारब्ध कर्म के भोग हेतु है और क्षणभंगुर है।

अतः मनुष्य योनि अपने कर्मों के आधार पर ही अपना कारण–शरीर एवं अंतःकरण के कारण सूक्ष्म शरीरों में रहकर कर्म आधारित फलों को भोगता है। वह अपना उद्धार केवल मनुष्य तन में ही कर सकता अन्य भोग योनियों द्वारा नहीं।

बालिका शिक्षा

श्रीमती संगीता रघुवंशी

बालिका किसी भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा होती है जो बड़ी होकर पत्नी, मॉ, बहन की भूमिका का निर्वहन तथा परिवार की आय उपार्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक बालिका को शिक्षित कर हम पूरे परिवार को शिक्षित कर सकते हैं। हमारे समाज की ये बहुत बड़ी विडम्बना है कि आज भी बालिका के जन्म पर परिवार उतना उत्साहित नहीं होता जितना कि बालक के जन्म पर। संविधान के अनुच्छेद 14 में यह व्यवस्था की गई थी कि 6 से 14 वर्ष तक के सभी बालक–बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के अनिवार्य व निशुल्क शिक्षा प्रदान की जायेगी, लेकिन इतने वर्षों के पश्चात भी हम इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये। हिन्दू समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय व दुखदायी बनी हुई है। पर्दा प्रथा, दहेज के लिए प्रताड़ना, शिक्षा के उत्तम अवसर प्रदान न करना आदि....। कवि मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित कविता की दो पंक्तियां याद आती हैं––

''दो–दो कौर रोटियां मिलती और धोतियां चार,
नारी तेरा यही मोल तो करता है संसार।''

समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाना अत्यंत आवश्यक है, महिलाओं का परिवार, समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि बालिका ही आगे चलकर मॉ बनती है, यदि मॉ ही शिक्षित नहीं है तो वह एक स्वस्थ्य, शिक्षित परिवार व उन्नत समाज को जन्म देने में विफल रहेगी। समाज एवं राष्ट्र के विकास में बालिका शिक्षा का बहुत महत्व है। एक शिक्षित महिला ही अपने बच्चों, समाज व राष्ट्र को सही दिशा में ले जा सकती है। जिस तरह एक रथ दो पहियों के बिना नहीं चल सकता उसी तरह समाज को सही दिशा देना है तो बालिका वर्ग को उच्च शिक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। आजकल ''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ'' जैसे अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं जिससे बड़े स्तर पर जागरुकता और बालिका शिक्षा के प्रति बदलाव देखने को मिल रहा है। एक शिक्षित नारी अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरुक होने के साथ ही शोषण के विरुद्ध लड़कर अपने अधिकारों का सदुपयोग कर सकती है। बालिका शिक्षा के द्वारा हम अप्रत्यक्ष रुप से शिशु मृत्यु दर में कमी ला सकते हैं, क्योंकि जब महिला शिक्षित होती तो वह अपना और अपने बच्चे के स्वास्थ्य का ध्यान अच्छे से रख सकेगी। शिक्षित नारी न केवल आर्थिक समृद्धि में योगदान दे सकती है अपितु सामाजिक बुराइयों को जड़ से मिटाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

''पढ़ी लिखी जब होगी माता
घर की बनेगी भाग्यविधाता।''

मगराना, शासकीय शिक्षिका, लूशन बगीचा, केन्ट, गुना

'रघुकलश' समाचार–पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा फार्म–4

1–	प्रकाशन स्थल	भोपाल
2–	प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3–	मुद्रक का नाम	अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	हॉ
	पता	ई–100 / 41, शिवाजी नगर, भोपाल
4–	प्रकाशक का नाम	अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	हॉ
	पता	ई–100 / 41, शिवाजी नगर, भोपाल
5–	संपादक का नाम	अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	हॉ
	पता	ई–100 / 41, शिवाजी नगर, भोपाल
6–	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	अरुण पटेल

मैं अरुण पटेल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

दिनांक 01 / 03 / 2017 अरुण पटेल

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

भारत की सन्नारी सीता

कृष्णचन्द्र टवाणी

जिस काल में क्षत्रिय समाज में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित थी उस समय एक पत्नीत्व का नया आदर्श सूर्यवंशी इक्ष्वाकु कुलभूषण मर्यादा पुरुषोत्तम राम के द्वारा प्रस्थापित किया गया। उसके साथ ही एक पत्नीत्व के व्रत का पालन करने वाली क्षत्रिय पत्नी को कैसा वर्तन करना चाहिए इसका आदर्श जनकनंदिनी आद्याशक्ति भगवती श्री सीता के द्वारा प्रस्थापित किया गया। इसलिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम के साथ सीता भारतीय स्त्री जाति के सतीत्व, एकनिष्ठा और पवित्रता की ज्वलंत एवं साकार प्रतिमा बनकर विश्व इतिहास में सदा–सदा के लिए अमर रहेगी।

सामान्यतया सीता को जनक की पुत्री माना जाता है किन्तु वे उनकी आत्मजा पुत्री नहीं थी। इस संबंध में यह कथा है कि राजा जनक जब यज्ञ भूमि तैयार करने के लिए हल चला रहे थे तो छोटी–सी कन्या उन्हें भूमि से मिली। उन्होंने उसका पुत्री की तरह पालन पोषण किया और सीता नाम रखा। सीताजी का जन्म उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में वैशाख शुक्ल नवमी को हुआ था। सीता शब्द का अर्थ है हल द्वारा खेत में बनायी गयी रेखा। इसी से उनका नाम सीता रखा गया।

सीता के सौंदर्य का वर्णन वाल्मीकि ने रामायण में काव्यात्मक रुप से किया है, जहां उन्होंने पूर्ण चंद्रवदना, स्वप्रभा से दिशाओं को प्रकाशित करने वाली कोमलांगी, शुद्ध स्वर्ण वर्मा लक्ष्मी एवं रति की प्रतिरुपा नख शिख सौंदर्यमयीन कहा है। उनके अप्रतिम सौंदर्य के विषय में रावण भी कहता है–

नैव देवी न गन्धर्वा न यक्षी न च किन्नरी।
नैवंरुपा मया नारी दृष्टपूर्वा महीतले।।

अर्थात् तुम जैसी सौंदर्यवती स्त्री मैंने इस धरती पर देव, गंधर्व, यक्ष, किन्नर जाति की स्त्रियों में भी नहीं देखी। पृथ्वी पर तो ऐसी रुपवती नारी मैंने आज से पहले कभी देखी ही नहीं थी।

एक बार परशुराम अपना वृहद् धनुष लेकर राजा जनक से मिलने आये। परशुराम का यह धनुष इतना भारी था कि उसे उठाने के लिए सौ बैलों की जोड़ियां लगती थीं। ऐसा धनुष सीताजी ने सहज ही उठा लिया। उसे घोड़ा बनाकर खेलने लगी। यह देखकर सीता के देवत्व का परशुराम को आभास हुआ और उन्होंने जनक राजा से कहा कि जो इस धनुष को तोड़े उसी से सीता का विवाह करना। परशुराम की आज्ञानुसार राजा जनक ने सीता स्वयंवर की घोषणा की। सभी देशों के राजा स्वयंवर में आये किन्तु उपस्थित राजा उस धनुष को तोड़ने में असमर्थ रहे। अन्त में अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र राम ने धनुष को तोड़ा तथा जनक ने सीता का विवाह राम के साथ बहुत ही आनंद व उत्सवपूर्वक सम्पन्न किया।

वनवास गमन के समय राम ने वन की भयानकता का वर्णन करके पतिव्रता सीता को भयभीत किया फिर भी ''जहां राम वहां सीता'' ऐसा कहकर सीता अपने निश्चय पर अटल रहीं। पूरा जीवन महलों में बिताने वाली सीता को वनवास का अनुभव नहीं था। यहां तक कि वल्कल पहनना तक उनको नहीं आता था। परन्तु राम के साथ वे वनवासी जीवन व्यतीत करने के लिए सहर्ष तैयार हो गयी थीं। वनवास में रावण ने वेश बदलकर उनका हरण किया और अति विलाप करती सीता को वह लंका ले गया। रास्ते में ऋष्यमूक पर्वत पर उन्होंने अपना उत्तरीय, वस्त्र और आभूषण फेंक दिये। जिससे राम को पता लग गया कि सीता का अपहरण किया गया है। रावण ने सीता को अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में रखा और प्रतिदिन विविध प्रलोभनों, भय आदि से सीता को अपने वश में करने की कोशिश करने लगा। परन्तु सीता अपने सतीत्व पर अटल रहीं। सीता एक आदर्श पतिव्रता थी। पतिव्रत धर्म के संबंध में सीता सावित्री को आदर्श मानती थीं। उनके लिए राम ही देवता थे।

सीता की खोज करते–करते हनुमान लंका पहुंचे और पहचान स्वरुप राम की अंगूठी बतायी। उस समय अपनी शक्ति बताने के लिए सीता को रावण के कारावास से मुक्त कराने की इच्छा भी हनुमान जी ने प्रकट की। इस समय पर क्षत्रिय कुलोत्पन्न एक वीर स्त्री के रुप में हनुमान का प्रस्ताव स्वीकार न करते हुए उन्होंने कहा–

बलैः समग्रैर्युधि मां रावणं जित्य संयुगे।
विजयी स्वपुरं यायात् तत्तस्य सदृशं भवेत्।।

अर्थात् यदि रघुनाथजी सारी सेना के साथ रावण को युद्ध में पराजित करके विजयी हों, मुझे साथ ले अपनी पुरी को पधारें तो वह उनके अनुरुप कार्य होगा।

बलैस्तु संकुलां कृत्वा लंकां परबलार्दनः।
मां नयेद् यदि काकुत्स्थस्तत् तस्य सदृशं भवेत्।।

अर्थात् शत्रु सेना का संहार करने वाले श्रीराम यदि अपनी सेवाओं द्वारा लंका को पद्दलित करके मुझे अपने साथ ले चलें तो वही उनके योग्य होगा।

उन्होंने कहा कि मेरे पति राम ही रावण को हराकर मुझे ले जायेंगे। रावण की तरह से लुकाछिपा कर मुझे ले जाना राम को तथा उनकी कीर्ति को शोभा नहीं देता। सीताजी ने चौदह वर्ष के वनवास काल में समस्त सुखों का त्याग किया, ब्रह्मचर्य व्रत के साथ संयमपूर्वक जीवन व्यतीत किया। इसलिए इनकी गणना पांच प्रमुख सतियों में की जाती है।

युद्ध के बाद राम ने विभीषण को आज्ञा दी कि सीता को हमारे पास लाओ। तब सीता वस्त्रालंकार से सुसज्जित होकर पालकी में बैठकर राम से मिलने आयीं। वहां ध्यानस्थ राम को विभीषण ने सीता आगमन की खबर दी। विभीषण के पीछे–पीछे चलकर लज्जायुक्त सीता अपने पति के समक्ष खड़ी हुई। परन्तु राम के चेहरे पर सहानुभूति की जगह कठोरता देखने को मिली, क्योंकि पराये घर में एक वर्ष रहने के कारण राम ने उन्हें अस्वीकार करने का निर्णय लिया।

राम का ऐसा निश्चय समझकर सीता ने अपने सतीत्व की सौगंध खायी, फिर अग्नि–परीक्षा के लिए चिता जलाने की लक्ष्मण को आज्ञा दी और उन्होंने अपना शरीर अग्नि पर रखा। उस समय अग्नि देवता अपने हाथ में सीता जी को उठाकर प्रकट हुए और उनके सतीत्व की साक्षी देकर सीता को स्वीकारने की राम को आज्ञा की। बाद में वे राम के साथ अयोध्या नगरी गयीं। वहां राम के साथ राज्याभिषेक हुआ, कुछ समय बाद वे गर्भवती हुईं। फिर एक दिन उन्होंने राम से वन विहार की इच्छा प्रकट की उसी दिन रात्रि को अयोध्या के लोगों की बातें सुनकर राम ने सीता को त्याग करने इच्छा प्रकट की। दूसरे दिन सबेरे राम ने लक्ष्मण को बुलाया और सीता को गंगा पार छोड़ने के लिए कहा। तपोवन दिखाने के बहाने लक्ष्मण सीता को रथ में ले गये और उन्हें महर्षि वाल्मीकि आश्रम के पास छोड़ आये। उस समय सीता प्राण त्यागना चाहती थीं किन्तु गर्भवती होने के कारण ऐसा न कर सकीं। राम द्वारा परित्याग के बाद सीता महर्षि वाल्मीकि के संरक्षण में उनके आश्रम में रहने लगीं, फिर उसी आश्रम में सीता ने दो बच्चों को जन्म दिया। वाल्मीकि ने उनका नाम लव और कुश रखा।

कुछ समय पश्चात राम ने अश्वमेघ यज्ञ किया। यज्ञ में लव–कुश का राम से मिलन हुआ। उस समय लव कुश द्वारा सीता का सब वृतांत जानकर राम ने उन्हें पुनः अयोध्या बुलाया। वाल्मीकि ऋषि स्वयं सीता को लेकर राज सभा में पहुंचे और भरी सभा में सीता के सतीत्व की साक्षी दी। उस समय राम ने लोगों को विश्वास दिलाने के लिए सीता को अपने सतीत्व का प्रमाण देने का अनुरोध किया। उस समय सीता ने सौगंध लेकर कहा–

मनसा कर्मणा वाचा यथा रामं समर्चये।
तथा में माधवी देवी विवरं दातुमर्हति।।

अर्थात् यदि मैं मन, वाणी और क्रिया के द्वारा केवल श्रीराम की ही आराधना करती हूं तो भगवती पृथ्वी देवी मुझे अपनी गोद में स्थान दें।

सीता ने आगे कहा कि भगवान श्रीराम को छोड़कर मैं दूसरे किसी पुरुष को नहीं जानती, मेरी कही हुई यह बात यदि सत्य हो तो भगवती पृथ्वी देवी मुझे अपनी गोद में स्थान दें। सीता द्वारा यह आर्त प्रार्थना करते ही पृथ्वी देवी दिव्य सिंहासन पर बैठकर प्रकट हुईं और सीता को फिर से अपने में समाकर अंतर्ध्यान हो गयीं। यह देखकर राम स्तंभित हो गये और विलाप करने लगे। फिर पृथ्वी से विनती की कि सीता को वापस कर दें, नही तो समग्र पृथ्वी को समाप्त कर दूंगा। बाद में ब्रह्माजी ने प्रकट होकर राम को शान्त किया।

रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने सीता को शिव, पार्वती, गणेश आदि की उपासिका के रुप में दर्शाया है। वे राम की केवल पत्नी ही नहीं अनन्य श्रद्धा व समर्पण की मूर्ति थीं। काश आज की महिलायें उनके चरित्र का शतांश भी अपने जीवन में अनुकरण कर सकें तो आदर्श समाज की स्थापना हो सकती है।

संपर्कः प्रधान संपादक, अध्यात्म अमृत, ज्ञान मंदिर सिटी रोड, मदनगंज–किशनगढ़ राजस्थान मोबाइल–09252988221

बालमुकुन्द रघुवंशी जिला महासचिव बने

सिलवानी। अखिल भारतीय रघुवंशी :क्षत्रियः महासभा की जिला स्तरीय समिति का गठन किया गया है। समिति में सलैया निवासी समाज के सक्रिय कार्यकर्ता बालमुकुंद रघुवंशी को जिला महासचिव चुना गया। जिला अध्यक्ष ठाकुर गोविंद नारायण सिंह ने इसकी घोषणा की। श्री रघुवंशी के जिला महासचिव बनाये जाने पर समाज के लोगों ने उन्हें बधाई दी है।

प्रभाते कर दर्शनम्

डॉ. प्रेम भारती

आज के युवक का प्रत्येक व्यवहार औपचारिक बन गया है। गुरुदेव ने मुझे एक उदाहरण द्वारा समझाया कि औपचारिक व्यवहार जीवन में अनेक समस्याएं उत्पन्न कर देता है। औपचारिक व्यवहार के कारण न उसके हास्य में प्रसन्नता रहती है, न उसकी सेवा में प्रेम। न उसके अभ्यास में एकाग्रता, न उसकी भक्ति में तल्लीनता। जीवन का विस्तार तो वह बढ़ाता जा रहा है किन्तु जीवन की गहराई को खोता जा रहा है।

हमारे ऋषियों ने जीवन के जो सूत्र दिए थे, उन पर उसे चिन्तन करने का समय ही कहां है? ऋषियों का कथन है कि मनुष्य को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सर्वप्रथम परमात्मा का स्मरण करना चाहिए। आज का युवक रात्रि में जागता है और देर से उठता है। ब्रह्म–मुहूर्त तो वह जानता भी नहीं। कहा गया है–

सूर्योदये चास्तमिते शयानं
विमुंच्वति श्रीर्यदि चकपाणिः।

अर्थात् जो सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सोता रहता है वह चाहे साक्षात् विष्णु ही क्यों न हो, लक्ष्मी उसका त्याग कर देती है, अतः ब्रह्म–मुहूर्त यानी रात्रि के चौथे प्रहर में यदि न उठा जाए तो सूर्योदय के पूर्व अवश्य उठना चाहिए। उठते ही सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों को अपने मुंह पर फिराकर निम्नलिखित मंत्र बोलते हुए दोनों हाथों की हथेलियों में भावना करें कि–

कराग्रे वसति लक्ष्मी कर मध्ये सरसवती।
कर मूल स्थितो ब्रह्मा, प्रभाते कर दर्शनम्।।

कहीं–कहीं इस श्लोक का पाठ–भेद भी देखने को मिलता है–

कराग्रे वसति लक्ष्मी, कर मूले सरस्वती।
कर मध्ये तु गोविंदः प्रभाते कर दर्शनम्।

दोनों श्लोकों में हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी का वास है, ऐसा कहा गया है किन्तु सरस्वती का वास हाथ के मध्य में प्रथम श्लोक के अनुसार, अथवा हाथ के मूल में द्वितीय श्लोक के अनुसार बताया गया है। ब्रह्मा तथा गोविंद का वास भी हाथ के मूल में तथा हाथ के मध्य बताया गया है। हमें यहां पाठान्तर की शुद्धता पर चर्चा नहीं करना है। ऐसी चर्चा से समय नष्ट करने के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं होता है। हमें इसके निहितार्थ पर ध्यान देना है।

मूल रुप से भारतीय संस्कृति में ब्रहम का पूजन सार्वजनिक जीवन में देखने में नहीं आता है। इसलिए संभव है कि सृष्टि के आदि में यह श्लोक रचा गया हो किन्तु वर्तमान में तो दूसरा श्लोक ही प्रयोग में है। इसका मुख्य कारण यह भी है कि मानव का जीवन में लक्ष्मी, सरस्वती तथा ईश्वर की प्राप्ति ही मुख्य ध्येय है, यह संकेत इस श्लोक से मिलता है। अतः हमें इसी पर विचार करना है।

सर्वप्रथम हम हाथ पर विचार करें तो ज्ञात होता है कि हाथ पुरुषार्थ का प्रतीक है। प्रातः कर दर्शन करने से मनुष्य को अपने पुरुषार्थ का स्मरण हो आता है। इससे यह संकेत भी मिलता है कि लक्ष्मी अर्थात् धन, सरस्वती अर्थात् ज्ञान तथा गोविन्द यानी परम चेतना पाने का मार्ग कर्म योग है। तीनों में भी गोविन्द प्रधान हैं। परमात्मा की शक्ति का आवाहन किए बिना हम न तो धन प्राप्त कर सकते हैं और न ज्ञान ही। हॉ धन से ज्ञान खरीदा जा सकता है और ज्ञान से धर्म कमाया जा सकता है। परीक्षा में नकल करके अथवा धन देकर व्यक्ति विद्वान कहला सकता है। लाटरी, जुआ या रेस में धन लगाकर धनवान बन सकता है या किसी महात्मा का आशीर्वाद प्राप्त कर धन और ज्ञान दोनों प्राप्त कर सकता है किन्तु हमारे ऋषियों को यह पद्धति स्वीकार नहीं क्योंकि ऐसा धन तथा ज्ञान भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है। आत्म–दंभ को बढ़ाता है। जो माता–पिता स्वयं भी चरित्रवान नहीं हैं तथा बच्चों को भी संस्कारहीन बनाकर समाज को सौंप रहे हैं वे निश्चय ही घोर अपराधी हैं। समाज का अधःपतन आज इसी कारण हो रहा है। यह प्रत्यक्ष हम देख भी रहे हैं, अतः परमात्मा को साक्षी रखते हुए पुरुषार्थ करें।

हाथ के मध्य भाग में गोविन्द हैं, ऐसा स्मरण करने से लक्ष्मी और सरस्वती दोनों के पलड़े समान होंगे। रावण के जीवन में यह संतुलन देखने को नहीं मिलता है। दोनों देवियों के होते हुए भी गोविन्द से दूर होने से वह राक्षस प्रवृत्ति का बन गया। अतः हमें तमो गुणी वृत्ति से बचना चाहिए। फिर गुरुदेव ने एक बहुत ही रोचक बात कही– हमारे हाथ की सारी उँगलियां असमान हैं, किन्तु उन्हें हाथ के मध्य भाग को स्पर्श करवाने से, वे समान हो जाती हैं। इससे संकेत मिलता है कि लक्ष्मी को यदि नारायण से जोड़ दिया जाए तो व्यक्ति और समाज में भी समानता देखने को मिलती है। हाथ के मूल भाग में सरस्वती है अर्थात् किसी भी कार्य को अथवा ईश्वर चिन्तन को मूल से जोड़ने का ध्यान भी हमें रखना चाहिए। नींव को पक्का किए बिना जैसे महल नहीं बनाया जा सकता, वैसे ही बिना मूल को समझे हमें न तो लक्ष्मी सुख दे सकती है और न नारायण ही। संसार में हर कार्य लक्ष्मी–नारायण के द्वारा होना संभव है। वास्तव में इसके द्वारा मनुष्य सब कुछ कर सकने में समर्थ है। यह भाव ध्रुव, प्रहलाद,

नचिकेता जैसे छोटे–छोटे बालकों में भी देखने को मिलता है तभी तो उन्होंने जीवन में वह सभी कुछ पाया जिससे उन्हें आज भी स्मरण किया जाता है।

बिना परिश्रम किए धन कमाना पाप की ओर ले जाता है और चरित्र पतन का निमित्त बनता है। समाज में असमानता फैलने का भी यही महत्वपूर्ण कारण है। वित्त और विद्या का नशा चढ़ने पर व्यक्ति उन्मादी तो बनता ही है किन्तु अपने विनाश का कारण भी बनता है। जीवन में यदि दोनों के मध्य गोविन्द रहेंगे तो संतुलन हमेशा बना रहेगा। आज प्रत्येक व्यक्ति जागकर भी सोया हुआ ही रहता है। श्रुति में स्पष्ट कहा गया है कि कितने ही उठने वाले लोग जाग्रत नहीं होते। जीवन भर व्यक्ति अपना व्यवहार निंद्रा में खोकर ही करता रहता है। भौतिक दृष्टि से तनिक भी हानि न हो उसकी चिन्ता वह सदैव करता रहता है किन्तु प्रेम, आनन्द और संस्कार खोते जा रहे हैं इसकी चिन्ता वह नहीं करता है। वह चलता तो प्रतिदिन है किन्तु पहुंचता कहीं नहीं क्योंकि पैरों से चलकर वह हृदय को साथ नहीं रखता। पैरों से चलना प्रवास कहलाता है। हृदय से चलना यात्रा। इसी तरह वह देखता बहुत है किन्तु पाता कुछ नहीं क्योंकि आंखें देखती हैं हाथ को किन्तु हृदय को देखना दर्शन कहलाता है। वह सुनता बहुत है किन्तु समझता कुछ नहीं। कहता बहुत है परन्तु बोलता कुछ नहीं। कर्म बहुत करता है किन्तु पाता कुछ नहीं। प्रातः का यह मूल–श्लोक ऐसी निद्रा को त्यागकर जागरण का संदेश देता है। स्थूल से सूक्ष्म चिन्तन की ओर ले जाता है। हमारे बचपन को जब हम याद करते हैं तो याद आता है कि घर–घर में माताएं ब्रह्म–मुहूर्त में उठकर धरती माता को प्रणाम करती थीं। स्नान करने को जब वे नदी पर जाती थीं तो नदी माता को प्रणाम करती थीं। गाय को, पीपल के पेड़ को, तुलसी के पौधे को, अग्नि को, भोजन को, हर वस्तु को प्रभुमय मानकर परमात्मा का स्मरण करने की ये पद्धतियां ऐसी थीं कि प्रभु का हर पल अहसास बना रहता था। पुस्तक पर पैर रखने पर हम उसे प्रणाम करते थे क्योंकि उसमें सरस्वती का वास मानते थे, किन्तु आज खाते, पीते, सोते–जागते व्यक्ति केवल उपभोग की सोचता है। उपभ्रेग के लिए वह कुछ भी कर सकता है। परमात्मा को स्मरण करना वह आवश्यक नहीं समझता। इसलिए नकारात्मक विचारों में जी रहा है। अध्यात्म को भी वह इसी दृष्टिकोण से देखता है और इसे ही आनन्द मानता है किन्तु ऋषियों ने प्रभाते कर दर्शन में लक्ष्मी तथा सरस्वती के साथ प्रभु के दर्शन की बात कही है, ताकि प्रभु हमारे शरीर की हर कोशिका में बस जायें।

प्रत्येक विचार उस नन्हें बीज के समान है जिसमें एक महान वृक्ष बनने की संभावना रहती है। ये विचार ही हमें आंतरिक शक्ति का अहसास कराते हैं। इस श्लोक में बताये गये प्रभु की शक्ति का स्मरण कर पुरुषार्थ करेंगे तो परिणाम हम स्वयं देख सकते हैं। यही बताना हमारा उद्देश्य है। हमारे जीवन का हर पल आनन्द में बीते प्रभु से यही प्रार्थना है। संभवतः आज के युवा यह तर्क करें कि प्रातः उठने का वैज्ञानिक रहस्य क्या है तो उनकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए कुछ बातें हमें और कर लेना चाहिए। विज्ञान के अनुसार प्रत्येक प्राणी के भीतर एक जैविक घड़ी होती है। पेड़–पौधे और क्षुद्रतम कहे जाने वाले जीव जन्तु भी इस जैविक घड़ी से जुड़े हैं। मनुष्य की देह भी यह जैविक घड़ी निरन्तर क्रियाशील रहती है। पौराणिक मान्यता के अनुसार गोविंद का प्रातः स्मरण करने से ब्रह्मरंध्र से अमृत का स्त्राव होता है। यह अमृत विज्ञान की भाषा में पीनियल ग्रंथि में है। यह ग्रंथि मस्तिष्क में मटर के आकार की होती है। नौ प्रकार के हारमोन्स का स्त्राव करने वाली यह मास्टर ग्रंथि है। योग में इसे सहस्त्रार–चक्र की संज्ञा दी गयी है। इस ग्रंथि में 'सेरोटीन' नाम का रसायन ही वह अमृत है जो अतीन्द्रिय ज्ञान की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

ब्रह्ममुहूर्त में मनुष्य की यह ग्रंथि सक्रिय रहती है और आकार में दुगनी हो जाती है। इस समय उसमें 'सेरोटीन' रसायन के साथ–साथ मेलेटोनिन नाम का रसायन भी निकलने लगता है, जो रक्त में घुलकर अपूर्व ऊर्जा का संचार करता है। यह रसायन जब आज्ञाचक्र से प्रवाहित होकर एड्रीनल ग्रंथि –मूलाधार चक्र– तक प्रवाहित होता है, तो पूरे दिन शक्ति तरंगे उछलती हुई एक वृत्त बना लेती है। मस्तिष्क की प्रकाश–तरंगों में एक 'कोनोल' नाम का विशेष अणु होता है जो बेतार के तार की भांति अदृश्य जगत के सूक्ष्म से सूक्ष्म प्रकम्पनों को भी पकड़ लेता है और हमारे मस्तिष्क को आंतरिक शक्तियों से भर देता है। तब मनुष्य का अवचेतन मन और अधिक जाग्रत और ग्रहणशील होता है। इसलिए ब्रह्ममुहूर्त में उठना हर दृष्टि से महत्वपूर्ण माना गया है। स्वास्थ्य, चित्त की निर्मलता, बौद्धिक–स्फुरणा और आध्यात्मिक चेतना के जागरण की इस बेला को खोजना जीवन को व्यर्थ गंवाना है। भारतीय मनीषियों ने प्रातः जागरण को इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण माना है। अतः वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रातः उठकर धन की देवी, ज्ञान की देवी और प्रभु का स्मरण हमें अवश्य करना चाहिए ताकि हम ज्योतिर्मय बन सकें। तेजोमय बन सकें और जाग्रत–चेतना का भरपूर उपयोग कर सकें। आज के नवयुवकों से यही अपेक्षा है।

रघुवंशी बहुल ग्रामों में निरन्तर चल रहा है मानस-चिंतन

ओमवीर सिंह रघुवंशी

जिन्ह हरि भगति हृदय नहिं आनी।
जीवित शव समान तेई प्रानी।।

''जो अनतःकरण भक्ति से शून्य है वह मुर्दा समान है, जला देने योग्य है। बाह्य चेतना होते हुए भी उसके जीवन की कोई सार्थकता नहीं है।''

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा श्रीरामचरित मानस में वर्णित उक्त चौपाई के भावार्थ पर गहन चिन्तन–मनन करते हुए अशोकनगर जिले के ग्राम मुसयावदा में एक दिवसीय मानस संगोष्ठी का प्रभावी आयोजन हुआ। यहां संचालित गौ–शाला में ही गौ–माताओं के पावन सानिध्य में मानस के विभिन्न प्रसंगों एवं गौ–वंश के महत्व पर गहन मंथन हुआ। रघुवंश मानस सत्संग मण्डल के सत्संगी सदस्य आरोन, गुना, अशोकनगर आदि क्षेत्रों से संगोष्ठी में सहभागी रहे। श्री खलेन्द्र सिंह जी रघुवंशी एवं उनके पुत्र नवलसिंह रघुवंशी –नवल कोचिंग इंदौर– द्वारा अपने ग्राम मुसयावदा, अशोकनगर में संचालित गौशाला पर मानस संगोष्ठी का आयोजन कराया गया था।

मासिक क्रम से निरन्तर जारी मानस संगोष्ठी का आयोजन मुसयावदा के बाद आरोन क्षेत्र के ग्राम बूढ़ाखेड़ा में श्री सुरेंद्र सिंह रघुवंशी ने एवं तदोपरान्त गुना क्षेत्र के ग्राम हिनोतिया में श्री जगन्नाथ सिंह व दशरथ सिंह रघुवंशी ने संगोष्ठी का आयोजन कराया। निरन्तर दो वर्ष से रघुवंशी बहुल ग्रामों में सामाजिक बंधुओं द्वारा संचालित मानस चिंतन व गौ–संरक्षण संगोष्ठियों की द्वितीय वर्षगांठ उपरान्त सभी सत्संगी जनों को सुन्दर बगिया में भोजन प्रसादी ग्रहण कराई गई।

जनवरी 2017 में अखंड रामनाम संकीर्तन एवं मानस मंथन का कार्यक्रम आरोन, गुना क्षेत्र के जंगल में स्थित श्रीमंशापूर्ण हनुमान मंदिर पर हुआ। यहां चार जिलों गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, विदिशा के सत्संगी रघुवंशी जन सैकड़ों की संख्या में सहभागी बने। अ.भा. र.क्ष. महिला इकाई की प्रदेश अध्यक्ष बहिन अंशु रघुवंशी भी स्व–जातीय महिला वर्ग के साथ उक्त संगोष्ठी में उपस्थिति रहीं। संगोष्ठी उपरान्त आरोन क्षेत्र के स्वजातीय जनों ने श्री हनुमानजी को स्वादिष्ट सात्विक व्यंजनों का भोग लगवाकर सभी को भोजन–प्रसादी खिलाई।

फरवरी माह का आयोजन अशोकनगर जिले के ग्राम डंगौरा में संपन्न हुआ। यहां आयोजनकर्ता रहे श्री रामबली सिंह रघुवंशी, शिक्षक। मार्च माह की संगोष्ठी विदिशा जिले के ग्राम दीपनाखेड़ा में कराने हेतु श्री कल्याण सिंह, दीपनाखेड़ा ने रघुवंश मानस मंडल से अनुरोध किया जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकारा। उल्लेखनीय है कि रघुवंश मानस सत्संग मंडल प्रतिमाह आमंत्रण पर रघुवंशी बहुल ग्रामों में अपने खर्च पर जाते हैं, आयोजनकर्ताओं से भोजन व्यवस्था पर व्यय न कराते हुए निःस्वार्थ उपस्थिति व सत्संग लाभ के साथ ही गौवंश संरक्षण व पालन का जन–जागरण करते हैं। संगोष्ठी में अपील करते हैं कि घर–घर मानस पाठ हो। बेटी–बहु–बेटा प्रतिदिन आधा–आधा घंटा मानस पाठ करें और घर के सभी लोग रामायण श्रवण करें। इसी के साथ संगोष्ठी के दौरान गीताप्रेस गोरखपुर से मुद्रित श्रीरामचरित मानस, सुंदरकांड की प्रतियां भी गांव में ले जाई जाती हैं। यह धार्मिक ग्रंथ मुद्रित मूल्य से कम मूल्य पर स्थानीय स्तर पर ही सत्संग मंडल द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं ताकि घर–घर रामायण मानस ग्रंथ सुगमता व सस्ती दरों पर पहुंच सके।

– ब्यूरो प्रमुख रघुकलश, ग्वालियर–चंबल संभाग मोबाइल–9893247389

गृहस्थ का धर्म व गृहस्थी का अमृत

जगन्नाथ सिंह रघुवंशी मैयर

गृहस्थ आश्रम एक वटवृक्ष के तने की भांति है। उस वृक्ष की जड़ है ब्रह्मचर्य आश्रम तथा उसके फल–फूल हैं वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम। पुण्यकर्मों में पाठशालाएं, अनाथाश्रम, संत–महात्माओं की सेवा के कार्य आदि जो भी शुभ कर्म होते हैं वे सब गृहस्थियों से ही होते हैं। ये सभी कार्य धन से ही होते हैं जो धन खेती–व्यापार आदि से ही प्राप्त किया जाता है। धन कमाना आवश्यक है किन्तु वह सच्चाई से ही कमाना चाहिए। हृदय में किसी के लिए भी द्वेष कपट अथवा ठगने की भावना नहीं रखनी चाहिए। व्यापार में लाभ तो अवश्य ही कमाना है किन्तु जब कोई ग्राहक आये तब समझना चाहिए कि उस रुप में स्वयं भगवान आये हैं और उससे ठगी अथवा छल करना भगवान के साथ ठगी अथवा छल करना है।

रामनाम बोलने में सच्चाई हो तो अमिट लाभ होता है। गृहस्थ को धन कमाने में बहुत समय व्यतीत करना पड़ता है, इसलिए वह सच्चे दिल से थोड़ा समय भी भजन करेगा तो भगवान स्वीकार कर लेंगे।

पहले के लोग भी खाते–पीते थे। मिठास–खटास का अनुभव करते थे, परन्तु वे अपना जीवन सादगी से बिताते थे तथा मन व इंद्रियों को बस में रखते थे। वे शास्त्र व संत सम्मत व्यवहार करते थे। आज के लोगों को उनका अनुकरण करना चाहिये। प्रतिदिन प्रातः और सायं भगवान का स्मरण करना चाहिए। अपनी कमजोरियां दूर करने के लिए भगवान को प्रार्थना करें कि हे प्रभु हमें सद्बुद्धि दो, शक्ति दो हम अपने कर्तव्य का पालन करें। जितना हो सके उतना बुरे संग और बुरे कर्मों से बचना चाहिये। जो ऐसा करता है वह अवश्य ही मोक्ष प्राप्त करेगा। गृहस्थ आश्रम में ही मातृ, पितृ, गुरु ऋण से उऋण हुआ जा सकता है। गृहस्थ के घर नौ प्रकार का अमृत सदैव रहना चाहिए, इससे वह सुखी रहता है–

1– आपके घर कोई भी आ जाये तो उससे मीठे वचन बोलें।

2– सौम्य दृष्टि से उसको निहारें। चाहे वह कैसा भी हो परन्तु आपके द्वार आया है और इस समय वह आपका अतिथि है, अतिथि में देवत्व देखोगे तो आपका देवत्व जाग्रत होगा।

3– सौम्य मुख रखें। उसके साथ सौम्य सुखद व्यवहार करें।

4– अतिथि के आने पर आप प्रसन्न मन बना लीजिए।

5– आप खड़े होकर उसके प्रति आदर का भाव व्यक्त करें। आपका कट्टर दुश्मन है किन्तु आपने उसको मान दिया, खड़े होकर सम्मान दे दिया तो आधा तो आपने उसको जीत ही लिया और यदि आपने उसको चुभने वाली बात कही या अपमानित करके रवाना कर दिया तो आपने अपने लिए अपमान का द्वार चौड़ा कर दिया है।

6– स्वागत के दो मीठे वचन बोलिए और जलपान से उसका स्वागत कीजिये।

7– स्नेहपूर्वक वार्तालाप करें, जैसे प्रेम से उसको पूछें कि कैसे आये, आज तो बहुत कृपा हुई आदि–आदि।

8– आप उसके पास थोड़ी देर बैठें।

9– उसको विदा करने के लिए उसके साथ चार कदम चल पड़ें।

भले ही वह आदमी आपसे छोटा हो या बड़ा हो, किन्तु आपने इन नौ अमृतों का उपयोग किया तो आपका दिल बड़ा बनेगा और उसके दिल में आपका बड़प्पन बैठ जायेगा। ये सभी बिना पैसे के अमृत हैं।

– **मो. 9993269165**

मुक्तक

एकता की बात कैसे करें हम,
बंधुत्व की गुहार कैसे करें हम।
संभाल भी न पाये जो अपना घर,
समता की बात कैसे करें हम।

तलवार से हम जीत नहीं सकते जहां को,
प्यार से ले मोल सकते हम जहां को।
जिंदगी का पृष्ठ कौन कैसा भरेगा,
लग न पाता तनिक भी पता हवा को।

–इंजीनियर शम्भूसिंह रघुवंशी 'अजेय', गुना–9425762471

तुलसीदास का लोक-परलोक सुधार विषयक पावन उपदेश

मानस में लोक, परलोक सुधार निर्माणकर्ता महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी अमरकृति श्रीरामचरित मानस में मानव की पथ–प्रदर्शक धर्म लोक व परलोक सुधार को प्रमुखता दी है। गोस्वामीजी एक भावनात्मक कवि युगदृष्टा, राष्ट्र निर्माणकर्ता व मानव कल्याणकर्ता रहे हैं। उन्होंने मनुष्य की भावनाओं को पुनरावलोकित कर सूक्ष्म निरीक्षण कर एवं उसके परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों को मूर्तरुप देकर ही यह अमर साहित्य लिखा है।

जिस समय गोस्वामीजी ने साहित्य रचना की उस समय उनका जीवन विषम कठिनाइयों में चल रहा था। मुगलकालीन साम्राज्य था कोई स्वतंत्रता नहीं थी, परन्तु कौन जानता था कि यह महात्मा, जिन पर प्रभु श्रीराम व भक्त शिरोमणि हनुमानजी महाराज की कृपा हो परमहंस होकर कभी अपने कार्यक्षेत्र में असफल नहीं हो सकता। तुलसीदास जी ने ज्यादा शिक्षित न होने के बावजूद भी अपने लौकिक व पारलौकिक कल्याण की जितनी मार्मिक अभिव्यक्ति की है वह आज के कवियों, लेखकों के लिए एक प्रेरणा बन गयी है। आज उसका इतना प्रचार–प्रसार हो रहा है कि आपकी कृति श्रीरामचरित मानस का आज पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में सम्पूर्ण पृथ्वी पर कई भाषाओं में अनुवाद, शोध व अन्वेषण कार्य किए जा रहे हैं। मानस हमें सचेत करती है कि तुम कोई साधारण चीज नहीं हो तुम लोग बड़भागी हो क्योंकि यह बात प्रभु श्रीराम ने कही है।

ईश्वर अंश जीव अविनाशी
चेतन रहित अमल सुखराशी।।

सभी मानव मेरे अंश हैं, यह सारा जीव समुदाय मेरा अंश है। यह बात प्रभु श्रीराम कह रहे हैं तो हमें गर्व करना चाहिए। एक और बात गोस्वामी जी कही है–

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन गावा।।

आप व पूरे मानव समुदाय का यह विचारणीय प्रश्न है कि जब देवतागण जो हमसे भी उच्च हैं इस शरीर को पाने को लालायित रहते हैं तो यह कितना कीमती दुर्लभ व प्राकृतिक गुणों अवगुणों से पूर्ण है। पर यदि हम यह सोचें कि चौरासी योनियों में सर्वश्रेष्ठ मनु पुत्र का स्थान हमने पा लिया तो धन्य हो गये। परंतु नहीं हमें यह शरीर सिर्फ प्रयोजन सिद्धि, अर्थ पूर्ति, पारिवारिक सुख, भौतिक सुविधाओं की पूर्ति हेतु नहीं मिला, यह मिला है कर्तव्यों के स्वस्थ निर्वहन हेतु कर्तव्यों के पालन हेतु मानवता की रक्षा हेतु व सबसे अमूल्य बात लोक व परलोक सुधार की परम्परा का उत्तरदायित्व निभाने हेतु क्या हम उपरोक्त तथ्यों की कसौटी पर खरे उतरते हैं या नहीं यह विचार करने योग्य बात है।

गोस्वामीजी ने बड़भागी सिर्फ अंगद और हनुमान जी को कहा है क्योंकि उन्होंने प्रभु के चरणवृन्दों में अपना सब कुछ समर्पित कर दिया है इसलिए उनका लोक परलोक दोनों ही सफल हुए हैं। लोक व्यवहार को सफल बनाने के लिए गोस्वामीजी ने मानस के पात्रों अर्थात प्रभु श्रीराम के भ्राता पति सेवक शिष्य व राजा के रुप में प्रेरणा लेने की बात कही है। सीताजी का चारित्रिक वर्णन कर भारतीय नारियों से यह अपेक्षा की है कि वे सिर्फ पति के अनुकूल रहें। पतिव्रत, पतिधर्म, पतिसेवा ही उनका लोक व परलोक सुधार देती है। इसके अलावा मां पार्वती जी की पूजा उपासना भक्ति को नारी के लिए आवश्यक बताया गया है।

माता पिता को दशरथ व कौशल्या जैसा लोक व्यवहार करना चाहिए। राम जैसा बड़ा भाई, भरत–लक्ष्मण–शत्रुघ्न जैसे छोटे भाइयों के समान लोक व्यवहार को बनाने की सलाह दी है। मानस में चारों वर्णों जाति व सभी धर्मों के लोगों को उचित आरक्षण गोस्वामीजी ने दिया है। हमारे समाज के हर वर्ग के लिए हर पात्र का चरित्र एक प्रेरणा स्त्रोत है। मानस की यही विशेषता है कि अन्य ग्रंथों से हटकर सिर्फ मानव जीवन को ही सफल बनाने के लिए यह लिखा गया है। गोस्वामीजी ने छुआछूत, वर्ण व्यवस्था को एक सीमा में ही रखा है। प्रभु की भक्ति के लिए भी हर पात्र योग्य है, मनसा वाचा कर्मणा शुद्ध मन से प्रभु चरणों में प्रीति व स्नेह रखता है। तुलसीदासजी ने उत्तरकांड में अन्त में परलोक सुधार हेतु विस्तृत विवेचन किया है जो कि इस प्रकार है–

चौपाई–

यह सुभ संभु उमा संबादा।
सुख संपादन समन विषादा।।
भव भंजन गंजन संदेहा।
जन रंजन सज्जन प्रिय ऐहा।।

राम उपासक जे जग माहीं।
एहि सम प्रिय तिन्हके कछु नाहीं।।
रघुपति कृपा जथामति गावा।
मैं यह पावन चरित सुहावा।।
एहि कलिकाल न साधन दूजा।
जोग जग्य जप तप व्रत पूजा।।
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि।
संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।।
जासु पतित पावन बड़ बाना।
गावहि कवि श्रुति संत पुराना।।
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई।
राम भजे गति केहि नहिं पाई।।

छन्द–

पाई न केहि गति पतित पावन, राम भजि सुनु सठ मना।
गनिका अजामिल व्याध गीध, गजादि खल तारे घना।।
आमीर जमन किरात खस, स्वपचादि अति अधरुप जे।
कहि नाम बारक तेपि पावन, होहिं राम नमामि ते।
रघुवंश भूषन चरित यह नर, कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलि मल मनोमल धोड़ बिनु, श्रय राम धाम सिधावहीं।
सत पंच चौपाई मनोहर, जानि जो नर उरु धरै।
दारुन अविद्या पंच जनित, बिकार श्री रघुवर हरै।
सुन्दर सुजान कृपा निधान, अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित, निर्वानप्रद सम आन को।
जाकी कृपा लवलेस ते, मति मन्द तुलसी दास हूं।
पायो परम विश्राम राम, समान प्रभु नाहीं कहूं।

दोहा–

मो सम दीन न दीन, हित तुम समान रघुवीर।
अस बिचार रघुवंश मनि, हरहु विषम भव भीर।।
कामहिनारि पिआरि जिमि, लोभहि जिमि प्रिय दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय, लागहु मोहि राम।।

गोस्वामीजी कहते हैं कि यह रामचरित मानस पुण्यरुप पापों का हरण करने वाला परम निर्मल प्रेम रुपी जल से परिपूर्ण तथा मंगलमय है। जो मनुष्य भक्तिपूर्वक इस मानस सरोवर में गोता लगाते हैं वे संसाररुपी सूर्य की अति प्रचण्ड किरणों से भी नहीं जलते अर्थात पार हो जाते हैं।

वास्तव में गोस्वामी जी ने अपरिवर्तनशील काव्य की रचना कर हमारा लोक परलोक दोनों से जीवन पार लगाने वाला अर्थात सागर रुपी विपुल साहित्य दिया है। समय किसी का पीछा नहीं करता, समय की सार्थकता को समझ कर हमें अभी तक इस हालात में श्रीरामचरित मानस को अपने जीवन रुपी कागज में उतारना होगा तभी हम सच्चे मानव कहलाने के उत्तराधिकारी होंगे, ऐसा गोस्वामीजी का मत है।

आज हमें गोस्वामीजी के विचारों को मानस पाठ, मानस प्रवचन, मानस सम्मेलनों को करके मानस मण्डलों का गठन कर जन–जन तक पहुंचाना होगा, तभी इस मोह माया रुपी संसार से पार हो पावेंगे। हमेशा भगवान का प्रेमपूर्वक भजन अवश्य करना चाहिए।

प्रस्तुति– रमेश सिंह रघुवंशी, रामायणी,
पचामा, उदयपुरा–रायसेन

मुक्तक

हम हमारा राष्ट्र, राष्ट्र के हम हैं वासी,
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख, ईसाई और पारसी।
जात–पांत का भेद कराते पंडित–मौला,
राम रहीम हैं एक बनाते काबा काशी।

न कुछ बात ऐसी करो जो बकवास बन जाये,
न करो तुम काम ऐसा कि उपहास बन जाये।
एकता की बात करो मगर कुछ ऐसी करो कि,
पीढ़ियों के लिए फिर एक इतिहास बन जाये।

आज कुछ बात ऐसी करो जो इतिहास बन जाये,
आज कुछ हवा ऐसी चले जो विश्वास बन जाये।
न काम ऐसा करो भूलकर भी तुम कभी कि,
जाये किसी की जान और तुम्हारा परिहास बन जाये।

कौन धर्म कहता कि द्वेषता के बीत बोओ,
किस महापुरुष ने कहा मनुजता की रीति छोड़ो।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध भी हमारे भाई,
विश्व में बंधु अपनत्व फैले प्रीति से तुम नीति जोड़ो।

– इंजीनियर शम्भूसिंह रघुवंशी 'अजेय',
गुना–9425762471

सीमा रघुवंशी
पत्नी विजयसिंह रघुवंशी
डायरेक्टर

अनुसुइया रघुवंशी
पत्नी राकेश रघुवंशी
अध्यक्ष

नन्दनी रघुवंशी
पत्नी नितिन रघुवंशी
ग्रोथ डेवलपर

अर्चना रघुवंशी
पत्नी सूर्यप्रकाश रघुवंशी
उपाध्यक्ष

प्रीति रघुवंशी
पत्नी दीपक रघुवंशी
ग्रोथ डेवलपर

मधु रघुवंशी
पत्नी मनोज रघुवंशी
सचिव

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
के जन्मोत्सव
''रामनवमी''
के अवसर पर
हार्दिक बधाईयाँ

स्मिता रघुवंशी
पत्नी अभिषेक रघुवंशी
सह-सचिव

संगीता रघुवंशी
पत्नी जितेन्द्र रघुवंशी
कोषाध्यक्ष

रीना रघुवंशी
पत्नी अवधेश रघुवंशी
संगठन मंत्री

कृष्णा रघुवंशी
पत्नी चन्द्रप्रकाश रघुवंशी
डायरेक्टर

सादर शुभेच्छु

रघुवंश महिला मंडल, जिला-गुना (म.प्र.)

राखी रघुवंशी
पत्नी प्राणसिंह रघुवंशी
सह-कोषाध्यक्ष

सरोज रघुवंशी
पत्नी ब्रजेश रघुवंशी
डायरेक्टर

तृप्ती रघुवंशी
पत्नी मनोज रघुवंशी
कार्यालय मंत्री

माधुरी रघुवंशी
पत्नी धर्मवीर रघुवंशी
प्रवक्ता

प्रीति रघुवंशी
पत्नी सुरेश रघुवंशी
मीडिया प्रभारी

रविता रघुवंशी
पत्नी महेन्द्र रघुवंशी
डायरेक्टर

श्रीराम जन्मोत्सव "रामनवमी" की हार्दिक बधाई एवं नव-संवतसर- २०७४ की अनन्त मंगलकामनाएं

सादर-शुभेच्छु

हरेन्द्र सिंह रघुवंशी "उकावद"
युवा जिला संयोजक
अभारम, गुना, म.प्र.
मो. 9893922010

दीपक रघुवंशी "महिद्पुर"
युवा जिलाध्यक्ष
अभारम, गुना म.प्र.
मो. 9630170445

हरनाम सिंह रघुवंशी "अजलेश्वर"
सेवानिवृत्त शिक्षक एवं
वरिष्ठ प्रवक्ता, अभारम,
गुना म.प्र. मो. 9685026093

ओमप्रकाश सिंह रघुवंशी "मगराना"
सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक
एवं जिला अध्यक्ष अभारम,
गुना म.प्र. मो. 8109537063

स्वर्ण जयंती समारोह हर्षोल्लास एवं भक्तिभाव से सम्पन्न

उदयपुरा (सुरेन्द्रसिंह रघुवंशी)। रायसेन जिले के उदयपुरा के निकटस्थ ग्राम पचामा में मानस सम्मेलन के 50वें वर्ष के अवसर पर आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव का भव्य आयोजन पूरे भक्तिभाव व हर्षोल्लास के साथ जय महाकाली मंदिर पचामा में 10 फरवरी से लेकर 16 फरवरी तक मनाया गया। सप्त दिवसीय श्रीरामचरित मानस सम्मेलन का रंगारंग शुभारम्भ स्वामी नित्यानंद जी महाराज ऋषीकेश उत्तरांचल के द्वारा किया गया। रेवांचल परिसर से एक भव्य शोभायात्रा के साथ इसका आगाज हुआ। 15 फरवरी को पचामा में सामाजिक पत्रिका 'रघुकलश' के संपादक एवं भोपाल के दैनिक सुबह–सवेरे के प्रबंध संपादक तथा अमृतसंदेश रायपुर के कार्यकारी संपादक अरुण पटेल का सम्मान स्वामी नित्यानंद जी के आशीर्वाद से हुआ। इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पूर्व सांसद रामेश्वर नीखरा, एडवोकेट चतुरनारायण रघुवंशी और अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा के पूर्व महासचिव हरिशंकर रघुवंशी, एडवोकेट सुरेंद्र सिंह रघुवंशी तथा सनातन संस्कृति पुनरोत्थान मंडल के संस्थापक मनमोहनजी मुदगल, सोहागपुर, जिला होशंगाबाद सहित अनेक धर्मप्रेमी व सामाजिक बंधु मंच पर उपस्थित थे।

स्वर्ण जयंती महोत्सव के शुभारम्भ के अवसर पर रेवांचल परिसर से भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी, इसमें हजारों श्रोतागण बैंडबाजों के साथ शामिल होकर पचामा पहुंचे। यहां पर देवी–देवताओं के पूजन के साथ मानस मंच पर मानस मंडल की संगीतमय प्रस्तुति मंगलाचरण के साथ स्वर्ण जयंती समारोह का प्रारंभ स्वामी नित्यानंद जी महाराज की पीयूष वाणी से हुआ। इस समूचे आयोजन में पूर्व सांसद रामेश्वर नीखरा का विशेष योगदान रहा। प्रथम सत्र के वक्ता डॉ. जी.पी. नेमा, पूर्व प्राचार्य जबलपुर, डॉ. ब्रजेश दीक्षित जबलपुर तथा रसिक पीठाधीश्वर महन्त जन्मेयशरणजी महाराज अयोध्या, उत्तरप्रदेश, शामिल थे। इस समूचे आयोजन में महामंडलेश्वर ब्रह्मचारी विष्णुदत्तजी शास्त्री, अंतर्राष्ट्रीय संगीत प्रवक्ता सुश्री प्रज्ञा भारती भोपाल सुश्री प्रेमलता मिश्रा रामायणी रायसेन, पंडित सुभाष शास्त्री, शोभाराम शास्त्री पिपरिया, माधव शास्त्री, राजेंद्र शास्त्री, कोमल शास्त्री, रामकृपाल शास्त्री, अर्जुन भार्गव आदि प्रमुख वक्तागण शामिल थे।

इस अवसर पर सप्त दिवसीय रामकथा परिचर्चा की गई तथा रामांकित चित्रकथा प्रदर्शनी एवं स्वर्गीय बाबूलालजी रघुवंशी की पुण्य स्मृति में पन्ना जिले से पधारे राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक रुद्रसिंह यादव द्वारा प्रदर्शनी भी लगाई गई। तुलसी मानस प्रतिष्ठान भोपाल की पत्रिका तुलसी मानस भारती तथा स्वर्ण जयंती स्मारिका का विमोचन जिला एवं सत्र न्यायाधीश बी.पी. शुक्ला तथा पूर्व सांसद रामेश्वर नीखरा के करकमलों से किया गया। रात्रिकालीन कार्यक्रमों में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें मदनगोपाल चाणक्य, हुकुमपाल सिंह विकल, दयाराम रघुवंशी कक्का सहित 22 कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन गोविंददास गोदानी ने किया। मानस सम्मेलन का संचालन सुरेंद्र शास्त्री द्वारा किया गया। भक्तगणों के रूप में पूर्व सांसद रामेश्वर नीखरा, पूर्व विधायक भगवान सिंह राजपूत, रायसेन जिला रघुवंशी समाज अध्यक्ष गोविंद नारायण सिंह छबारा, सुरेंद्र ढिमोरे, नारायण सिंह देवरी, डॉ. प्रताप सिंह रजवाड़ा, शिवनारायण पटेल, वीरेंद्र पटेल तहसील संवाददाता रघुकलश सिलवानी, रामेन्द्र पटेल रघुकलश संवाददाता उदयपुरा, बाल मुकुन्द हड़ा नगर संवाददाता देवरी, संदीप पटेल तहसील संवाददाता जीधारी सर्किल सिलवानी, पी. के. भार्गव एडवोकेट, पदम लोधी एडवोकेट अध्यक्ष जिला अभिभाषक संघ उदयपुरा आदि भी इस सप्त दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित रहे। समूचे कार्यक्रम के व्यवस्थापकों में हरिशंकर रघुवंशी, चतुरनारायण रघुवंशी, मोहन सिंह, रामेश्वर दयाल तिवारी, ब्रजकिशोर तिनगुरिया, श्रीराम रघु आदि शामिल हैं।

विवाह योग्य युवक-युवती

Name- **Deepti Raghuwanshi,** DOB- 18-09-1986, Time- 3.18 pm Bhopal, Hight- 5ft. 6 nch, Qualification- B.com, MBA, C.A., Working in a Muti National Co. at Mumbai with the Package of 6 Laks per annum, Family Details- Father Shri Hari Shankar Raghuwanshi working in MP Housing Board as the Position of Astt. Grade-2, Mother Smt. Suman Raghuwanshi is a House Wife, Elder Brother Amit Raghuwanshi working in Dainik Bhaskar at the Position Lysinig Officer & Yanger Brother is in Engineer in Aircel in Gurgram. Address- Sr. LIG-80, Amrawati South, Bag Sewaniya, Bhopal, Gotra-Father- Kariya, Mama Gotra-Palohriya, Contect-Mb No-8226014362, 8349032065, Email Id- amit.raghuwanshi@dbcorp.in

डा. नितिश चौधरी :रघुवंशीः जन्मतिथि– 21 जून 1988, जन्म स्थान–होशंगाबाद म.प्र., कद 5 फुट 11 इंच, योग्यता–बीडीएस, स्वयं की रघुवंश डेन्टल क्लीनिक होशंगाबाद में संचालित है। गोत्र–छिरेटिया, मामा गोत्र–बड़कुल। पिता– श्री महेश कुमार चौधरी, एडीशनल कलेक्टर के पद से सेवानिवृत्त। माता– डा. वर्षा चौधरी प्रोफेसर, शा. गृह विज्ञान महाविद्यालय, होशंगाबाद में पदस्थ हैं। बहन– डा. नेहा रघुवंशी विवाहित, पता–विवेकानंद घाट, घोड़ा सपील के सामने, सदर बाजार, होशंगाबाद म.प्र. सम्पर्क–08966999910, 9425008910–पिता, 08839256968, 9425356717–माता

Name: Neha.O. Raghuwanshi, Date of birth: 19-02-1992, Height : 5'4", Complexion: Fair, Qualification: Bachelor of Pharmacy (Mumbai university), Masters of Pharmacy (Mumbai university) Father's name: Omprakash Raghuwanshi, Occupation : Service, Mother's name: Urmila Raghuwanshi (Housewife), Gotra : Mathneria, Mamas Gotra: Jherwar, Permanent Address:D4/7,Arihant Garden,Laxmi Nagar,Khopoli, District:Raigad, Maharashtra,Pin code : 410203, Contact no.: 09420055893, 08237902851, 09029763753

Full Name : Sanket Sanjaysingh Raghuvanshi. Date of Birth : 12-09-1987. Place of Birth : Amravati, Maharashtra. Gotra : Sisodiya. Mama Gotra : Pachariya. & ladsr dk QksVks 5 Qjojh ds esy esa gS& Height : 5 feet, 11 inches. Color : Fair. #My Career Education : BE (Electronics & Telecommunication) Job : Tata Consultancy Services (TCS), Pune. Designation : IT Analyst. #Family Details : Father's Name : Sanjaysingh Umarosingh Raghuvanshi.(Working with SPACO technologies). Mother's Name : Kiran Sanjaysingh Raghuvanshi (Housewife). Younger Sister : Monika Harishsingh Raghuvanshi (Married). Permanent & Current Location : Pune, Maharashtra. Contact No for communication : 9860036509

ROHIT KISHOR RAGHUVANSHI, DOB – 27th Aug 1990 (Place of Birth – Nandurbar) Qualification: Graduation - B.C.S & Post-Graduation – M.C.A (Management) from Pune University Currently working at Evolve Technologies & Services Pvt. Ltd as Software Developer. Height – 5.3 ft, Color – Fair & Clear. Family: Father – Mr. Kishor Narayansingh Raghuvanshi, M.Com, Accountant. (Nandurbar) Mother – Mrs. Chhaya Kishor Raghuvanshi, Housewife. (Pune) Girl should be educated, slim, fair, height up to 5.3 ft having age between 21-25 yrs with good family background. Gotra – Tambak (Turiya) Vaishistha Rushi Mamas Gotra – Mehanatbaaz (Maina) Residence Address – Plot No – 11, Mahesh Nagar, Pimpri, Pune – 411018. Contact Info – (Mother – 9420109056), (Father – 9421619755), Email – rrohit9975@gmail.com

धारावाहिक लम्बी कहानी–1

विस्मृता

डॉ. स्वर्ण सिंह रघुवंशी

रविवार का दिन था। उस दिन मैं अपने प्रवास पर पुराने परिचित इष्ट मित्रों के पास नादन जा रहा था। मुझे क्या मालूम था कि बीना–इटारसी एक्सप्रेस में बैठते ही मेरी उससे भेंट हो जायेगी जो पिछले एक दशक पूर्व मेरी परिचिता थी। इस लम्बी अवधि में उसकी यादें धुंधली–सी हो गयी थीं, वे अचानक सामने बैठी सहयात्री को देखकर मेरी आंखों के आगे साकार हो उठीं– एक स्वप्न बनकर। मैं सामने बैठी उस युवती को अपलक निहार उठा, जो मेरी उस परिचिता की हमशक्ल थी। उभरते विचारों को मैं दिल में दबाये चुपचाप आंखें मूंदकर बैठ गया। जाने कब मेरी आंख लग गई और तभी अचेत मानस–पटल पर एक मधुर स्वप्न तैर गया।

ग्रीष्म ऋतु थी। संध्या के सात बजे का समय होगा। हम तीनों मोटर सायकल से वहां पहुंचे थे। वह जगह–जो एक तहसील मुख्यालय था, मेरी जानी पहचानी जगह थी। डॉ. परिहार ने जैसे ही सामने वाले मोड पर गाड़ी घुमाई मैं समझ गया कि वे मुझे किसी चिकित्सक मित्र के घर ले जा रहे हैं, हम लोग उस शासकीय आवास के सामने आकर रुक गये जिसके दरवाजे पर एक युवती खड़ी थी। जैसे ही हम लोग मोटर सायकल से उतर कर उस ओर बढ़े वह भी मुस्करा कर एक कदम नीचे उतर आई मानों घर आये अतिथियों का स्वागत कर रही हो। ''नमस्ते'' बड़े दिनों बाद आये आप लोग। डॉ. परिहार और तिवारी के अभिवादन का उत्तर देती हुई वह महिला जिस तरह से बोली थी, उसका व्यवहार देख कर यह स्पष्ट हो गया था कि वह इन लोगों की पूर्व परिचिता थी। वह युवती भी एक डाक्टर ही होगी यह मैं समझ गया। उसके निवास को देखकर ही मैं जान गया था कि वह यहां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में महिला चिकित्सक होगी।

मैं चुप था और मौन दृष्टि से चारों ओर देख रहा था। थोड़ी ही देर बाद हम सब उस महिला के पीछे पीछे चलते हुए आवास के अन्दर प्रवेश कर गये। जहां हमको बैठाया गया था वह एक छोटा सा कमरा था। शासकीय भवन में निवास कर रही उस महिला चिकित्सक का वह अतिथिगृह था, पूरी तरह आधुनिक साज–सज्जा से सजा हुआ, वह उसका ड्राइंग रुम लग रहा था। कुल मिलाकर आठ–दस लोगों के लिए बैठने का स्थान उस ड्राइंग रुप में पर्याप्त था। कमरे में एक तरफ चार–पांच फोल्डिंग चेयर रखीं थीं और सामने जहां कमरे की खिड़की सड़क की ओर खुलती थी, एक कीमती सोफा रखा हुआ था। सोफे के पास एक छोटा सा टेबिल रखा था जिस पर बायें हाथ की कोहली को टिकाये वह महिला पास पड़ी कुर्सी को खींचकर बैठ चुकी थी और तिवारी उस महिला डाक्टर के ठीक सामने कोने वाली लान चेयर पर बैठ गये थे। हम चारों के अलावा उस कमरे में और कोई नहीं था।

वह युवती उन दोनों से हंस–हंस कर बातें कर रही थी। उस समय मैं उस युवती के लिए एक अपरिचित, उसके इन इष्ट–मित्रों का साथी मात्र था। यहां आते समय मेरे इन दोनों मित्रों ने केवल इतना ही बताया था कि वे अपनी किसी महिला मित्र से मिलने जा रहे हैं। मैं आज उसका एक अतिथि था। इस कारण संध्या के समय भ्रमण का सोच कर मैं भी उनके साथ हो लिया था। मैं उस युवती को गौर से देखने लगा। हंसता मुख, हिरणी की तरह बड़ी–बड़ी आंखों में बार–बार इधर–उधर मटकती चंचल पुतली और बात करने के ढंग को देखकर मेरी भूली–बिसरी वह स्मृति याद आ गई। क्षण भर के लिए मैं अपनी यादों के अतीत में खो गया। उषा नाम सुनते ही मेरी स्मृति की धुंध छंटने लगी बारह वर्ष पूर्व का समय अतीत की वे गहरी परतें एक–एक कर खुलने लगीं। जब उषा किशोरावस्था को पार करती हुई एक नवयौवना–बाला थी।

उस समय वह दसवीं कक्षा की छात्रा थी, उसका परिवार सिविल लाइन में बने एक शासकीय बंगले में रहता था। उस समय मैं इंटर में पढ़ रहा था। मेरा घर सिविल लाइन के ठीक सामने बस्ती में था। सिविल लाइन और उस बस्ती के बीच से एक पक्की सड़क शहर को जाती थी। मेरे पैतृक आवास और उन बंगलों में मात्र पचास गज की दूरी थी। उन बंगलों का बस्ती के नजदीक होने के कारण मेरा परिचय तब उन बंगले में रहने वाले अधिकारियों के लड़कों से हो गया था। उनमें से कुछ मेरे सहपाठी एवं हमउम्र थे। इस कारण मेरी मित्रता हो जाने से उन बंगलों में मेरा आना–जाना प्रारंभ हो गया था, तभी मैं उषा के सम्पर्क में आया। हालांकि उस समय आर्थिक रुप से मेरा परिवार एक मध्यम श्रेणी का खाता–पीता परिवार था। मेरे पिताजी के व्यक्तिगत प्रभाव से, स्थानीय बस्ती में हमारे परिवार

का अच्छा सम्मान था। कुलीन क्षत्रिय जाति का होने से एवं मेरे स्वयं के व्यवहार से उस समय बंगलों में रहने वाले परिवारों से मेरा घनिष्ट संबंध हो गया था। सभी मुझे अपने परिवार के सदस्य की भांति मानते थे। तब हम सब बंगलों के पीछे वाले खुले मैदान में खेलते रहते थे। उस समय मेरी युवावस्था थी। नैसर्गिक भावों और विचारों पर विजय पाना इंसान के वश में नहीं होता। जीवन के खतरनाक मोड़ युवावस्था में सुशिक्षित समाज के स्वस्थ वातावरण के मिल जाने से उस समय मेरे मन में बुरे विचार प्रवेश नही कर सके थे। किन्तु उषा के निरन्तर सम्पर्क और मित्रता से मैं उम्र के नैसर्गिक भावों को दबा नहीं सका था।

उस कमरे में बैठे, हमें करीब पन्द्रह मिनट हो चुके थे। मैं जब से उस कमरे में आकर बैठा था मेरी दृष्टि लगातार सामने बैठी उस महिला डाक्टर पर ही स्थिर थी। बीच–बीच में वह भी बातें करते–करते, कनखियों से देख लेती थी। मुझे, अपनी ओर टकटकी बांधे देखकर वह थोड़ी परेशान–सी दिख रही थी। शायद एक अपरिचित का इस तरह से घूरना उसे अच्छा न लग रहा हो या आश्चर्य हो रहा होगा मेरी उपस्थित पर। उसे अब मैं पहचान चुका था। पर वह मुझे नहीं पहचान पाई थी, यह निश्चित था। मैं मन ही मन हंसने लगा। मुझे उन दोनों पर भी हंसी आ रही थी जो इस समय उषा के घनिष्ट मित्र बने, मिलने आये थे। उन्हें क्या पता था कि मैं उस युवती का पूर्व परिचित था। मेरी स्मृतियों से उत्पन्न आंतरिक मनोदशा मुझे रोमांचित कर गई। सारा शरीर कांपने लगा। सामने बैठी उस युवती को नाम लेकर पुकारने के लिए मेरे होंठ फड़–फड़ाकर बार–बार खुल जाते थे। मन करता कि उससे कहूं–तुमने मुझे पहचाना नहीं!'' मैं तुम्हारा पुराना परिचित–सोबरन हूं।'' मैंने बैठे–बैठे कुछ और ही सोच लिया था– इन दोनों मित्रों के साथ उषा को भी मैं आश्चर्यचकित कर देना चाहता था। दूसरा पहलू सोच कर मेरे होंठ फैल गये। मैं धीरे से मुस्करा उठा। मेरा तीक्ष्ण दृष्टि प्रहार और अर्थपूर्ण मुस्कराहट वह सह न सकी। आखिर मेरी ओर अभिमुख हो वह बोल ही पड़ी– ''डॉ. परिहार! इन महाशय का परिचय नहीं दिया.... कौन हैं आप? इतनी देर बाद स्वयं उषा के द्वारा मेरा परिचय पूछे जाने पर परिहार थोड़ा शर्मिन्दा हो गया और फिर हंसकर बोला– ''माफ करना डॉ. उषा जी, आपकी बातों में उलझकर मैं अपने इस मित्र का परिचय कराना भूल गया।''

फिर मेरी ओर इशारा करके, डॉ. परिहार जैसे ही आगे बोलने को हुआ मैं झपट कर उसका मुंह अपनी हथेली से दबा दिया। मेरे इस अप्रत्याशित व्यवहार पर पास बैठे तिवारी और डॉ. उषा दोनों आश्चर्यचकित हो मेरी ओर देखने लगे। उन्हें क्या पता था कि मैंने ऐसा क्यों किया? परिहार के मुंह पर हाथ रखते ही मैं शीघ्रता से बोला– ''कृपया मेरा परिचय मैं स्वयं देना चाहता हूं।'' और दूसरे हाथ से तिवारी की ओर इशारा करके–''आप दोनों चुप रहें।'' कहकर मैंने अपना हाथ धीरे से परिहार के मुंह पर से हटा लिया। क्षणभर के लिये कमरे का वातावरण शान्त हो गया। उनकी सबकी नजरों में, मैं रहस्यमय व्यक्ति–सा लग रहा था। थोड़ी देर तक मैं चुपचाप जहां के तहां खड़ा रहा और फिर धीरे से सोफे पर बैठ गया। वे तीनों मुझे अर्थपूर्ण नजरों से देख रहे थे और मैं सोफे में धंसा आगे कहने की भूमिका बना रहा था। मन ही मन सोच कर मैंने एक योजना बनाई और फिर सामने बैठी युवती को गहरी नजर से देखकर कहना प्रारंभ किया–

''आप उषा ठाकुर ही हैं?''

''जी हां! मेरा यही नाम है।''

''और आप कुल चार बहन–भाई हैं। दो भाई, दो बहन?''

''जी हां! पर आपको कैसे मालूम!!'' संक्षिप्त–सा उत्तर देकर वह उत्सुक हो उठी। उसे आश्चर्य हो रहा था कि एक अपरिचित उसके परिवार तक की जानकारी रखता है। मैंने आगे कहा– ''तुमसे छोटा भाई है–अशोक''....मेरे मुंह से अपने छोटे भाई का नाम सुनकर वह अवाक् रह गयी। ''हां'' मैं अपना सिर मात्र हिला दिया। मैं एक–एक कर उसके सभी भाई–बहनों के नाम बोलता चला गया और वह चुपचाप ''हां'' में अपना सिर हिलाती रही।

मेरी बातों से डॉ. परिहार और मि. तिवारी दोनों आश्चर्यचकित होकर मुंह फाड़े मुझे देख रहे थे। मेरी बातें रहस्यमयी जो थीं। उषा, विस्मय से आंखे फैलाये मुझे घूर रही थी। मैं मन ही मन उनकी दशा देखकर फिर से हंसने लगा। जब मैंने उसकी माताजी का नाम बताकर जैसे ही पिताजी का नाम लिया तो वह अपने पिता का नाम सुनकर एकदम उदास हो गई और बुझी हुई आवाज में बोली– जी हां! मेरे पापा का यही नाम था।'' कहकर उषा ने अपना एक हाथ फैलाकर माथे पर रखा और चुप हो गई। उसके ''यही था।'' कहने के पीछे जो गहरा विषाद छुपा था, वह मैं उसकी आंखों में देख चुका था। मुझे कुछ अनर्थ की आशंका होने लगी थी। हथेलियों से दोनों आंखे ढपकर, नीचे सिर झुकाए बैठी उषा को देखकर मैं भी कुछ सोचने को मजबूर हो गया। मैं समझ गया कि मेरे वाक्यों ने उसके हृदय में

दबी किसी टीस हो उभार दिया था। आंतरिक व्यथा उसे उदास कर गई थी और मैं उस दुखती रग को जानना चाहता था। ''पापा का नाम सुनकर, तुम उदास क्यों हो गई उषा।''– मैंने सहानुभूति प्रदर्शित की थी, जिससे वह अपनी आंखों के आंसुओं को पोंछती हुई बोली– ''पापा, अब इस दुनिया में नहीं हैं।'' उसके इन शब्दों ने मेरी आशंका दूर कर दी। मैं भी मर्माहत हो गया। उषा के पिता के स्वर्गवासी हो जाने का सुनकर मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया। ''आय एम सॉरी, मुझे माफ कर देना उषा। यदि मुझे मालूम होता तो मैं यह सब कभी न कहता।'' मेरे मन में भारी दुख था। उषा चुपचाप बैठी थी। अब मेरा सम्बोधन उषा के प्रति ''आप'' से ''तुम'' पर आ गया था। इस कारण मेरी बातें सुनकर अभी तक चुपचाप बैठे तिवारी अपने स्वभावानुसार हंसकर बोले– ''लगता है डाक्टर साहब, आप उषाजी को बहुत पहले से जानते हैं?'' उनकी बात पर मुझे हंसी आ गई। भला, मेरा इतना सब कहने पर भी उनके मन में शंका थी, यही मैं सोच रहा था। उनके शब्द व्यंग्यों को मैं समझ गया था, फिर भी चुप ही बैठा रहा। उषा अब केवल मेरी ओर, मेरे चहरे की ओर देख रही थी। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने मस्तिष्क पर जोर देकर मुझे पहचानने की असफल कोशिश कर रही हो। मेरे रहस्यमयी बातचीत करने के ढंग से उसकी सारी याददाश्त कुंद हो गई थी। या लम्बे अंतराल ने मेरी याद मिटा दी थी। तिवारी अपनी बात समाप्त कर धीरे–धीरे मुस्करा रहे थे उस मुस्कराहट में भी एक अज्ञात व्यंग्य था। उनके कहे उस व्यंग्य ने ही शायद उषा के मन में नया विचार उठा दिया हो। वह तुरन्त ही मुझे सम्बोधित कर बोली–''बहुत सोचने पर भी मुझे याद नहीं आ रहा कि मैंने तुम्हें पहले कहां देखा है...हां! इतना अवश्य महसूस हो रहा है कि तुम्हारा चेहरा कुछ जाना–पहचाना सा अवश्य लग रहा है।'' सोचो, शायद कुछ याद आ जाये...''मैं बोला। ''ठीक से याद नहीं आ रहा...'' ''क्या मेरी कही इन बातों पर तुम्हारे मन को विश्वास नहीं हो रहा है?'' ''नहीं! यह बात नहीं है, आपने जो कुछ भी कहा है, वह एकदम सत्य है और उसी ने तो मुझे उलझा दिया है। आप मुझे और मेरे परिवार को भली प्रकार जानते हैं...'' ''पर, मेरे बारे में तुम्हें कुछ भी याद नहीं रहा। यही न..... ''मैंने उसे बीच में ही टोक दिया था। मेरे इस प्रकार से कहने पर वह शरमा गई और धीमे से मुस्करा भर दी। अनुलोम–विलोम विचारों में फंसा मैं सोचने लगा– उन दिनों की कोई घटना याद दिलाऊं जिससे उषा मुझे पहचान जाए। कहीं उसने मुझे पहचानने से इन्कार कर दिया तब क्या होगा? यही डर लग रहा था मन में। यदि हमारा संबंध, उस कच्ची उम्र में आत्मा की गहराई तक न पहुंचा हो और यदि उषा के लिए मैं साधारण मित्र की भांति मात्र क्षणिक मिलन की तरह याद रहा, जो अब समय के दीर्घ अन्तराल में उसके अन्तःकरण से निकल चुका हो। इस कारण मैं उसे रहस्यमयता के वातावरण में ही उलझाये रखना चाहता था। उसे वह समय याद दिलाकर मैं अपनी स्थिति, उषा के दिल में मेरा स्थान किस रुप में था, आज उसी के मुख से व्यक्त कराना चाहता था। जबकि मेरी आत्मा में उसके परिवार और स्वयं उषा–सुखद स्मरण और वे दिन मेरी चिरस्थाई मधुर स्मृति बन चुके थे। तभी तो मैं आज उसे देखते ही पहचान गया था।

मेरा परिचय जानने की उत्सुकता में उषा बेचैन थी। मैंने थोड़ी देर चुप रहकर कहना प्रारंभ किया–

''मैं तुम्हें कुछ याद दिलाता हूं।''

'' वह चुप बैठी रही।

''तुमने आठवीं कक्षा की शिक्षा कहां प्राप्त की?''

''उसने जिला मुख्यालय का नाम लिया।

मैंने उसकी बात काटते हुए कहा–''उस स्कूल से जो छावनी :बस्तीः में था।'' वह उत्तेजना में भरकर चीख उठी–''हां! मैंने केन्ट से मिडिल पास किया था। पर तुम...''इसके आगे वह कुछ और न बोल सकी। वह मुझे अभी भी पहचान न सकी, पर थोड़ा आत्मविश्वास सा अवश्य झलकने लगा था उसकी आंखों में। ''याद करो उस समय तुम्हारे घर एक लड़का आता रहता था।'' मैंने कहा। ''......''उषा चुप थी। मेरा मन अधीर होने लगा–अपना नाम बता दूं पर उस पर थोड़ा संयम बनाये रखा। इतना सब याद दिलाने पर भी वह मुझे नहीं पहचान सकी। इसका क्षोभ मुझे भावुक कर गया। मैंने एक लम्बी, ठंडी सांस भरकर कहा–

''आज की इस सूरत में और बारह वर्ष पहले की सूरत में बहुत अंतर आ गया है, उषा। तुम मुझे अभी भी नहीं पहचान सकीं जबकि मैं तुम्हें देखते ही पहचान गया था।''....''याद करो उन दिनों एक गरीब लड़का एक अमीर लड़की के साथ बेडमिंटन खेला करता था। कभी उसी के बंगले पर भाईयों के साथ बैठकर ताश का ''फोर टवन्टी'' खेल खेला करता था। इमली के पेड़ पर पड़ा झूला अभी भी याद है। आज भी वे सारी यादें, उस गरीब के हृदय में वे स्मृतियां, वे मधुर क्षण अभी भी ताजी हैं....'' यदि तुम्हें अब भी याद न आ रहा हो तो मैं वही गरीब लड़का हूं जो कभी बारह वर्ष पहले तुम्हारे सम्पर्क में आया था। अन्त में, मैं अपना नाम न

बताकर केवल ''सरनेम'' बोल कर चुप हो गया। भावावेश में भरा जब तक मैं बोलता रहा, उस बीच उषा कोई प्रतिकार न कर सकी। वह मंत्रमुग्ध होकर चुपचाप सुनती रही। मेरी बातों का मनो–वैज्ञानिक प्रभाव परिहार और तिवारी पर भी हुआ और वे दोनों भी इस बीच मौन रहे। मेरी बातों का उषा के मन पर जो प्रभाव हुआ उसकी प्रतिक्रिया मैं देख रहा था। बीच–बीच में उसके मुख पर चढ़ते–उतरते भावों का आता–जाता रंग और आंखों में जो चमक उत्पन्न हो गई थी उसे देखकर लग रहा था कि अब वह मुझे अवश्य पहचान गई है। मेरा सरनेम बताते ही वह कुर्सी से उछल पड़ी। बडी–बड़ी आंखें आश्चर्य से फैलाकर वह खड़ी हो गई और लगभग चीखते हुए बोली–

''अरे! तुम तो....''

''हां मैं....'' अपना नाम लेते'लेते मेरे होंठ फड़फड़ा कर रह गये। वह दौड़कर मेरे समीप आ गई थी। मैं भी अत्यंत भावुक हो उठा। मेरा दिल इतनी जोर से धड़क रहा था मानो उछलकर पास खड़ी उषा के कदमों में आ टपकेगा।

''तुम सोवरन हो...!''

''हां! डा. उषा.... मैं वही गरीब सोवरन हूं।''

''ओह! तुम कितने बदल गये, मैं पहचान भी न सकी।''

''चलो, अब तो तुमने मुझे पहचान लिया, मुझे बहुत खुशी हो रही है, वरना समय इंसान के सगे सम्बंधों को भी भुला देता है।'' हमारे हाथ एक–दूसरे का स्पर्श पाकर कांप उठे। मैं धीरे से सोफे पर बैठ गया। मन में अनेक भाव उठ रहे थे। उषा थोड़ी देर के लिए चुप हो गई थी। उसका चेहरा दमक रहा था– एक असीम प्रसन्नता में और मेरा मुंह विचारों व आक्रोश से तमतमा उठा था। आखिर मैं अपने आपको रोक न सका और धीरे से बोल पड़ा–''उषा! मैं अभी भी अन्दर–आत्मा से वैसा ही हूं, जैसा तब था। किन्तु बाहर से जमाने ने मुझे भी बदल दिया है। मैं भी तुम्हारी तरह डाक्टर कहलाने लगा हूं। पर अभी भी मैं तुम्हारे आगे वैसा ही गरीब बना हुआ हूं जैसा पहले था। तुम एमबीबीएस हो और मैं....'' भावनाओं में बह कर मैं न जाने क्या–क्या कहता गया। मेरी बातों पर तिवारी और डॉ. परिहार हंस उठे। उषा भी मुस्करा रही थी। किन्तु मेरी व्यंग्यभरी बातों में छुपे उस यथार्थ को वह समझ रही थी। मेरा एक–एक शब्द उसके अन्तःकरण को चीरता चला गया। वह कुर्सी से उठकर अब मेरे समीप, बिलकुल पास आकर खड़ी हो गई थी। मैं घुटनों पर हाथ रखे अपना सिर झुकाये बैठा था, इस कारण उषा के पास आ जाने का आभास नहीं हो पाया था मुझे। अचानक गर्म हथेलियों के स्पर्श से मैं कांप उठा। मेरे दोनों हाथ उषा के हाथों के बीच फंसे कांप रहे थे। सारा शरीर पसीने से तर हो गया। मेरे सोफे पर बैठे होने के कारण उसे थोड़ा सा झुकना पड़ा था। क्षण भर के लिए मेरा सिर ऊपर उठा और पुनः नीचे की ओर झुक गया। उसकी गर्म सांसों का स्पर्श पाकर मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सारी शरीर मोम बनकर पिघल जायेगा। उस वक्त उषा की चमकती उन आंखों से आंखें मिला पाने का साहस मुझे नहीं हो रहा था। उन भावपूर्ण नेत्रों में एक अज्ञात–मौन आत्मीयता उत्पन्न हो गई थी।

सहसा बन्द होंठ फड़फड़ा कर खुल गये और एक स्फुटित स्वर धीमे से निकल पड़ा–''सोवरन!'' उषा मेरे हाथों को धीरे से कसकर दबाती हुई बोली– ''सोवरन! मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि जीवन की राह में कभी हम दोबारा इस तरह से मिल सकेंगे। सच मानों तुम्हारी याद मैं भूल चुकी थी।'' उसका प्रत्येक शब्द टूटता सा, एक गहन आत्मीयता से परिपूर्ण बड़े धीमे–धीमे उसके मुंह से निकला था जैसे वह मुझे भूल जाने पर पश्चाताप कर रही हो। मैं अपने आपको वश में नहीं रख सका। जिस पर उषा का व्यवहार मुझे और उत्तेजित कर उठा। मैं भाव–विह्वल हो गया। मेरे मन के रुके हुए भाव सिमट कर होंठों पर आ गये और मैं बोल उठा– ''अमीरों के दिल में गरीबों के लिए थोड़ी सी भी जगह नहीं होती उषा। पर गरीबों का दिल समुद्र की तरह विशाल और गहरा होता है, वे पानी की एक नन्हीं बूंद की तरह अपनी हर छोटी से छोटी याद को अन्त तक अपने हृदय में संजोए रखते हैं पर अमीर.. ..''। इसके आगे मैं कुछ न बोल सका, गला रुंध गया था। आंखों से आंसू बरसने को थे, जिन्हें छुपाने के असफल प्रयास में मैंने सिर झुकाकर अपना माथा नीचे कर लिया। आंखों से प्रेम के दो आंसू टपक पड़े। गिरते वे आंसू उषा के हाथों पर आकर फैल गये। अपने हाथों को खींचकर वह सीधी खड़ी हो गई और तत्क्षण मेरे पास ही उसी सोफे पर सटकर बैठ गई। मेरे झुके हुए चेहरे की हथेलियों के सहारे ऊपर करके, भीगी पलकों को पोछकर बोली–

''–यह सब क्या है सोवरन?''

कुछ नहीं, बस दिली याद है जिसे वर्षों से मन के अंदर दबाये बैठा था। जाने क्यों वह आज इन आंखों से व्यक्त हो गई.... उस अमीर लड़की की याद में– खुशी के आंसू बनकर।'' यह सब कहकर मुझे क्यों शर्मिन्दा कर रहे हो तुम....? ''जाने वह अमीर लड़की....'' शेष शब्द मेरे गले में अटक कर रह गये। जैसे ही यह वाक्य

मेरे मुंह से निकला कि उषा ने झपटकर मेरा मुंह बन्द कर दिया। शायद उसे मेरा बार–बार अमीर कहना बुरा लग गया था। वह मेरा मुंह बन्द किये ही बोली थी– देखो सोवरन! यदि अब तुमने दोबारा मुझे अमीर कहा तो मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करुंगी।'' उसके कहने में हल्का सा रोष था, किन्तु हकीकत में उसकी आंखों में आंसू भर आये थे। मेरी बातों ने वातावरण को थोड़े समय के लिए बोझिल कर दिया, वह उदास हो गई थी। अब मैं भी उसे अवसाद की स्थिति में और अधिक देर तक नहीं रखना चाहता था। जब उषा ने अपने आंसू पोछकर मुझसे पुनः कहा– ''क्या इस तरह की बातें करके अब मुझे रुला देने का ही विचार है तुम्हारा?'' मैं झट से बोल पड़ा–''गुस्ताखी माफ..... वैसे तुम पहले भी कई बार मेरे सामने रो चुकी हो, बच्चों की तरह।'' और फिर हंसते हुए उसे बचपन की याद दिलाकर अवसाद की स्थिति से उबारने का सोचकर ताना मार दिया–''और यदि एक बार तुम जवानी में भी रो दोगी तो..... रोने में क्या फर्क पड़ने वाला है? मेरी बात सुनकर तिवारी और परिहार ठहाका मारकर हंस उठे। ''ओह! यू..... नॉटी......'' कह कर उषा ने मेरी बांह में जोर से एक चिकोटी भर ली। मेरे मुंह से एक दबी हुई सी चीख निकली और फिर हम दोनों भी उन्हीं के साथ जोर से खिलखिला कर हंस पड़े। कमरे का वातावरण ठहाकों से गूंज उठा।

कुछ समय के लिए अपने किशोरावस्था के क्षणों को याद करके वह वर्तमान जिंदगी को भूल गई थी। मुझे देखकर आज उषा को अपनी वे पुरानी यादें ताजा हो उठीं जो उसके हृदय में समय की बारह वर्ष मोटी परतों की नीचे दबी पड़ी थीं। वह काफी देर तक हंस–हंस कर, उन्हीं पुरानी–गुजरी यादों में खोई मुझसे बातें करती रही। अब केवल वह और मैं, बातें कर रहे थे, जबकि यहां आने पर उषा केवल उन दोनों से ही बातें कर रही थी। तब मैं उसके लिए एक अपरिचित था, पर अब वे दोनों मित्र उषा के लिए साधारण–परिचित रह गये थे, जबकि मैं उसका पूर्व परिचित एक घनिष्ट मित्र था, एक हमदर्द बन गया था। मेरे आगे उनकी स्थिति गौण हो जाने से दोनों बोर होने लगे और बार–बार अपनी कलाई घड़ी पर नजर डालने लगे। मैं समझ गया था। आज मैं अत्यधिक प्रसन्न था और उषा भी मुझसे मिलकर खुश हो रही थी। कई बार कहा, पर उठने ही नही दिया उसने। मेरा मन भी जाने को नहीं कर रहा था परन्तु रात्रि अधिक हो जाने से मेरा मन भी बुझ–सा गया और उठकर चले जाने को जी करने लगा। अपने उन दोनों मित्रों की मनादेशा मैं पहले ही भांप चुका था। डॉ. उषा से मिलने को आते समय उनमें जो उत्साह मैंने देखा था वह अब ठंडा पड़ चुका था। उनकी जगह अब मैं उषा से मिलकर उत्साहित हो गया था। मैं डॉ. परिहार और तिवारी को धन्यवाद दे रहा था जिनके कारण मेरी भूली–बिसरी वह पुरानी याद फिर से ताजा हो गई।

हम लोग उठ खड़े हो गये। जाने से पूर्व मैं उषा से एक बात पूछना चाहता था जो बार–बार मेरे मन मे उठ रही थी, आखिर साहस करके मैंने जी बड़ा करके उससे पूछ ही लिया...''यदि बुरा न मानो तो एक बात पूछ सकता हूं, उषा!''

''पूछो, क्या पूछना चाहते हो'' हंसकर उसने मेरी आंखों में आंखें डाल कर झट से कह दिया। ''तुम्हारी शादी हो गई या......'' मैंने जानबूझ कर बात अधूरी छोड़ दी। मेरा सवाल सुनकर उषा एकदम शान्त और स्थिर हो गई। वह फिर से उदास दिखने लगी, शायद मैंने यह पूछकर उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया हो। उसने एक लम्बी सांस भरी और धीरे से कहा––''समझो अभी नहीं।'' और फिर चुप हो गई। उसकी आंखों के सूनेपन में छुपी वह अज्ञात वेदना मैं नहीं समझ सका। पर इतना अवश्य जान गया कि जीवन के भयानक क्षण में वह किसी ऐसे मोड़ से अवश्य गुजरी है जिसकी वेदना वह अभी तक नहीं मिटा पाई। मैं कुछ और आगे पूछता पर चुप रहा। उषा मुझसे रुक जाने का आग्रह कर रही थी। वैसे मैं रुक जाता पर आज रुकना ठीक नहीं समझा। उसके अत्याधिक आग्रह पर मैंने कल सायं पुनः आ जाने का वायदा उससे किया तभी वह मानी तथा वह सड़क तक हम लोगों को छोड़ने आई थी। हम तीनों फिर से मोटर सायकलों पर सवार थे। वापस लौटते वक्त मैं रास्ते में सोच रहा था कि अच्छा ही हुआ मैं आज उषा के पास नहीं रुका। मैं अपने मित्रों की नजरों में गिरने से भी बच गया और उषा को भी आक्षेपों के झूठे भंवर जाल में फंसा देने से बचा लिया। वरना देखने और कहने वाले लोग एक अविवाहित स्त्री को झूठा बदनाम कर देने में कहां चूक सकते हैं।

मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा। ट्रेन स्टेशन पर आकर रुक गई थी। सामने बैठा सहयात्री– वह युवती मुझे उठता देख घूरने लगी। थोड़ी देर तक मैं भी उसे निहारता रहा। मेरी आंखों के आगे उस अधूरे स्वप्न की क्षणिक यादें तैर रही थीं। मैंने जैसे ही अपना मुंह दूसरी ओर फेरा वह युवती मुझे पुकार उठी–

''क्या एक गिलास पानी लाकर दे सकेंगे आप।'' उसके मधुर अनुरोध को मैं टाल न सका और नीचे

उतर कर पानी का एक भरा गिलास लाकर थमा दिया। ट्रेन पुनः गंतव्य की ओर चल दी। वह युवती धीरे–धीरे मुस्करा रही थी। मुझे ऐसा लगा मानो वह हंसकर मेरे प्रति मौन कृतज्ञता प्रगट कर रही हो। मैं फिर से वहीं पहुंच गया–स्वप्न लोक।

–आगामी अंक में जारी –

शान-शौकत और दिखावे की दौड़ में शामिल रघुवंशी समाज

अभिमत **सुरेन्द्रसिंह रघुवंशी, एडवोकेट**

पिछले दिनों बरेली में रघुवंशी समाज के एक रिश्तेदार के यहां शादी में जाने का अवसर मिला तो उसे देखकर ऐसा लगा कि जैसे मानो शान–शौकत और दिखावे की दौड़ में रघुवंशी समाज शामिल हो गया है और दिन–प्रतिदिन फिजूलखर्ची व वैभव का प्रदर्शन करना एक शगल बनता जा रहा है। वहां मैंने देखा कि वर–वधु पक्ष ने अलग–अलग गार्डन बुक किए थे। अब इसे फिजूलखर्ची कहें, पैसे का दुरुपयोग या दिखावटी जिंदगी का बढ़ता शगल। इस विवाह में बड़े घरों की जो सभ्य महिलाएं आई थीं उन सबने मुझसे एक ही सवाल किया कि आप किस साधन से शादी में भाग लेने आये हो। मैंने उनसे कहा कि आप लोग तो पांच–दस लाख रुपये की कार या जीप से आई होंगी, मैं तो तीस लाख रुपये कीमत की बस से आया हूं। वह बस जो राष्ट्रीय राजमार्ग 12 पर भोपाल से जबलपुर चलती है और उसमें ही पत्नी व बच्चों के साथ सफर करके आया हूं, मुझमें और आप में एक फर्क है कि मेरे ऊपर कोई कर्ज नहीं है और पेट में कोई कब्ज नहीं है, आप लोग कर्ज में डूबी हैं, ब्लड प्रेशर, शुगर व हार्ट जैसी बीमारियों से ग्रस्त हैं। आपके पास मोटर साइकल, आल्टो और अन्य बड़ी–बड़ी कारें, आलीशान बंगला व नौकर–चाकर हैं, मैं तो इन सबसे दूर हूं। उनका यह प्रश्न सुनते ही मुझे यह आभास हुआ कि ये लोग कितना दिखावटी और काल्पनिक दुनिया में जी रहे हैं जो कि पूर्णतया चमक–दमक और ग्लैमर की दुनिया है। केवल एक–दूसरे पर यही जताना इनका मकसद है कि हम कितने पैसे वाले और हाई–प्रोफाइल लोग हैं, वे अपने को अति विशिष्ट लोगों की श्रेणी में समझते हैं। यह अलग बात है कि ये लोग लाखों रुपये के कर्ज में डूबे हुए हैं और जमीनें बैंकों में बंधक रखी हुई हैं। शरीर अनगिनत बीमारियों से ग्रसित है। एक तरफ हमारा समाज दिखावे और फैशन की दुनिया में मशगूल है तो दूसरी ओर उसका राजनीतिक महत्व कम होता जा रहा है, पहले वह राजनीति को संचालित करता था अब अन्य वर्गों के लोग अपनी राजनीति के लिए उसका एक रबड़ स्टाम्प की तरह का उपयोग कर रहे हैं। रघुवंशी समाज राजनीति के मैदान में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए हाशिए पर पहुंच रहा है। इसे समाज की विडम्बना ही कहा जाएगा कि मध्यप्रदेश के लगभग 22 जिलों में और महाराष्ट्र के विदर्भ एवं खानदेश इलाके में रघुवंशी समाज बहुतायत से है लेकिन आज तक एक भी व्यक्ति लोकसभा या राज्यसभा सदस्य नहीं बन पाया है। मध्यप्रदेश विधानसभा में पहले पांच से आठ तक विधायक समय–समय पर रहे हैं लेकिन आज स्थिति यह है कि रघुवंशी समाज के केवल दो विधायक हैं और वह भी एक भाजपा और दूसरा कांग्रेस से। मंत्रि परिषद में भी दो केबिनेट मंत्री तक एक साथ रहे हैं लेकिन आज हालत यह हो गई है कि रघुवंशी समाज का एक भी व्यक्ति मंत्रिमंडल में नही है। वर्तमान में सत्ताधारी दल के इकलौते रघुवंशी विधायक चौधरी चन्द्रभान सिंह को मंत्रि परिषद में इस बार जगह नहीं मिली है जबकि वे पूर्व में सुंदरलाल पटवा, उमा भारती, बाबूलाल गौर और स्वयं शिवराज सिंह चौहान की मंत्रि परिषद में महत्वपूर्ण मंत्री रहे हैं।

मेरा यह मानना है कि जब तक समाज के कर्णधार उच्च्य एवं मध्यम लोगों के साथ ही आर्थिक रुप से कमजोर रघुवंशी भाइयों को समरसता के सूत्र में बांधने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक समाज का नैतिक, सामाजिक व राजनीतिक महत्व और विकास होना संभव नहीं होगा। आज समाज को ऐसे लोगों की जरुरत है जो मध्यप्रदेश के 22 जिलों के साथ ही उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात, हिमाचल प्रदेश में निवास करने वाले सामाजिक बंधुओं को एकता के सूत्र में बांधे ताकि समाज उन्नति कर सके। मेरा सभी सामाजिक बंधुओं से खासकर बड़े–बुजुर्गों, भाई–बहनों व युवाओं से अनुरोध है कि वे ग्लैमर की दुनिया से निकलकर सत्यता के ठोस धरातल पर खुद को तौल कर कार्यों का मूल्यांकन करते हुए समाज को एकता के सूत्र में बांधने का अभियान छेड़ें।

संपर्क–पचामा, उदयपुरा, मोबाइल–9993044340

कहानी

पार्टी

'मां! आप पापा से बात कीजिये ना। उनसे मेरे जाने की अनुमति दिलवा दीजिये ना। मां मेरे कॉलेज के ही दोस्तों के साथ मैं पार्टी करने वाला हूँ। सब अच्छे दोस्त हैं और आप तो मिल चुकी हो ना उनसे ? राहुल कब से मां को मना रहा था और मां थी कि पापा के फैसले पर अड़ी थीं। बेटे के बार–बार गुजारिश करने पर वह पापा से बात करने के लिए तैयार हो गयीं।

'सुनिये, राहुल क्या कह रहा है, अपने दोस्तों के साथ वह जन्मदिन की पार्टी मनाना चाहता है। मुझे लगता है जाने देना चाहिये, उसके दोस्तों को हम जानते हैं।'

'नहीं–नहीं राहुल की मां, मैं इजाजत नहीं दूंगा। आजकल के बच्चो को तुम जानती ही हो, पार्टी के नाम पर न जाने क्या हंगामा करेंगे। उसे कहो अपने सारे दोस्तों को बुलाए पर जो करना है घर में ही करे।' पापा ने साफ मना कर दिया।

'कैसी बातें करते हैं आप ? क्या आपको अपने बेटे पर भरोसा नहीं है ? मैं अपने बेटे को अच्छे से जानती हूँ। जाने दीजिये ना। कब तक उसे बाहरी दुनिया से छुपा कर रखेंगे। कोई गलत हरकत नहीं करेगा हमारा बेटा मुझे यकीन है उस पर।' आखिर मां के समझाने पर हल्की सी ना नुकुर के साथ पापा भी मान गए और राहुल को दोस्तों के साथ पार्टी मनाने की इजाजत मिल गयी। मां ने कुछ सोचकर उसे 1000 रूपए पकड़ा दिये। वैसे आठ दस दोस्तों को पार्टी देने के लिए 1000 रूपये कम थे। पर जब दोस्त साथ हों तो गम किस बात का ? दोस्तों ने थोड़े थोड़े पैसे उसमे जोड़े। शाम की पार्टी का इंतजाम अच्छे से हो गया।

'ये राहुल, आज हम बियर का टेस्ट लेंगे और कुछ नॉनव्हेज ट्राय करेंगे।' गौरव का इतना कहना था कि सारे दोस्तों ने 'हुर्रे' के नारे लगाये। शाम की पार्टी को लेकर सब उत्साहित थे। 'दोस्तों, मैं क्या कहता हूँ– हम बाहर जाने के बजाय क्यों ना घर में ही सब अरेंज करें ? मेरे घर में वैसे भी कोई नहीं है। सब घरवाले गांव गये हैं और बाहर हमें कोई पहचान वाला मिल गया तो ? सारे समय यही खतरा सर पर मंडरायेगा और हम पार्टी का मजा नहीं ले पायेंगे। क्या कहते हो?' वैसे गौरव की बात भी सही थी और सारे दोस्तों को पार्टी से मतलब था, जगह कौन सी हो इस बात से उन्हे कोई सरोकार नही था। सबकी रजामंदी से आखिर पार्टी गौरव के घर पर तय हो गयी। शाम के सात बजे तक गौरव के घर मिलेंगे बाद में पार्टी का सामान लेने दो लोग जायेंगे और बाकी घर पर ही हंगामा करेंगे। ये सब बाते तय करके दोस्त विदा हो गये।

राहुल बेसब्री से शाम का इंतजार करता रहा। छह बजते ही वह तैयारी करके निकल पड़ा। ठंड के दिन थे सो बाहर का मौसम सुहाना लगा उसे। पतलून की जेब में हाथ डालकर वह मजे से गुनगुनाता हुआ पैदल ही चल पड़ा। गौरव का घर उसकी अगली कालोनी में ही था। वह कभी उसके घर गया नहीं था पर पता उसे मालूम था। कुछ ही दिनो में नया साल आने वाला था। रास्ते भर जगह जगह उसे उमंग और उत्साह जान पड़ा। कहीं दुकानें दीपमालाओं से जगमगा रही थीं, कहीं दुकानों में भारी डिस्काउंट की सेल लगी थी। उसका मन भी खुशी से झूम उठा। अपनी धुन में यहां वहां झांकते हुए चलते चलते वह कब रास्ता भटक गया उसे पता ही नहीं चला। यहां से वहां, इस गली से उस गली करते करते राहुल आखिर वहीं आ गया। 'हे भगवान! अब मैं कहां ढूंढू इसका घर ? काश मैं किसी को पिक करने के लिये कहता। अंधेरा हो गया है' सोचकर राहुल ने गौरव को फोन लगाया लेकिन गौरव का नंबर व्यस्त आ रहा था। 'अब किसको फोन करके बुलाये' ... राहुल सोच ही रहा था कि अचानक एक छोटे बच्चे ने उसे पुकारा.. 'भैया, मेरी मदद करो, देखो न मेरी मां को क्या हुआ है, कब से खांस रही है, चलो न मेरे साथ।'

राहुल उसे झिड़क देना चाहता था पर बच्चे की आंखो मे पानी देख वह उसके साथ चल पड़ा। पास ही के मैदान में मंदिर के पास झोपड़ीनुमा कच्चा मकान बना हुआ था। राहुल बच्चे के साथ अंदर गया। एक दीपक टिमटिमा रहा था बाकी सब अंधेरा था। बच्चे की मां खांसी से अधमरा गयी। 'सुनो छोटू, पानी ले आना जरा। तुम्हारी मां को पानी देंगे तो उनकी खांसी रूक जायेगी' राहुल ने उस बच्चे से कहा। 'पर भैया, पानी तो नहीं है। मां की तबियत ठीक नहीं थी तो उन्होंने पानी भरा ही नहीं। थोड़ा सा पानी था, तो पीते पीते मेरे से ढुलक गया। अब पानी तो नहीं है'। बच्चे ने मासूम चेहरे से कहा।

'ठीक है, तुम यहीं रूको। मैं सामने वाली दुकान से पानी लेकर आता हूँ।' कहकर राहुल बाहर की ओर लपका। चंद पलों में वह बिसलरी की बोतल लेकर आ गया। बच्चे की मां को उसने पानी पिलाया। कुछ ही देर में उस औरत को राहत महसूस हुयी। उसने राहुल

को ढेरों आशीष दिये। उनकी बोली सुनकर राहुल दंग रह गया। बड़ी ही साफ–सुथरी बोली थी उनकी।

'बेटे यूँ अचरज में पड़ने की कोई जरूरत नहीं। मै पढी लिखी हूँ। इसी शहर के दूसरे छोर पर हमारा मकान था। हमारा छोटा सा पुश्तैनी कपड़े का कारोबार भी था। लेकिन मेरे ससुरजी की मौत हो गयी और जेठजी ने हमें घर और कारोबार से बेदखल कर दिया। मेरे पति भी साक्षर हैं। अब हमारे पास कोई घर और धंधा नहीं रहा। हम शहर के इस पार आ गए ताकि कोई पहचान वाला न हो और हम मेहनत मजदूरी करके अपना पेट पाल सकें। इसके पिताजी रिक्शा चलाते हैं। जो इसी बस्ती के रोशनलाल से भाड़े से लिया है। उसे रोज सत्तर रूपये भाड़ा देना पड़ता है। उसे देने के बाद जो थोड़े बहुत पैसे बचते हैं उस पर हम गुजारा करते हैं। पर अब हर एक के पास गाड़ी होती है या लोग ऑटो से जाना पसंद करते हैं, जिनके पास पैसे कम हों वही रिक्शे का उपयोग करते हैं, इसी कारण पैसे कम मिलते हैं, लेकिन कम से कम बेटे का तो पेट भर जाता है।'

वह औरत कहती रही और उसकी दास्तां सुनकर राहुल का युवा मन दर्द से कराह उठा। उसे लगा महज सौ रूपये के लिए ये लोग इतनी मगजमारी करते हैं और हम लोग यूं ही इतना पैसा खर्च कर देते हैं। क्या करूं मैं इनके लिए ताकि एक दिन ही सही इनके चेहरे पर मैं खुशी देख सकूं। उसने देखा वह छः–सात साल का बेटा मां से चॉकलेट की मांग कर रहा था। 'पापा आयेंगे तो ला देंगे हां बेटे, अभी मां की तबीयत ठीक नहीं है ना? यूँ जिद नहीं करते, और सुनो बेटे, राहुल से उसने कहा, 'अब मैं ठीक हूँ, तुम भी अब निकल सकते हो। तुम्हारे दोस्त कब से तुम्हें फोन करके बुला रहे हैं।'

राहुल वहां से तो बाहर निकला पर उसकी आंखो के सामने वह बच्चा और उसके हालात बार–बार आ रहे थे जिसकी वजह से अब पार्टी मनाने की उसकी इच्छा धूमिल सी हो गयी। राहुल को लगा क्यों न पार्टी यहीं इस बच्चे के साथ मनायें? उत्साह से उसने अपने दोस्तों को फोन किया। पर उसका बदला हुआ प्लान सुनकर गौरव के साथ बाकी दोस्तों ने भी उसे मना कर दिया। 'अरे राहुल, आर यू मैड ? ऐसे न जाने कितने लोग रोज मिलेंगे, उनके हालात के हम जिम्मेदार तो नहीं फिर हम क्यों भुगतें ?'

'देखो गौरव, बाकी लोगो के बारे में तो नहीं जानता पर ये लोग अच्छे घर से हैं और मैं आज इनके साथ ही अपना जन्मदिन मनाना चाहता हूँ। तुम लोग मेरा साथ देना नहीं चाहते तो तुम अपनी पार्टी अलग करो। मैं घर से इनके लिए खाना बनाकर लाता हूँ, पर आज मैं उस छोटे बच्चे के चेहरे पर खुशी देखना चाहता हूँ।'

उस कच्चे मकान के दरवाजे पर खड़ी उस औरत ने ये सब सुना तो उसके आंख में आंसू आ गये। 'सुनो बेटे'! उसने राहुल को पुकारा, 'तुम अपने दोस्तों के साथ खुशी–खुशी अपना जन्मदिन मनाओ। हमने अपने हालात से समझौता कर लिया है। हमे कोई दिक्कत नहीं तो तुम मायूस क्यों होते हो ? जाओ बेटे, भगवान तुम्हारी हर मुराद पूरी करे।' कहकर वह अंदर की ओर मुड़ गयी। पर राहुल का उतरा चेहरा देख दोस्तों ने तय किया की चलो इसे इसकी 'मनचाही विश' ही 'गिफ्ट' में देते हैं। गौरव वहीं रूक गया। राहुल को उसने बातों में उलझा रखा और बाकी दोस्त खाने का सामान जुटाने मे लग गये।

तकरीबन आधे घंटे के बाद वह बहुत सारा खाने का सामान, फल, चॉकलेटस् और केक लेकर आ गये। उस कच्चे मकान के बाहर मैदान मे उन्होंने अपना डेरा जमाया।

'छोटू– आओ बेटा, देखो आपके लिए कितने सारे चॉकलेटस् लाये हैं और केक भी है। आओ हम दोनों मिलकर केक काटते हैं।' राहुल ने उस बच्चे को आवाज लगायी। साथ ही बच्चे के मां–पिता को भी बुलाया। छोटू के माता–पिता को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि एक अठारह–उन्नीस साल के लड़के ने उनके दर्द को इतनी बखूबी समझा और अपने जन्मदिन की खुशियां उनके साथ बांटनी चाही।

राहुल ने अपने हाथ से छोटू को चॉकलेट खिलाई। उसके मां–पिताजी और दोस्तों को उसने खाना परोसा। छोटू को इतने चाव से खाता देखकर उसकी मां की आंखे भर आयीं। एक कंदिल उन लोगों ने बीच में जलाए रखा था। उस प्रकाश में उस परिवार के तीनों लोगों के चेहरे की खुशी देखकर राहुल के साथ साथ उसके दोस्तों का दिल भी भर आया।

'शुक्रिया दोस्त! गौरव ने करीब आकर कहा। तुम सही थे और मैं गलत। आज इनके चेहरे की खुशी देखकर मुझे दिल से अच्छा लगा। चलो अब चलते हैं। काफी देर हो चुकी है।

घर आकर राहुल ने जब मां–पापा को अपने अनोखे जन्मदिन के बारे में बताया तो अपने बेटे के लिए उनके दिल में फख्र महसूस हुआ। 'सुनो राहुल की मां, तुम वाकई सही थीं। अपना बेटा कभी गलत काम नहीं कर सकता।' पापा ने आंखे पोछते हुए कहा।

–**सोनाली करमरकर,** 139, शिवाजी नगर, नागपुर

कविता

समाधि

अदृश्य हो गये प्रकाश और छाया के पर्दे सारे,
दुख का लवलेश भी कहीं नहीं रहा,
मिट गये क्षणभंगुर सुखों के बोध सारे,
नष्ट हो गई इंन्द्रियों की धुंधली मृग–मरीचिका।
प्रेम, घृणा, स्वास्थ्य, रोग, जन्म, मृत्यु,
द्वैत के पर्दे पर खेलती ये सारी मिथ्या परछाइयां लुप्त हो गयीं।
माया का तूफान थम गया
गहन अंतर्ज्ञान की जादुई छड़ी से।
वर्तमान, भूत, भविष्य, कुछ भी नहीं रहा अब मेरे लिये,
अब तो केवल मैं ही हूं सदा–सर्वदा फैलता सबमें, सब ओर।
ग्रह, तारे, निहारिका पुंज, पृथ्वी,
महाप्रलय के ज्वालामुखियों के विस्फोट
सृष्टि की ढलाई की धधकती भट्टी,
नीरव क्ष–किरणों के हिमनद, ज्वलंत–विद्युत अणुओं की बाढ़,
अतीत में हुए, वर्तमान में जी रहे, भविष्य में होने वाले सब मनुष्यों के बीच,
घास तक का प्रत्येक पत्ता, मैं स्वयं, समस्त मानव जाति,
सृष्टि का प्रत्येक कण,
काम, क्रोध, लोभ, अच्छा, बुरा, मोक्ष, मुक्ति,
इन सबको मैंने निगल लिया
और ये सब मेरे एकमात्र विराट अस्तित्व के रुधिर का महासागर बन गये।
भीतर ही भीतर सुलगते आनंद ने, जो ध्यान में प्रायः सुलग उठता,
मेरे अश्रुपूर्ण नेत्रों को रुद्ध कर दिया,
और भड़क उठा परमानंद के शोलों के रुप में,
और स्वाहा कर लिया मेरे अश्रुओं को, मेरे शरीर को, मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को।
ब्रह्म मुझमें समा गया, मैं ब्रह्म में समा गया,
ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय सब एक हो गये।
शान्त, अखंड रोमांच, सदा के लिये जीती जागती नित्य नवीन शांति।
समस्त आशा और कल्पनाओं से परे आनंद देने वाला समाधि का परमानंद!
नहीं यह कोई अचेत अवस्था
या मानसिक बेहोशी जिसमें से स्वेच्छा से लौटा न जा सके,
बल्कि समाधि तो मेरी चेतना के विस्तार को
मर्त्य देह की सीमाओं से परे ले जाती है
अनंतता की दूरतम परिधि तक
जहां ब्रह्मसागर बना हैं
अपने छोटे–से अहं रुप को अपने में ही तैरता देखता हूं।
अणुओं की सरसराहट सुनाई देती है,
निस्तेज पृथ्वी, पहाड़–पर्वत, घंटियां,
पलभर में सब गलकर तरल बन गये।
सागर–प्रवाह निहारिकाओं की धुंध में बदल गये।
इस धुंध पर प्रणव की फुंकार आयी,
और उसने उस धुंध के तुषारों पर छाये पर्दे उठा दिये,
ज्योतिर्मय अणु–परमाणुओं के सागर–महासागर दृष्टि के सामने अनावृत हो गये,
जब तक ओम् के ब्रह्मनाद से सब स्थूल तर आलोक,
आखिर सर्वव्याप्त परमानंद की शाश्वत किरणों में विलीन न हो गये।
आनंद से मैं आया था, आनंद के लिये मैं जीता हूं,
पवित्र आनंद में मैं विलीन हो जाता हूं।
मन का सागर बना मैं सृष्टि की सारी तरंगों को पीता हूं।
उठ गये चार पर्दे जड़, तरल, वायु एवं प्रकाश के।
कण–कण में विद्यमान मैं अपने विराट स्वरुप में विलीन होता हूं।
चली गयी सदा के लिये मर्त्य स्मृति की अस्थिर फरफराती परछाइयां,
निरभ्र है मेरे मन का आकाश अब– नीचे, ऊपर, आगे–पीछे,
अनंतता और मैं एक रुप बनी एक ही किरण है अब।
हंसी का एक नन्हा–सा बुलबुला मैं,
अब बन गया हूं सागर हर्षोल्लास का स्वयं।

मेरा मनभावन संकलन

परमहंस योगानन्द जी ने यह कविता अंग्रेजी में लिखी थी। यह किसी योग्य व्यक्ति द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद है।

प्रेषक– वीरेन्द्र सिंह रघुवंशी, पूर्व प्राचार्य, प्रज्ञा आप्टीकल मानस भवन, गुना, म.प्र.

भ्रम- एक असाध्य रोग

इंजीनियर शम्भूसिंह रघुवंशी

मनुष्य अनेक लोगों के साथ अपना जीवन यापन करता है। इसे हम 'समाज' के नाम से जानते हैं। समाज में रहते हुए हमें अनेक प्रकार के संघर्षों का सामना करना पड़ता है और कई व्याधियों से दो–चार होना पड़ता है। मनुष्य को अनेक प्रकार के रोगों से लड़ना पड़ता है, मेरा मानना है कि हम तमाम तरह की व्याधियों से लड़ते हुए अपनी जिन्दगी के अंतिम पड़ाव में पहुंच जाते है। हमारा बहुमूल्य जीवन रोगों से ग्रसित रहते हुए भी समाप्त हो सकता है इसे हमें समय रहते हुए समझना चाहिये और निदान का भरसक प्रयास करना चाहिये।

रोग मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं पहला शारीरिक दूसरा मानसिक। उपरोक्त दोनों प्रकार के रोगों का शायद इलाज भी हो सकता है परन्तु इन रोगों के अलावा भी एक घातक रोग है ''भ्रम'' जो कभी–कभी हो जाता है, इसे हम उर्दू में ''शक'' और हिन्दी में ''भ्रांति'' नाम से भी जानते हैं। यह एक रोग है जिसके लिए कोई भी औषधि अभी तक तैयार नहीं हो सकी है और न ही कभी हो सकती। इस रोग का कीड़ा जब हमारे शरीर में प्रवेश कर जाता है तो वह निकलने का नाम नहीं लेता और अतिश्योक्ति नहीं होगी यदि हम इसे असाध्य रोग कह दें। मनुष्य क्या शायद पशु–पक्षियों में भी इस बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं जैसा कि हमने देखा है कि जब कोई इनके पास आता है तो यूं दूर–दूर भागते हैं, इसे हम इनके भय का नाम भी दे सकते हैं। इनके अधिक पास जाने पर ये हमें हानि भी पहुंचा सकते हैं क्योंकि उन्हें स्वयं के ऊपर कोई संकट आने का भान रहता है।

डाक्टर, वैद्य, हकीम या वैज्ञानिक शायद ही इस रोग की औषधि ढूंढ सकें। भरसक प्रयास करने के पश्चात् भी शायद उन्हें अपने शस्त्र डालने पड़े। मेरा अपना विचार है क्योंकि मैंने इस रोग से ग्रसित रोगियों का इलाज होते कभी नहीं देखा मैं स्वयं इस बीमारी से पीड़ित हो चुका हूं, इसका निदान किसी के पास नहीं है अपितु स्वयं ही हमें इसे खोजना पड़ता है। अपने विवेक के द्वारा हम निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं।

मेरा अभिमत है कि हम अपने विचारों के आदान–प्रदान से अपने मस्तिष्क की गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास कर शायद इससे बचने का प्राथमिक उपचार कर लें तो कुछ सफलता प्राप्त कर सकते हैं, अन्यथा एक बार यह रोग हमारे मस्तिष्क में पहुंचने में कामयाब हो गया तो शायद इससे छुटकारा मिलने में हमें काफी परेशानी होगी। मेरे विचार से हमें जितना संभव हो सके शीघ्रातिशीघ्र प्रारंभिक अवस्था में ही निदान की व्यवस्था अपने खुले और सुलझे हुए विचारों के द्वारा निश्छल मन से करना चाहिये। यदि हम इस रोग के भंवरजाल में फंस गये तो निकलने में काफी देर हो जायेगी और हमारा मन और कुंठित से कुंठित होता चला जायेगा जो हमारे लिए आगे घातक सिद्ध होगा।

हमारे जीवन की डगर काफी लम्बी है, इसे हमें स्नेहपूर्ण वातावरण में गुजारने का प्रयास करते हुए ''शक'' रुपी जहर को अपनी जिंदगी के किसी भी रास्ते से नहीं गुजरने देना चाहिये। जीवन का वास्तविक आनंद हम तभी ले सकेंगे जबकि हम इस जीवन को परस्पर प्यार से जियें। अपने सद्विचारों, सद्भावनाओं का सम्प्रेषण कर शुभकामनायें बांटें, उनसे सद्प्रेरणाएं लें, अपने सद्कर्मों से प्रेरणादायी बनें, तभी हमारा इस संसार में आना और प्रेमपूर्ण जीवन बिताना सार्थक हो सकेगा अन्यथा हमारा जीवन निरर्थक ही जायेगा। हम सभी को मिलजुल कर अपने समाज और राष्ट्र के लिए सहयोगी बनकर अपना एवं अपने देश का गौरव बढ़ाने में योगदान करना है।

– **सिद्धि विनायक सदन, कैंट रोड, गुना, म.प्र. मोबा.9425762471**

ओ.पी. रघुवंशी को बधाई

उदयपुरा। शिवपुरी जिला निवासी सिविल जज क्लास–।। श्री ओ.पी. रघुवंशी को अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश परीक्षा 2016 में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अभिभाषक मण्डल उदयपुरा के पूर्व अध्यक्ष चतुरनारायण रघुवंशी एडवोकेट, बरेली से हाकमसिंह, राघवेंद्र सिंह, यशपाल सिंह, जगदीश सिंह, राघव रघुवंशी, सिलवानी से के.एन. रघुवंशी, प्रदीप रघुवंशी, गोवर्धन रघुवंशी उदयपुरा से रामेश्वर रघुवंशी, भक्तराज सिंह, देवेन्द्र रघुवंशी, रसिकबाबू, चंद्रशेखर, सुरेंद्र सिंह ने बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

!! हर विचार एक बीज है !!

श्रीमती सुषमा रघुवंशी

सकारात्मक सोच की शक्ति The Power of Positive Thinking.

इसके बिना जिन्दगी अधूरी है। इस सोच से जो शक्ति प्राप्त होती है, उससे घोर अंधकार को भी आशा की किरणों से रोशनी में बदला जा सकता है। हमारे विचारों पर हमारा अपना स्वयं का नियंत्रण होता है इसलिए यह स्वयं को ही तय करना होता है कि हमें सकारात्मक सोचना है या नकारात्मक।

हमारे पास मतलब आप और हम सब के पास दो तरह के बीज होते है – सकारात्मक बीज और नकारात्मक बीज

सकारात्मक विचार और नकारात्मक विचार (Positive Thought & Negative Thought)

What we think we become . हम जैसा सोचते हैं वैसा बन जाते हैं, इसलिए कहा जाता है कि जैसे हमारे विचार होते हैं वैसा ही हमारा आचरण होता है। हम अपने दिमाग रूपी जमाने में कौन–सा बीज बोते हैं – यह बच्चों आप पर निर्भर करता है। थोड़ी–सी चेतना एवं सावधानी से हम काँटेदार पेड़ को महकते फूलों के पेड़ में बदल सकते हैं। तो बच्चों परीक्षा के दिन पास में आने वाले हैं, आपको अपने दिमाग में सकारात्मक सोच का बीज बोना है, अब कैसे करोगे यह आप?

मेरी सलाह है कि आप पहले अपनी कुछ आदतें बदलें। जैसे कि ज्यादातर बच्चों के साथ मतलब, दोस्तों के साथ इधर–उधर की बातें करने में अपना समय नष्ट ना करें ।आपको अपने रोज का, प्रतिदिन का टाईम टेबल बनाना आवश्यक ही नहीं अब अनिवार्य हो गया हैं। इसके लिए प्रातः उठने से लेकर रात में सोने तक का प्रति मिनट का कार्यक्रम कागज़ पर लिखें, उसे देखें आपने कितना समय फालतू गवाँया हैं। उसे अपने टाईम–टेबल से हटाएं। सकारात्मक सोच से इसे बनाएं – ये न सोचे कि मैं तो अब टी.वी. नहीं देख पाऊँगा या पाऊँगी, दोस्तों से बातें करना कम कर दें। अनावश्यक रूप से बाहर नाश्ता पानी न लें, घर पर बनाकर ही खाएं। बीमारी से बचें। अगर कोचिंग जाते हैं तो जितना समय आने–जाने में लगता है उतना समय ही दें। कोचिंग क्लास के तय समय से थोड़ा पहले ही घर से निकलें एवं कोचिंग में अध्यापन के बाद घर पहुँचने में ज्यादा देरी ना करें।

समय का महत्व समझें। घर में, कक्षा में, कोचिंग में जो भी पढ़ाई .... आप करो तो सबसे पहले दिमाग में सकारात्मक सोच लाना प्रारम्भ करें। अपनी आँखें कुछ क्षण के लिए बंद करके अपने दिमाग को आदेशित करें कि यह जो भी मैं पढ़ूँ वह सब याद हो ही जाएगा। जो भी लिखूँ उसे बगैर देखे लिखूँ तो उसमें कोई मिस्टेक नहीं होगी। जो भी पढ़ना हैं वह कठिन नहीं हैं सब मैंने याद कर लेना हैं, सब आसान हैं। बस!

हो गया आपका सकरात्मक बीज का रोपण। बीज बो दिए हैं। अब प्रतिदिन उसकी देखभाल कैसे करेंगे। उस पर काई भी नकारात्मक बीज नहीं गिरने देना है और जो जगह सकरात्मक बीज के लिए आपने आरक्षित कर ली है तो वहाँ नकारात्मक बीज के लिए कोई स्थान मिल ही नहीं सकता क्योंकि दिमाग ने तय किया हैं कि सब याद होगा, सब लिख लिया जाएगा। सब कुछ समय पर होगा।

प्रतिदिन इस सकारात्मक बीज को सींचना हैं प्यार से, जतन से। यह सकारात्मक सोच का बीज एक बड़ा वृक्ष बनाना है मतलब आपको पूरे जीवन में इसे बनाएं रखना है। चाहे तो विद्यार्थी जीवन हो, कॉलेज जीवन हो, पारिवारिक जीवन हो, सभी क्षेत्रों में इस बीज एवं वृक्ष को संभालकर रखना हैं। फिर देखें चमत्कार ! आप हमेशा अपने आपको खुश रखोगे। इसके लिए पैसों की जरूरत नहीं।

तो मेरे प्यारे बच्चों आज से, अभी से आप सब कसम खाएं कि आप हमेशा सकारात्मक सोच रखेंगे। जैसा आप सोचते हैं, वैसा आप बन जायेंगे। साथ ही मेरे साथी रूपी शिक्षकगणों से भी अनुरोध है कि वे अपने विद्यार्थियों के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक रखें, तो आपका रिजल्ट भी सुधरेगा।

प्राचार्य, कमला नेहरू हा.से. स्कूल (सी.बी.एस.ई.), कमला नगर, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल

कल्याण कारक देवता शिव

कृष्णचन्द्र टवाणी

शिव इस भूतल के अत्यन्त प्राचीन और लोकप्रिय देवता हैं। शिव के जितने नाम प्रचलित हैं उतने शायद ही किसी अन्य देवता के होंगे। शंकर, आशुतोष, औघड़दानी, महेश, महादेव, कैलाशपति, गंगाधर, भूतनाथ, त्रिपुरारी, विश्वनाथ, भोलेनाथ आदि अनेक नामों से भगवान शिव सर्वाधिक जनमानस द्वारा सर्वाधिक स्थानों पर पूजे जाते हैं। जहां एक ओर उनका रौद्ररुप भयानक है वहीं दूसरी तरफ उनका कल्याणमय रुप अति सुन्दर है। नटराज के रुप में उनका रौद्ररुप, शिव पार्वती के रुप में उनकी दाम्पत्य छवि, साधना के रुप में उनका पवित्र ओज और डमरु के निनाद से निकले हुए उनके शब्द आज जन–जन के लिये पूजित हैं। शिवजी निराकार ओंकार के मूल, तीनों गुणों से युक्त इंद्रियों से परे, महाकाल के काल और अत्यन्त कृपालु हैं।

लोकप्रिय देवता

शिवरात्रि के अवसर पर दर्शन एवं पूजन करने वाले भक्तों की शिव मंदिरों में अपार भीड़ देखकर यह अनुमान किया जा सकता है कि शिव कितने लोकप्रिय देवता हैं और जनमानस की उनके प्रति कितनी अपार श्रद्धा है। राम और कृष्ण से भी अधिक पूज्य भगवान शिव हैं। स्वयं श्रीराम जी ने रामेश्वरम में शिव की पूजा करने के पश्चात ही लंका की ओर रावण से युद्ध के लिये प्रस्थान किया था। प्रतिदिन नियम से शिव दर्शन एवं पूजन भी लोग अन्य देवताओं की अपेक्षा अधिक संख्या में करते हैं। शिव का प्रदोष व्रत मास में दो बार तथा सोमवार का व्रत मास में चार बार होता है। जबकि राम व कृष्ण की पूजा के पर्व वर्ष में केवल एक–एक बार ही आते हैं। राम व कृष्ण के मंदिर मुख्यतः नगरों में या प्रत्येक गांव में लगभग एक ही मिलता है जबकि भगवान शिव के मंदिर प्रत्येक नगर के प्रत्येक मोहल्ले में तथा प्रत्येक ग्राम व देहात में भी मिलते हैं। शिवजी की लोकप्रियता का कारण यह है कि शिवजी विशेष रुप से भारत के लोकप्रिय देवता हैं। भारत गांवों का देश है और यहां की जनसंख्या का अधिकांश भाग गांवों में निवास करता है। राम और कृष्ण को भी भक्तगण पूजते हैं किन्तु उनके मंदिर राजप्रसाद से लगते हैं और उनकी पूजा विधियों में कुछ ऐसे प्रतिबंध हैं जिसके कारण भक्तजन दूर से ही उनके दर्शन कर सकते हैं। शिव के मंदिरों में ऐसा प्रतिबंध नहीं है, शिव के अधिकांश मंदिर तो बिलकुल खुले होते हैं और इन मंदिरों में भक्तजन निकट से भी उनकी अर्चना कर सकते हैं। पूजा विधि की यह सरलता ही भगवान शिवजी को जन–जन के अधिक निकट ले आती है। शिव का दिगम्बर रुप प्राचीनतम मानव का मौलिक रुप है। वे राम और कृष्ण के समान राजकुमार नहीं थे। उनके मस्तिष्क पर मुकुट नहीं है और न गले में बैजयन्ती माला। राम कृष्ण की मूर्तियों की भांति शिव का आभूषणों एवं वस्त्रों से श्रृंगार नहीं होता। उनका सरल और दिगम्बर वेश ग्रामीणजनों के साथ उनकी आत्मीयता स्थापित करता है।

सरल पूजा विधि

शिव की पूजा विधि भी अत्यन्त सरल है और कुछ न बन सके तो केवल जल से ही उनकी अर्चना की जा सकती है। शिवजी को पत्र–पुष्प भी राजसी वृक्षों के नहीं चाहिये। वन के भांग, धतूरा, बेलपत्र आदि ही उनकी पूजा के लिए पर्याप्त हैं। अन्य देवताओं की भांति इन्हें राजसी फल, मधुर प्रसाद एवं छप्पन भोग चढ़ाने की

आवश्यकता नहीं। यदि फल ही चढ़ाना हो तो इन्हें वन के बदरी फल ही अभीष्ट हैं। शिव की स्तुति पांच मिनट में ही पूरी हो सकती है। शिवजी की अनेक पूजा पद्धतियां प्रचलित हैं जिससे हर प्रकार का व्यक्ति इच्छानुसार किसी भी पद्धति को सुगमता से अपना सकता है।

अखण्ड सौभाग्यदात्री माँ पार्वती

शिव के साथ ही माँ पार्वती भी अन्य देवियों से ज्यादा पूज्य हैं। जितनी पूजा पार्वती की हमारे देश में भारतीय नारियों द्वारा की जाती है उतनी सीता, राधा, दुर्गा, सरस्वती आदि की नहीं होती। सीता और राधाजी का दाम्पत्य जीवन भी आदर्श है किन्तु इसमें वियोग का विक्षेप रहा। पार्वती का अखंड सौभाग्य भारतीय नारियों को अभीष्ट है। इसी सौभाग्य की साधना के लिये वे गणगौर आदि में गौरी पूजा हैं और कार्तिक स्नान आदि करती हैं। माँ पार्वती की पूजा कन्याओं को मनोवांछित वर की प्राप्ति कराने में सहायक होती है और उनके सौभाग्य को अखंड बनाती है। इस कारण से भी शिव की लोकप्रियता बहुत बढ़ जाती है जिससे भारत की कोटि–कोटि जनता शिव व पार्वती दोनों की पूजा करती है।

विचित्रता के भण्डार

शिव के उपकरण और अलंकरण विचित्र व अदभुत हैं। श्रृंगी, डमरु, त्रिशूल, बाघम्बर एवं गले में सर्प उनके रुप को विचित्र बनाते हैं। शिव का वाहन वृषभ है जो मनुष्यों को अत्यन्त सहायक है। ललाट में चन्द्रमा और गंगा के अलंकार उनके रुप को कुछ अधिक ही अदभुत और अलौकिक बनाते हैं। शिव श्रम, शौर्य एवं शक्ति के प्रतीक हैं। शिव का ताण्डव नृत्य उनके रौद्ररुप को लक्षित करता है। तांडव नृत्य और तृतीय नेत्र से शिव सृष्टि में प्रलय उत्पन्न करने वाले हैं। अपने भक्तों पर संकट आने पर वह विष पीकर मुस्कराते रहते हैं। ऐसी विशेषताओं से अन्य कोई देवी–देवता परिपूर्ण नहीं है। शिव की पूजा भी शिवलिंगाकार पीठयोनि रुप में ही होती है, जबकि अन्य देवताओं की मूर्ति या प्रतिमा की पूजा की जाती है। शिवलिंग भी अलग–अलग स्थान पर भिन्न–भिन्न प्रकार के पाये जाते हैं। एक तोले से लेकर हजारों टन वाले शिवलिंग भारत में देखे जा सकते हैं। एक अंगुल से लेकर हजारों फुट ऊंचे मीलों तक फैले आश्चर्यजनक शिवलिंग हमारे देश में विद्यमान हैं। मिट्टी–पत्थर से लेकर स्वर्ण, रजत, पारा, नीलम, माणिक्य आदि रत्नमय, स्फटिक, चन्दनमय, बर्फमय, ताम्रमय आदि अनेकों प्रकार के शिवलिंग हमारे देश में मौजूद हैं और वह बड़ी श्रद्धा से पूजे जाते हैं। ऐसे देवादिदेव महादेव को बारम्बार प्रणाम–

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूति विभूषणः सुरवनः सर्वाधिपः सर्वदा
सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम्।।

संपर्क–ज्ञानमंदिर सिटी रोड, मदनगंज–किशनगढ़–राजस्थान, मो.09252988221

गुना में ''रघुवंश मातृ-शक्ति संगठन'' का गठन

विचारक शेख शादी ने कहा है कि ''यदि चिड़ियां एका कर लें तो शेर की भी खाल खींच सकती हैं''। ये हुई चिड़ियों की बात और यदि हम बात नारी की करें तो अरस्तु ने लिखा है कि ''नारी की उन्नति व अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री कहते हैं कि ''नारी जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। उक्त और ऐसी अनेक विलक्षणताओं से युक्त नारी यदि सद्–संकल्पों, सद्–उद्देश्यों के साथ समाज सेवा हेतु संगठित होती है तो निश्चित ही उल्लेखनीय कार्य समाज में होने लगते हैं। गुना जिला मुख्यालय पर निवासरत रघुवंशी समाज की प्रगतिशील नारियों ने समाजसेवा के क्षेत्र में कदम बढ़ाने के उद्देश्य से ''रघुवंशी मातृ–शक्ति संगठन'' का गठन हाल ही के दिनों में किया है। संगठन में अध्यक्ष का दायित्व श्रीमती अनुसुइया रघुवंशी, उपाध्यक्ष श्रीमती अर्चना रघुवंशी, सचिव श्रीमती मधु रघुवंशी, कोषाध्यक्ष श्रीमती संगीता रघुवंशी, उप–कोषाध्यक्ष राखी रघुवंशी, प्रवक्ता प्रीति रघुवंशी, संगठन मंत्री–सीमा रघुवंशी, रीना रघुवंशी, ग्रोथ डेवलपर नंन्दनी रघुवंशी, प्रीति रघुवंशी, कार्यालय मंत्री तृप्ति रघुवंशी, निर्देशक मंडल में कृष्णा रघुवंशी, शकुंतला रघुवंशी, रमाकांता रघुवंशी, सरोज रघुवंशी, गीता रघुवंशी हैं। आगामी रामनवमी से ये संगठन पूरे जिले में विभिन्न गतिविधियां संचालित करेगा।

– ओमवीर सिंह रघुवंशी, ''शिक्षक''

तुलसी के चमत्कारी गुण

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

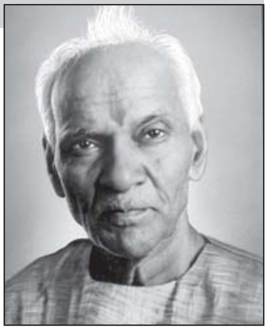

जब से संसार में सभ्यता का उदय हुआ है, मनुष्य रोग और औषधि इन दोनों शब्दों को सुनते आए हैं। जब हम किसी शारीरिक कष्ट का अनुभव करते हैं तभी हमको 'औषधि' की याद आ जाती है, पर आजकल औषधि को हम जिस प्रकार 'टेबलेट' 'मिक्चर' 'इंजेक्शन', कैपसूल आदि नए-नए रुपों में देखते हैं, वैसी बात पुराने समय में नहीं थी। उस समय सामान्य वनस्पतियों और कुछ जड़ी-बूटियां ही स्वाभाविक रुप में औषधि का काम देती थीं और उन्हीं से बड़े-बड़े रोग शीघ्र निर्मूल हो जाते थे, तुलसी भी उसी प्रकार की औषधियों में से एक थी। जब तुलसी के निरंतर प्रयोग से ऋषियों ने यह अनुभव किया कि यह वनस्पति एक नहीं सैकड़ों छोटे-बड़े रोगों में लाभ पहुंचाती है और इसके द्वारा आसपास का वातावरण भी शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद रहता है तो उन्होंने विभिन्न प्रकार के इसके प्रचार का प्रयत्न किया। उन्होंने प्रत्येक घर में तुलसी का कम से कम एक पौधा लगाना और अच्छी तरह से देखभाल करते रहना धर्म कर्तव्य बतलाया। खास-खास धार्मिक स्थानों पर 'तुलसी कानन' बनाने की भी उन्होंने सलाह दी, जिसका प्रभाव दूर तक के वातावरण पर पड़े।

धीरे-धीरे तुलसी के स्वास्थ्य प्रदायक गुणों और सात्विक प्रभाव के कारण उसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई कि लोग उसे भक्तिभाव की दृष्टि से देखने लगे, उसे पूज्य माना जाने लगा। इस प्रकार तुलसी की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ गई, क्योंकि जिस वस्तु का प्रयोग श्रद्धा और विश्वास के साथ किया जाता है उसका प्रभाव बहुत शीघ्र और अधिक दिखलाई पड़ता है। हमारे यहां के वैद्यक ग्रंथों में कई स्थानों पर चिकित्सा कार्य के लिए जड़ी बूटियां संग्रह करते समय उनकी स्तुति-प्रार्थना करने का विधान बतलाया गया है और यह भी लिखा है कि उनको अमुक तिथियों या नक्षत्रों में तोड़कर या काटकर लाया जाए। इसका कारण यही है कि इस प्रकार की मानसिक भावना के साथ ग्रहण की हुई औषधियां लापरवाही से बनाई गई दवाओं की अपेक्षा कहीं अधिक लाभप्रद होती हैं। कुछ लोगों ने यह अनुभव किया कि तुलसी केवल शारीरिक व्याधियों को ही दूर नहीं करती, वरन् मनुष्य के आंतरिक भावों और विचारों पर भी उसका कल्याणकारी प्रभाव पड़ता है। हमारे धर्मग्रंथों के अनुसार किसी भी पदार्थ की परीक्षा केवल उसके प्रत्यक्ष गुणों से ही नहीं की जानी चाहिए, वरन् उसके सूक्ष्म और कारण प्रभाव को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। तुलसी के प्रयोग से ज्वर, खांसी, जुकाम आदि जैसी अनेक बीमारियों में तो लाभ पहुंचता ही है, उससे मन में पवित्रता, शुद्धता और भक्ति की भावनाएं भी बढ़ती हैं। इसी तथ्य को लोगों की समझ में बैठाने के लिए शास्त्रों में कहा गया है-

त्रिकाल बिनता पुत्र प्रयास तुलसी यदि।
विशिष्यते कायशुद्धिश्चान्द्रायण शतं बिना।।
तुलसी गन्धमादाययत्र गच्छन्ति मारुतः।
दिशो दशश्च पूतास्तुभूर्त ग्रामश्चयतुर्विधः।।

अर्थात् यदि प्रातः, दोपहर और संध्या के समय तुलसी का सेवन किया जाए तो उससे मनुष्य की काया इतनी शुद्ध हो जाती है जितनी अनेक बार चांद्रायण व्रत करने से भी नहीं होती। तुलसी की गंध वायु के साथ जितनी दूर तक जाती है, वहां का वातावरण और निवास करने वाले सब प्राणी पवित्र-निर्विकार हो जाते हैं।

तुलसी की अपार महिमा

तुलसी की यह महिमा, गुण-गरिमा केवल कल्पना ही नहीं है, भारतीय जनता हजारों वर्षों से इसको प्रत्यक्ष अनुभव करती आई है और इसलिए प्रत्येक देवालय, तीर्थस्थान और सद्गृहस्थों के घरों में तुलसी को स्थान दिया गया है। वर्तमान स्थिति में भी कितने ही आधुनिक विचारों के देशी और विदेशी व्यक्ति उसकी कितनी ही विशेषताओं को स्वीकार करते हैं और वातावरण को शुद्ध करने के लिए तुलसी के पौधों के गमले अपने बंगलों और कोठियों पर रखने की व्यवस्था करते हैं, फिर तुलसी का पौधा जहां रहेगा सात्विक भावनाओं का विस्तार तो करेगा ही। इसलिए हम चाहें जिस भाव से तुलसी के संपर्क में रहें, हमको उससे होने वाले शारीरिक, मानसिक और आत्मिक लाभ प्राप्त होंगे ही। तुलसी से होने वाले इन सब लाभों को समझकर पुराणकारों ने सामान्य जनता में उसका प्रचार बढ़ाने के लिए अनेक कथाओं की रचना कर डाली, साथ ही उसकी षोडशोपचार पूजा के लिए भी बड़ी लंबी-चौड़ी विधियां अपनाकर तैयार कर दीं। यद्यपि इन बातों से अशिक्षित जनता में अनेक प्रकार के अंधविश्वास भी फैलते हैं और तुलसी-शालिग्राम विवाह के नाम पर अनेक लोग हजारों रुपये खर्च कर डालते हैं पर इससे हर स्थान पर तुलसी का पौधा लगाने की प्रथा अच्छी तरह फैल गई। पुराणकारों ने तुलसी में समस्त देवताओं का निवास बताते हुए यहां तक कहा है

कि–

तुलसस्यां सकल देवाः वसन्ति सततं यतः।
अतस्तामचयेल्लोकः सर्वान्देवानसमर्चयन।।

अर्थात् तुलसी में समस्त देवताओं का निवास सदैव रहता है। इसलिए जो लोग उसकी पूजा करते हैं उनको अनायास ही सभी देवों की पूजा का लाभ प्राप्त हो जाता।

तत्रे कस्तुलसी वृक्षस्तिष्ठति द्विज सत्तमा।
यत्रेव त्रिदशा सर्वे ब्रह्मा विष्णु शिवादय।।

अर्थात् जिस स्थान पर तुलसी का एक पौधा रहता है वहां पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि समस्त देवता निवास करते हैं।

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्या सरितस्तथा।
वासुदेवादयो देवास्तिष्ठन्ति तुलसी दले।।

अर्थात् तुलसी पत्रों में पुष्कर आदि तीर्थ, गंगा आदि सरिताएं और वासुदेव आदि देवों का निवास होता है।

तुलसी लगाने एवं रक्षा करने, जल देने, दर्शन करने, स्पर्श करने से मनुष्य के वाणी, मन और काया के समस्त दोष दूर होते हैं। प्राचीनकाल में 'अमृत मंथन' के अवसर पर समस्त औषधियों और रसों (भस्मों) से पहले विष्णु भगवान ने समस्त प्राणियों के उपकारार्थ तुलसी को उत्पन्न किया।

तुलसी की रोगनाशक शक्तिः इस प्रकार प्राचीन ग्रंथकारों ने तुलसी की महिमा को सर्वसाधारण के हृदय में जमाने के लिए उसकी बड़ी प्रशंसा की है और उसके अनेक लाभ बताये गये हैं। इनमें से शरीर संबंधी गुण अर्थात तुलसी की रोगनाशक शक्ति तो प्रत्यक्ष ही है और विशेषतः कफ, खांसी, ज्वर संबंधी औषधियों के साथ तुलसी को भी सम्मिलित करने का विधान है। भारतीय चिकित्सा विधान में सबसे प्राचीन और मान्य ग्रंथ चरक संहिता में तुलसी के गुणों का वर्णन करते कहा गया है–

हिक्काज विषश्वास पार्श्व शूल विनाशिनः।
पित्तकृतत्कफवातघ्न सुरसः पूर्ति गन्धहा।।

अर्थात सुरसा (तुलसा) हिचकी, खांसी, बिष विकार, पसली के दरद को मिटाने वाली है। इससे पित्त की वृद्धि और दूषित कफ तथा वायु का शमन होता है, यह दुर्गंध को भी दूर करती है। दूसरे प्रसिद्ध ग्रंथ 'भाव प्रकाश' में कहा गया है–

तुलसी कटुका तित्का हृदयोष्णा दाहिपित्तकृत।
दीपना कष्टकृच्छ स्त्रापार्श्व रुकककफवातजित।।

तुलसी कटु, तिक्त हृदय के लिए हितकर, त्वचा के रोगों में लाभदायक, पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली, मूत्रकृच्छ के कष्ट को मिटाने वाली है, यह कफ और वात संबंधी विकारों को ठीक करती है। आयुर्वेद के ज्ञाताओं ने समस्त औषधियों और जड़ी बूटियों के गुण जानने के लिए ''निर्घटु'' ग्रंथों की रचना की है उसमे भी तुलसी के गुण विस्तारपूर्वक लिखे गए हैं। तुलसी हलकी उष्ण, रुक्ष, कफ दोषों और कृमि दोषों को मिटाने वाली और अग्निदीपक होती है। तुलसी पित्तकारक तथा वात कृमि और दुर्गंध को मिटाने वाली है। पसली के दरद, खांसी, श्वास, हिचकी, उल्टी, कृमि, पार्श्व, शूल, कोढ़, आंखों की बीमारी आदि में लाभकारी है।

तुलसी प्रकृति के अनुकूल औषधि हैः यद्यपि ग्रंथों में तुलसी को तीक्ष्ण भी लिखा है पर उसकी तीक्ष्णता केवल विशेष प्रकार की और छोटे कृमियों को दूर करने तक ही समित है। जिस प्रकार वर्तमान समय की कीटाणुनाशक और दुर्गंध मिटाने वाली औषधियां कुछ भी अधिक हो जाने से हानि भी हो सकती है, वैसी बात तुलसी में नहीं है। यह एक घरेलू वनस्पति है जिसके प्रयोग में किसी प्रकार का खतरा नहीं रहता। इस दृष्टि से वह अन्यान्य डाक्टरी और वैद्यक औषधियों से भी श्रेष्ठ सिद्ध होती है। तुलसी को प्रायः भगवान के प्रसाद, चरणामृत, पंचामृत आदि में मिलाकर सेवन किया जाता है इसलिए वह एक प्रकार से भोजन का अंश बन जाती है जबकि अन्य औषधियों को तरह–तरह की रासायनिक प्रक्रियाएं करके व्यवहार में लाया जाता है जिससे उनके स्वाभाविक गुणों में बहुत अंतर पड़ जाता है। तुलसी प्रायः ताजा और प्राकृतिक रुप से पाई जाती है उससे शरीर में किसी प्रकार का दूषित विजातीय तत्व उत्पन्न होने की संभावना नहीं रहती। यदि कभी उसके साथ दो–चार अन्य पदार्थ मिलाए जाते हैं तो वे सोंठ, कालीमिर्च, अजबाइन, बेलगिरी, नीम की कोपल, पीपल, इलायची, लौंग आदि ऐसी चीजें होती हैं जो प्रायः हर घर में रहती और नित्य व्यवहार में आया करती हैं। इसलिए औषधियों के रुप में सेवन करने पर भी तुलसी की कोई विपरीत प्रतिक्रिया नहीं होती, न उसके कारण शरीर में किसी प्रकार के दूषित तत्व एकत्रित होते हैं। तुलसी स्वाभाविक रुप से शारीरिक यंत्रों की क्रिया को सुधारती है और रोग को दूर करने में सहायता पहुंचाती है। डाक्टरों के तीव्र इंजेक्शन जिनमें कई प्रकार के विष भी हुआ करते हैं और वैद्यों की भस्मों की तरह उससे किसी तरह के कुपरिणाम या प्रतिक्रिया की आशंका नहीं होती। वह तो एक बहुत सौम्य वनस्पति है, जिसके दस–पांच पत्ते लोग चाहे जब चबा लेते हैं, पर उनसे किसी को हानि होते नहीं देखी गयी।

तुलसी की कई जातियां : यद्यपि सामान्य लोग तुलसी के दो भेदों को जानते हैं, जिनको 'रामा' और 'श्यामा' कहा जाता है। रामा के पत्तों का रंग हलका होता है जिससे उसका नाम गौरी भी पड़ गया है। श्यामा अथवा कृष्ण तुलसी के पत्तों का रंग गहरा होता है और उसमें कफनाशक गुण अधिक होता है इसलिए औषधि के रुप में प्रायः कृष्ण तुलसी का ही प्रयोग किया जाता है क्योंकि उसकी गंध और रस में तीक्ष्णता होती है। तुलसी

की दूसरी जाति 'वन तुलसी' है जिसे 'कठेरक' भी कहा जाता है। इसकी गंध घरेलू तुलसी की अपेक्षा बहुत कम होती है और इसमें विष का प्रभाव नष्ट करने की क्षमता विशेष होती है। रक्त दोष, कोढ़, चक्षु रोग और प्रसव की चिकित्सा में भी यह विशेष उपयोगी होती है। तीसरी जाति को 'मरुवक' कहते हैं। राजमार्तण्ड' ग्रंथ के मतानुसार हथियार से कट जाने या रगड़ लगकर घाव हो जाने पर इसका रस लाभकारी होता है। किसी विषैले जीव के डंक मार देने पर भी इसको लगाने से आराम मिलता है। चौथी 'बरबरी' या 'बुबई–तुलसी' होती है, जिसकी मंजरी की गंध अधिक तेज होती है। बीज, जिनको यूनानी चिकित्सा पद्धति हकीमी में तुख्म रेहां कहते हैं। बहुत अधिक बाजीकरण गुणयुक्त माने गए हैं। वीर्य को गाढ़ा बनाने के लिए उनका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त और दो–एक जातियां विभिन्न प्रदेशों में होती हैं। इन सबमें तीव्र गंध होती है और कृमिनाशक गुण पाया जाता है। अब हम विभिन्न व्याधियों में तुलसी के कुछ चुने हुए प्रयोग नीचे देते हैं।

सब प्रकार के ज्वरः भारतवर्ष के अनेक भागों में मलेरिया का प्रकोप विशेष रुप से पाया जाता है। यह वर्षा ऋतु के पश्चात मच्छरों के काटने से फैलता है। तुलसी के पौधों में मच्छरों को दूर भगाने का गुण और उसकी पत्तियों का सेवन करने से मलेरिया का दूषित तत्व दूर हो जाता है। इसलिए हमारे यहां ज्वर आने पर तुलसी और कालीमिर्च का काढ़ा बनाकर पी लेना सबसे सुलभ और सरल उपचार माना जाता है। डाक्टर लोग इसके लिए 'कुनैन' का प्रयोग करते हैं पर कुनैन इतनी गरम चीज है कि उसके सेवन से बुखार दूर हो जाने पर भी अनेक बार अन्य उपद्रव पैदा हो जाते हैं। उनसे खुश्की, गर्मी, सिर चकराना, कानों में सायं–सायं शब्द सुनाई पड़ना आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इसको मिटाने के लिए दूध–संतरा आदि रस जैसे पदार्थों के सेवन की आवश्यकता होती है, जिनका सामान्य जनता को प्राप्त हो सकना कठिन ही होता है। जवर को दूर करने के लिए वैद्यक ग्रंथों के कुछ नुस्खे इस प्रकार हैं–

1– जुकाम के कारण आने वाले ज्वर में तुलसी के पत्तों का रस अदरक के रस के साथ शहद मिलाकर सेवन करना चाहिए।

2–तुलसी के हरे पत्ते एक छटांक और कालीमिर्च, आधा छटांक दोनों को एक साथ बारीक पीसकर झरबेरी के बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। इसमें से दो गोलियां तीन–तीन घंटे के अंतर से जल के साथ सेवन करने से मलेरिया अच्छा हो जाता है।

3– तुलसी के पत्ते 11, कालीमिर्च 9, अजबाइन 2 माशा, सोंठ 3 माशा, सबको पीसकर एक छटांक पानी में घोल लें। तब एक कोरा मिट्टी का प्याला, सिकोरा या कुल्हड़ आग में खूब तपाकर उसमें उक्त मिश्रण को डाल लें और उसकी भाप रोगी के शरीर को लगायें। कुछ देर बाद जब वह गुनगुना, थोड़ा गरम रह जाए तो जरा–सा सेंधा नमक मिलाकर पी लिया जाए, इससे सब तरह के बुखार जल्दी ही दूर हो जाते हैं।

4– पुदीना और तुलसी के पत्तों का रस एक–एक तोला लेकर उसमें 3 माशा खांड मिलाकर सेवन करें, इससे मंद ज्वर में बहुत लाभ होता है।

5– शीत ज्वर में तुलसी के पत्ते, पुदीना, अदरक तीनों आधा–आधा तोला लेकर काढ़ा बनाकर पिएं।

6– तुलसी के पत्ते और काले सहजन के पत्ते मिलाकर पीस लें। उस चूर्ण का गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से विषम–ज्वर दूर होता है।

7– मंद ज्वर में तुलसी पत्र आधा तोला, काली दाख दस दाना, कालीमिर्च एक माशा, पुदीना एक माशा इन सबको ठंडाई की तरह पीस–छान कर मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है।

8–विषम ज्वर और पुराने ज्वर में तुलसी के पत्तों का रस एक तोला पीते रहने से लाभ होता है।

9–तुलसी पत्र एक तोला, कालीमिर्च एक तोला, करेले के पत्ते एक तोला, कुटकी 4 तोला, सबको खरल में खूब घोंटकर मटर बराबर गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। ज्वर आने से पहले और सायंकाल के समय दो–दो गोली ठंडे पानी के साथ सेवन करने से जाड़ा देकर आने वाला बुखार दूर होता है। मलेरिया के मौसम में यदि स्वस्थ मनुष्य भी एक गोली प्रतिदिन सुबह लेता रहे तो ज्वर का भय नहीं रहता। ये गोलियां दो महीने से अधिक रखने पर गुणहीन हो जाती हैं।

10– तुलसी पत्र और सूरजमुखी की पत्ती पीस–छानकर पीने से सब तरह के ज्वरों में लाभ होता है।

11– कफ के ज्वर में तुलसी पत्र, नागरमोंथा और सोंठ बराबर लेकर काढ़ा बनाकर सेवन करें।

12– जो ज्वर सदैव बना रहता हो उसमें दो छोटी पीपल पीसकर तथा तुलसी का रस और शहद मिलाकर गुनगुना करके चाटें।

13– तुलसी पत्र और नीम की सींक का रस बराबर लेकर थोड़ी कालीमिर्च के साथ गुनगुना करके पीने से क्वार के महीने का फसली बुखार दूर होता है।

14– सामान्य हरारत तथा जुकाम में तुलसी की थोड़ी–सी पत्तियों का चाय की तरह काढ़ा बनाकर उसमें दूध और मिश्री मिलाकर पीने से लाभ होता है। कितने ही जानकार व्यक्तियों ने आजकल बाजार में प्रचलित चाय की अपेक्षा तुलसी की चाय को हितकर बताया है।

ज्योतिष कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल :म.प्र.:
मो.नं. 09827331388

अप्रैल माह–2017

प्रमुख तीज त्यौहार– ता.5 रामनवमी, ता. 7 कामदा एकादशी, ता. 9 भगवान महावीर स्वामी जयंती, ता. 11 हनुमान प्रकोटोत्सव, ता. 14 श्री गणेश चतुर्थी, ता. 22 वरुथिनी एकादशी, ता. 24 प्रदोष व्रत, ता. 29 अक्षय तृतीया।

मेष– परीक्षार्थी को कठिनाइयां होंगी। शिक्षा पर ध्यान दें। विवाह योग्य कन्याओं का विवाह निश्चित होगा। व्यापार–व्यवसाय मध्यम रहेगा। राजनैतिक षडयंत्र के शिकार होंगे। संतान के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। दूर–पास की यात्रा संभव है।

बृषभ– कानूनी विवाद सुलझेंगे। समय पर कार्य बनने से प्रसन्नता होगी। पुत्र संतान के योग बनते हैं। त्यौहारों पर धन खर्च होगा। वाहन खरीदने हेतु समय अनुकूल है। जल्दबाजी से बचें।

मिथुन– बेरोजगारों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। विद्या क्षेत्र में लाभ। वैवाहिक जीवन में थोड़ी उलझने बढ़ेगी। किसी व्यक्ति विशेष के पक्षपात में न फंसे अन्यथा लांछन लगेगा। आय के स्त्रोत में वृद्धि होगी।

कर्क– पारिवारिक जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। धार्मिक उत्सव में शरीक होंगे। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। उदररोग से कष्ट संभव है। भूमि–भवन के कार्यों में विलम्ब होगा। किसी की आर्थिक मदद हेतु धन खर्च होगा।

सिंह– स्त्री वर्ग को स्वास्थ्य कष्ट रहेगा। मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। यात्रा में सावधानी रखें। प्रेम–प्रसंगों की चिन्ता रहेगी। मर्यादित कार्यों में प्रशंसा प्राप्त होगी। कार्य अथवा व्यापार में विस्तार की योजना बनेगी।

कन्या– मित्रों के व्यवहार से परेशानी होगी। अपनी योजनाओं को गुप्त रखें। वाहन आदि पर धन खर्च होगा। परीक्षा/प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा के परिणाम आपके पक्ष में रहेंगे। बैंक लोन आदि की समस्याओं का समाधान होगा।

तुला– मानसिक तनाव रहेगा। ईर्ष्या–द्वेष से बचें। अपने कार्य दूसरों पर न टालें अन्यथा हानि होगी। व्यापार आदि से धन लाभ। अतिथि आगमन के योग बनते हैं। शासन–सत्ता के लोगों को आर्थिक लाभ। केंद्रीय कर्मचारियों को स्थानान्तरण का भय रहेगा।

वृश्चिक– नई योजना प्रारंभ करने हेतु समय अनुकूल नहीं। भूमि या कृषि की जमीन खरीदने से बचें। पारिवारिक मतभेद दूर होंगे। विदेश यात्रा हेतु पहल कर सकते हैं। साहित्यिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त होगी।

धनु– प्रेरणादायी कार्यों में समय व्यतीत होगा। युवा वर्ग शिक्षा को लेकर भ्रमित रहेगा। धार्मिक यात्रा के योग बनते हैं। पुराने मित्रों से मिलन होगा। कड़े परिश्रम से आय के स्त्रोत में वृद्धि संभव है। पत्नी से मतभेद रहेंगे।

मकर– महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे। स्थाई सम्पत्ति की खरीद–फरोख्त होगी। आध्यात्मिक कार्यों में मन लगेगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। नवयुवतियों के रिश्तों की बात चलेगी। प्रेम–प्रसंगों में प्रगाढ़ता रहेगी।

कुंभ– स्वार्थी तत्वों से सावधान रहें। दूसरों की जमानत लेने से बचें। कारोबार में बेहतर अवसर प्राप्त होंगे। सपरिवार शादी–समारोह में शामिल होंगे। नये रोजगार की तलाश रहेगी, थोड़े विलम्ब से प्राप्त होगा।

मीन– सामाजिक कार्यों पर धन खर्च होगा। आय में बढ़ोत्तरी के योग बनेंगे। स्त्री वर्ग को पदोन्नति के योग। दूसरों के विवाद में न पड़ें। विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा। विद्यार्थी वर्ग का शिक्षा में उत्साह बढ़ेगा।

मई माह–2017

प्रमुख तीज त्यौहार– ता. 4 सीता नवमी, ता. मोहिनी एकादशी, ता. 8 प्रदोष व्रत, ता. 10 बुद्धपूर्णिमा, ता. गणेश चतुर्थी व्रत,।

मेष– पत्नी के साथ गृहक्लेश की संभावना। मानसिक तनाव से बचें। नये कार्यभार बढ़ेंगे। आपके उद्देश्यों की पूर्ति होगी। दूर गये मित्र या रिश्तेदार की खबर मिलेगी। वाहन आदि क्रय–विक्रय के अवसर बनेंगे।

बृषभ– मानव सेवा की भावना रहेगी। संतान के कार्यों पर धन खर्च होगा। कृषि उत्पादनों का लाभ मिलेगा। विद्वान व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। प्रेम–प्रसंगों में चिड़चिड़ाहट का सामना करना पड़ेगा।

मिथुन– भ्रमण–मनोरंजन के अवसर बनेंगे। ससुराल पक्ष से सम्बंधों में प्रगाढ़ता बनेगी। आय से ज्यादा खर्च होगा, बजट का ध्यान रखें। भूमि–भवन के विवाद दूर होंगे। वाहन आदि का सुख मिलेगा।

कर्क– जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। परीक्षा में कठिन प्रश्नपत्र आयेंगे। नौकरीपेशा वर्ग को थोड़ी परेशानियां होंगी। माता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। घर में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे। मित्रों से मिलन होगा।

सिंह– शासकीय कार्यों में विलम्ब होगा। अनायास कोई अप्रिय घटना घटेगी। स्वार्थ की प्रवृत्ति रहेगी। व्यापार में किसी का मार्गदर्शन लाभकारी रहेगा। जल्दबाजी से कार्य बिगड़ेंगे। अनजान व्यक्ति से मित्रता न करें।

कन्या– व्यवसायिक कार्यों की रुपरेखा बनेगी। स्त्री वर्ग को रोजगार के अवसर मिलेंगे। साहसिक कार्यों से पराक्रम बढ़ेगा। मन बेचैन रहेगा, स्वास्थ्य पर ध्यान दें। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी।

तुला– पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। जमीन–जायदाद का विवाद रिश्तेदारों में मनमुटाव बढ़ायेगा। आर्थिक स्थिति में बदलाव आयेगा, आप कोई अन्य सहायक कार्यों से धन प्राप्त करेंगे।

वृश्चिक– पूंजी निवेश के लिये समय अनुकूल है। भूमि–जमीन के कार्यों में लाभ। गृहसज्जा पर धन खर्च होगा। राजनीति के कार्यों में मान–सम्मान बढ़ेगा। परिवार में नन्हे मेहमान का आगमन होगा।

धनु– व्यर्थ का दोषारोपण होगा। क्रोध से बचें। बाहरी यात्रा पर धन खर्च होगा। किसी साधु या महात्मा से भेंट होगी। विवाह योग्य संतान का रिश्ता बनेगा। सरकारी कर्मचारियों को वेतनवृद्धि के योग बनेंगे।

मकर– दूसरों की भावनाओं की कद्र करें। व्यवहारिकता का लाभ मिलेगा। इंश्योरेंस या फिक्स डिपाजिट से धन लाभ होगा। परमार्थ के कार्यों में मन लगेगा। दाम्पत्य जीवन में सुधार होगा। सुख मिलेगा।

कुंभ– प्रतियोगिता/प्रतिस्पर्धा/ इंटरव्यू इत्यादि में सफलता प्राप्त होगी। रोजगार हेतु बाहर यात्रा करनी पड़ेगी। इंजीनियरिंग के छात्रों को ज्यादा लाभ होगा। युवतियों को प्रेम प्रसंग में धोखा होगा, सतर्कता बरतें।

मीन– वाणिज्य–व्यवसाय पर धन खर्च होगा। वस्तु विशेष के गुमने का भय रहेगा। नये घर में प्रवेश की योजना बनेगी। साहित्यिक गतिविधियों में व्यस्तता रहेगी। परीक्षार्थियों का मनोबल बढ़ेगा।

जून माह–2017

प्रमुख तीज त्यौहार– ता. 3 महेश नवमी, ता. 4 गंगा दशहरा, ता. 5 निर्मला एकादशी, ता. 17 शीतला अष्टमी, ता. 20 योगिनी एकादशी, ता. 21 प्रदोष व्रत, ता. 23 श्राद्ध अमावस्या।

मेष– धर्म–कर्म में रुचि बढ़ेगी। अल्प परिश्रम से ही महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। भूमि भवन की खरीददारी में सतर्कता बरतें। प्रभावशाली लोगों के सानिध्य का लाभ मिलेगा। शिक्षा से संबंधी कार्य बनेंगे।

बृषभ– आमोद–प्रमोद के अवसर बनेंगे। आपकी कला के क्षेत्र में लोकप्रियता बढ़ेगी। राजनीति से बचें। अप्रत्याशित समाचार से आघात लगेगा। मन उदास व भयभीत रहेगा। मनोबल बनाये रखें।

मिथुन– व्यापार वृद्धि पर धन खर्च होगा। आय के नवीन साधन बनेंगे। सामाजिक कार्यों में आपकी दी हुई सलाह का लोग सम्मान करेंगे। पूर्व में बनाई गई किसी योजना के दूरगामी परिणाम की आशा रहेगी।

कर्क– महंगे शौक के कारण दिखावे से हानि होगी। घर–परिवार का वातावरण बदलेगा। विद्यार्थी वर्ग को अध्ययन–मनन पर ध्यान देना चाहिये। सभा–संगठनों के कार्यों में दौड़ भाग होगी। जोखिम के कार्यों से बचें।

सिंह– कार्य अक्षमता के कारण आत्मग्लानि होगी। अनजान लोगों के सम्पर्क में सतर्कता बरतें। प्रियजन से मुलाकात होगी। बाहरी यात्रा से धनलाभ के योग बनेंगे। वाहन सुख रहेगा।

कन्या– संतान के कार्यों से सुख मिलेगा। आय से ज्यादा धन व्यय होगा। वैभव विलासिता के कार्यों से बचें। समय अनुकूल नहीं है। स्त्री वर्ग को कार्यक्षेत्र में अधिकारियों से प्रताड़ना सहनी पड़ेगी।

तुला– आवागमन के साधनों का विकास होगा। कार या वैन की खरीदी होगी। अनावश्यक बातों को तूल न दें, व्यर्थ की बहसबाजी से बचें। महत्व के कार्यों में कठिन परिश्रम से लाभ होगा।

वृश्चिक– गोपनीय बातों का ध्यान रखें। योजनाओं में अड़चने आयेंगी। अनायास यात्रा के योग बनेंगे। स्वास्थ्य के लिये योगा या टहलने पर ध्यान दें। आर्थिक कठिनाइयां दूर होंगी।

धनु– कार्यशैली में बदलाव के अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेंगे। कुछ असंतोष की भावना रहेगी, पारिवारिक मतभेद उभरेंगे। वृद्धजनों का सम्मान करें।

मकर– आप अपने अधिकार एवं कर्तयों के प्रति सचेत रहें। काम आप करेंगे और श्रेय कोई दूसरा लेगा। सट्टा–जुआ या नशे की लत से दूर रहें। स्त्री वर्ग का कार्यों में सहयोग मिलेगा।

कुंभ– वेतनवृद्धि अथवा स्थानान्तरण का लाभ मिलेगा। वाहन चलाने में सावधानी रखें। अतिथि सत्कार पर धन खर्च होगा। वादाखिलाफी से बचें, स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

मीन– स्वयं के प्रयासों से उद्योग की रचना होगी। कार्यभार बढ़ेगा। प्रबंधन की कुशलता का लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा के प्रसंग बनेंगे। दूसरों को धन या वस्तु उधार देने से बचें।

श्रद्धांजलि

जन्म 16.04.1943

निर्वाण 24.01.2017

ब्रम्हलीन श्रीमती गीता रघुवंशी

श्रीमती गीता रघुवंशी संरक्षक सदस्य अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा, धर्मपत्नी श्री श्याम सुन्दर रघुवंशी के आकस्मिक साकेत-धामवासी होने पर महासभा उन्हें विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करती है तथा परम पिता परमेश्वर से उनके बिछोह से दुख संतप्त परिवार को दुख सहने की क्षमता प्रदान करने एवं दिवंगत की आत्मा को शांति प्रदान करने की प्रार्थना करती है।

जीवन पर्यन्त श्रीमती गीता रघुवंशी धर्मनिष्ठा, दानशीलता, सेवापरायणता एवं कर्मशीलता की प्रतिमूर्ति रहीं। गंगोत्री से रामेश्वर, द्वारिका से जगन्नाथपुरी, द्वादश ज्योतिर्लिंगों, वृन्दावन के कृष्ण एवं अयोध्या के राम बृज चौरासी से नैमिशारण्य की श्रीमदभागवत, गीता उपनिषद एवं रामचरितमानस के आराध्य ग्रन्थों को धारित करते हुए साकेतवासी हुईं।

शरीर, जीवात्मा एवं परमात्मा के गूढ़ तत्वों का ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में दर्शाया है कि

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणों न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।"

-2/20 श्रीमदभगवत गीता

"यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन एवं पुरातन है, शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता है।"

गीताश्री ने परिवार को सम्पन्नता दी। अंतिम क्षणों में माघ कृष्ण पक्ष द्वादशी 2017 को हरि स्मरण करते हुए ब्रम्हलीन हुईं।

गीताश्री को शत शत नमन।

श्रद्धावनत
हजारीलाल रघुवंशी
अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा

भोपाल विक्रम संवत 2073
06.02.2017

''त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवि नर्मदे''
नर्मदा सेवा यात्रा
प्रारम्भ - 11 दिसम्बर, 2016 अमरकंटक में नर्मदा के दक्षिण तट से...
समापन - 11 मई, 2017 अमरकंटक में नर्मदा के उत्तर तट पर।
समाज और सरकार का सामूहिक संकल्प
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश
मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी
माँ नर्मदा की सेवा हेतु
जन-जन में अपार उत्साह
• 16 जिलों के 1100 गाँवों में 3350 किलोमीटर की यात्रा।
• नर्मदा तटों पर एक किलोमीटर के दायरे में व्यापक वृक्षारोपण।
• अपने खेतों पर वृक्ष लगाने वाले किसानों को दी जायेगी 3 वर्ष तक 20 हजार रुपये प्रति हैक्टेयर की दर से सहायता।
• नर्मदा के दोनों तटों पर पांच किलोमीटर की सीमा तक नहीं होंगी शराब की दुकानें।
• नर्मदा तटों पर स्थित समस्त नगरों में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट हेतु 1500 करोड़ की राशि स्वीकृत।
• नर्मदा तटों के दोनों तरफ 1 किलोमीटर की सीमा में स्थित सभी ग्राम होंगे ओडीएफ।
• नर्मदा सेवा कार्यों को स्थायित्व देने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत में नर्मदा सेवा समिति का गठन।
विश्व का सबसे बड़ा नदी संरक्षण अभियान
D80539/17
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : 0755-4911102, 4911103, वेबसाइट : namamidevinarmade.mp.gov.in
Follow Chief Minister Madhya Pradesh /CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh /ChouhanShivrajSingh
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2017